# ख़ुतबात

## ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

1

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

FARID BOOK DEPOT

# ख़ुत्बात

# ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

1

*इफ़ादात*

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

*तर्तीब*

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब

# खुत्बात जुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

**(1)**

लेखकः प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

पहला एडीशनः 2008 साइज़ः 23X36X16

पेजः 314 क़ीमतः 125/-

प्रस्तुतकर्ताः जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

**FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.**

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

**KUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. I**

By: **Prof. Muhammad Aslam Naqshbandi**

Pages: 314 Price: **Rs.125/-** Size: 23x36/16

**Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13**
**Ph.: 9990840084, 9990438635**

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

# विषय-सूची


| उनवान | पेज न० |
|---|---|
| **इस्लाम और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी** | |
| मुख़्तलिफ़ समाज़ों में औरत की हैसियत | 21 |
| इस्लाम में औरत का मुक़ाम | 23 |
| इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की अहमियत | 23 |
| अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतें | 24 |
| निकाह आधा ईमान है | 25 |
| पाँच वसीयतें | 26 |
| खुश क़िस्मत इंसान | 26 |
| निकाह की अहमियत | 27 |
| हक़-ए-मेहर की अहमियत | 28 |
| निकाह की शोहरत | 30 |
| शादी-शुदा के लिए अज्र ज़्यादा | 30 |
| अच्छी बीवी कौन है? | 31 |
| दुनिया की बेहतरीन औरत | 34 |
| अच्छी बीवी की सिफ़ात | 34 |
| अच्छे ख़ाविन्द की सिफ़ात | 35 |
| इज़्दिवाजी ज़िंदगी का हसीन तसव्वुर | 39 |
| बेहतरीन ख़ाविन्द कौन? | 41 |
| औरत की ज़बान | 42 |
| पिछले बुज़ुर्गों का मामूल | 44 |

- ख़ाविंद के हुक़ूक़ 45
- बीवी के हुक़ूक़ 47
- इज़्दिवाजी ज़िन्दगी और मशरिक़ी (पूर्वी) समाज 50
- ख़ुशगवार इज़्दिवाजी ज़िन्दगी 51
- मुख़ालिफ़ सोच से बचें 53
- मुस्कराना भी नेकी है 54
- A smile 55
- लिखकर लटकाइए 55
- अनोखा वाक़िआ 57
- शादी के बाद प्यार 58
- मुहब्बत भरी ज़िन्दगी 59


❋ ❋ ❋

## मेहनत में अज़मत


- इंसान की ज़िन्दगी का मक़सद 61
- काएनात किस लिए है 62
- ज़िन्दगी के रास्ते 62
- इंसान का देखना नाक़िस है 63
- इंसान का सुनना नाक़िस है 64
- ज़िंदगी गुज़ारने के दो रास्ते 65
- इल्म की अहमियत 67
- अजीब वाक़िआ 70
- इल्म कैसे हासिल होगा 71
- पिछले बुज़ुर्गों की मेहनत के वाक़िआत 72
- इमाम शाफ़ई रह० का वाक़िआ 72
- मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की वाक़िआ 72
- कामयाब ज़िंदगी 73

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० का वाक़िआ 74
- एक मुहद्दिस का वाक़िआ 74
- वाक़िआत 75
- साइंसदानों की मेहनत के वाक़िआत 77
- न्युटन का वाक़िआ 77
- आइन्सटाइन का वाक़िआ 78
- ज़ाती तज्रिबात और वाक़िआत 78
- बोर्ड में सेकेंड आने वाले लड़के का वाक़िआ 78
- लेडी डाक्टर का वाक़िआ 81
- नौबल ईनाम पाने वाले डा० अब्दुस्सलाम का वाक़िआ 82
- सोचने की बात 84


❁ ❁ ❁

## तक़्वे की बरकतें


- ज़मीन की ज़ीनत 86
- ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन 86
- अल्लाह के क़ुर्ब का पैमाना 87
- औलिया को न कोई ग़म न ख़ौफ़ होगा 87
- वली कौन होता है 88
- आम विलायत और ख़ास विलायत 89
- क़ुरआन तक़्वे से सजा हुआ है 89
- तक़्वे की कोई हद नहीं 90
- तक़्वे के फ़ायदे 90
- बरकत क्या है 91
- जिस्म की ग़िज़ा 91
- रूह की ग़िज़ा 92
- अल्लाह वाले कहाँ से खाते हैं 96

- बरकत क्या है 96
- अजीब चैलेंज 97
- इमाम अबू यूसुफ़ रह० का वाक़िआ 97
- हज़रत सालिम रह० का वाक़िआ 99
- रिज़्क़ किसके ज़िम्मे 99
- ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फैमली प्लानिंग) 100
- तक़्वा और रिज़्क़ के दरवाज़े 101
- तक़्वा हर जगह काम आता है 102
- पुलसिरात और तक़्वा 102
- जन्नत किन के लिए है 103
- आख़िरत की मंज़िलें और तक़्वा 105
- दुनिया की इज़्ज़त और तक़्वा 105
- हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ 105
- तक़्वा और अल्लाह का क़ुर्ब 107
- इल्म बड़ी नाज़ुक चीज़ है 108
- दिल और गंदख़ाना 109
- हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० का अजीब वाक़िआ 110
- तक़्वा क्या है 110


❋ ❋ ❋

## हिफ़ाज़त-ए-ज़बान


- ज़बान की अहमियत 113
- ज़बान से कलिमा पढ़ना 114
- तन्ज़ के नुक़सान 115
- कुफ़्र के कलिमात 116
- कलाम की अहमियत 117
- अल्लाह से डरने का अजीब वाक़िआ 118

- क़यामत के दिन की हाज़िरी 121
- जहन्नम में कौन लोग जाएंगे 122
- जन्नत की ज़मानत 122
- पहले तोलो फिर बोलो 122
- हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़े-ख़ुदा 123
- ज़बान की ख़ता 123
- ज़बान को सही इस्तेमाल कीजिए 124
- ज़रा संभलकर रहना 125
- अज़ीब नसीहत 126
- बदज़बानों से बचो 127
- सच का बोल बाला 127
- गुनाहों की माफ़ी का तरीक़ा 129


❋ ❋ ❋

## इस्लाह-ए-दिल


- दिल की इस्लाह 131
- जन्नत किन लोगों के लिए है 132
- दिल सख़्त कैसे होता है 133
- दिल अंधा कैसे होता है 134
- दिल पर मुहर कैसे लगती है 136
- दिल साफ़ कैसे होता है 137
- दिल की ग़िज़ा क्या है 138
- दिल की पालिश क्या है 138
- अल्लाह वालों की मजलिसों की बरकत 139
- अजीब वाक़िआ 139
- दिलों की ख़ुराक़ 140
- हकीम अन्सारी का वाक़िआ 140

- दिल का मोतिया बिंद और उसका इलाज 141
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र 142
- अल्लाह की मुहब्बत का रंग 143
- अल्लाह का रंग और दिल 143
- इंसान की ज़िंदगी कितनी है 143
- अल्लाह को क्या पसंद है 145
- सही मुसलमान कौन है 146
- दिल की बस्ती 146


❋ ❋ ❋

## साइंस और इस्लाम


- साइंस की बुनियाद 148
- काएनात की हर चीज़ जोड़ा-जोड़ा है 148
- मुसलमान तलबा से अपील 149
- असली इंसान और नक़ली इंसान 150
- दो चेहरे 151
- जिस्म और रूह की ज़रूरतें 151
- जुदा-जुदा मज़े 152
- हमें क़ुरआन पाक के पढ़ने का मज़ा क्यों नहीं आता 152
- अजीब इबादतें 153
- मुसलमानों की ज़िल्लत की वजह और उसका ईलाज 154
- तहज्जुद या सौ रुपया 155
- सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुआ से बहरी बेड़ा डूबने का वाक़िआ 155
- हज़रत क़ुतबुद्दीन रह० के जनाज़ा पढ़ाने का वाक़िआ 156


❋ ❋ ❋

## सोहबत-ए-औलिया


- ईमान वालों की निशानियाँ 159
- गुनाहों से बचने के दो तरीक़े 159
- जन्नत दो क़दम है 160
- नफ़्स मारना 160
- इंतिहाई ख़ुश नसीब इंसान कौन है 160
- अल्लाह कहाँ मिलता है 161
- सोहबते औलिया की बरकत 161
- सोहबते औलिया की तासीर 161
- मुहब्बते इलाही का आसान रास्ता 162
- औलिया अल्लाह की पहचान 162
- मन की आँखें कहाँ खुलती हैं 162
- क़ब्र और इबरत 163
- औलिया की सोहबत के फ़ायदे 163
- अक़्ल और इश्क़ का मुक़ाबला 163
- मुहब्बते इलाही कैसे नसीब होती है 164
- एक सहाबी की मुहब्बत का वाक़िआ 164
- रात का उठना किस तरह आसान हो जाता है 165
- ज़िंदा और मुर्दा शहर 166
- हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा 166
- मुहब्बत से क़ुरआन पढ़ने का वाक़िआ 167
- इख़्लास और मुहब्बत से रोने का वाक़िआ 168
- ख़ुलूस व मुहब्बत के दो आँसू 168
- एक सहाबी का मुहब्बत से क़ुरआन सुनाने का वाक़िआ 168
- मुहब्बत कैसे नसीब होती है 169
- मुहब्बते इलाही की तमन्ना 169
- हमारी ज़िंदगियाँ कैसी हैं? 169

- कई हज़ार दफ़ा क़ुरआन पाक ख़त्म किया 170
- एक बुज़ुर्ग की मुहब्बते क़ुरआन का वाक़िआ 170
- नेकियाँ किस तरह आसान होती हैं 170
- इश्क़े इलाही की दुआ 171
- मुहब्बते इलाही के फ़ायदे 171
- हज़रत शिबली रह० की मुहब्बते इलाही का वाक़िआ 171
- हज़रत शिबली रह० की मुहब्बते इलाही 174
- अल्लाह की रहमत का वाक़िआ 174
- अल्लाह के मज़दूर—ऐतिकाफ़ में बैठने वाले 174
- दो बातें 175
- दुनिया और आख़िरत में आमाल का अज्र मिलता है 176
- आख़िरत के अज्र की एक वजह 176
- आख़िरत के अज्र की दूसरी वजह 177
- मिक़दार और मैयार 177
- हूरें कैसी हैं 177
- अल्लाह से अल्लाह ही को मांगें 178
- अजीब नेमत 178
- लाख रुपए का शे'र 179
- मुहब्बते इलाही में मस्त बुज़ुर्ग का वाक़िआ 180
- औलाद से ज़्यादा अल्लाह तआला की रज़ा को तरजीह देने का वाक़िआ 181


❋ ❋ ❋

## रमज़ानुल मुबारक की बरकतें


- कामयाब इंसान 183
- शाबान की फ़ज़ीलत 184
- रमज़ानुल मुबारक में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मामूलात 185

- नेकियों का सीज़न 186
- जन्नत की सजावट 187
- नबी अरकम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिज़ारे रमज़ान 187
- रोज़ेदार की फ़ज़ीलत 188
- सुनहरी मौक़ा 188
- पिछले बुज़ुर्गों के वाक़िआत 189
- इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० का मामूल 189
- हज़रत रायपुरी रह० का मामूल 189
- रमज़ानुल मुबारक के बारे में हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० का मामूल 190
- अज्र व सवाब में इज़ाफ़ा 191
- तीन अश्रों की फ़ज़ीलत 191
- अल्लाह की रहमत बहाने ढूंढती है 191
- इबादत में रुकावट 192
- बुज़ुर्गी का पैमाना 193
- जन्नत की सेल 193
- हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़कूरिया रह० का मामूल 194
- हज़रत शैख़ुल हिंद रह० का मामूल 194
- अल्लाह को राज़ी करने का तरीक़ा 196
- आराम व सुकून 197
- हमारी आराम तलबी 197
- औरतों का क़ुरआन से लगाव 197
- मेहनत करने का महीना 198
- हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की बद्दुआ 199
- हमारी सुस्ती का हाल 199

- यूसुफ अलैहिस्सलाम से बूढ़ी औरत की मुहब्बत का वाक़िआ 200
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से परिन्दे की मुहब्बत 200
- निजात की सूरत 201


❋ ❋ ❋

## रोज़े क्यों फ़र्ज़ किए गए


- रोज़े क्यों फ़र्ज़ किए गए 203
- रोज़े का फ़लसफ़ा और हिकमत 203
- रोज़े का कमाल 204
- रोज़े के आदाब 205
- ज़्यादा रोज़ा लगने की वजहें 205
- ग़ीबत से परहेज़ 205
- ईमान के लिए ढाल 206
- रोज़ों के मक़सद 206
- रोज़ा और डाक्टरों की तहक़ीक़ 206
- बीमार पुर्सी और पड़ौसियों का ख़्याल 207
- अजीब वाक़िआ 208
- अच्छे अख़्लाक़ 209
- रोज़ा रखने का असल मक़सद 209
- नेमतों की क़द्र 209
- अजीब वाक़िआ 210
- खाने के आदाब 211
- इबरत अंगेज़ वाक़िआ 211
- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का मशहूर वाक़िआ 212
- ज़ाती वाक़िआ 213
- रिज़्क़ की तक़्सीम 214


❋ ❋ ❋

## नमाज़ की अहमियत


- क़ुरआन के दर्स के आदाब 215
- महफ़िल के आदाब 216
- मर्ज़ी की ज़िंदगी 216
- अल्लाह का क़ुर्ब (नज़दीकी) कैसे हासिल होगा 217
- ज़रूरी रास्ता 217
- दुनिया व आख़िरत की ज़िंदगी 217
- आख़िरत की ज़िंदगी कितनी है 218
- दुनिया आख़िरत के सामने डेढ़ दो मिनट है 218
- मुत्तक़ी का ठिकाना जन्नत है 219
- इंसान चंद दिन का मेहमान है 219
- अल्लाह का इंकार करने वाले हैं मगर मौत का इंकार करने वाला कोई नहीं 219
- अजीब वाक़िआ 219
- दुनिया परदेस है 220
- तीन पेट 221
- क़ब्र का पेपर 221
- क़ब्र के पेपर का जवाब कौन दे सकेगा 222
- इंसान का 'बी' पेपर 222
- मौत का वक़्त कब आएगा 223
- सबसे ज़्यादा अक़्लमंद कौन है 224
- ज़िंदगी की मोहलत का अजीब वाक़िआ 224
- ज़िंदगी किस लिए मिली हुई है 226
- ज़कात अदा न करने की सज़ा 226
- ज़ेवरात साँप या बिच्छू 227
- ज़कात अदा करने का आसान तरीक़ा 227

- औरत के नमाज़ न पढ़ने के बहाने 227
- नमाज़ छोड़ने की सज़ा 228
- नमाज़ और कुफ़्र 228
- अजीब बात 229
- हर सूरत में नमाज़ पढ़नी चाहिए 229
- नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है 230
- क़ज़ा नमाज़ कैसे पढ़ें 230
- ज़्यादा क़ज़ा नमाज़ें कैसे पढ़ें 231
- बेनमाज़ी की सज़ा 231
- सोचने की बात 232
- क़ब्र का ख़ौफ़नाक फ़रिश्ता 232
- नमाज़ के फ़ायदे 233
- नमाज़ का अज्र व सवाब 234
- ख़ुशी की बात 234
- दिन बदलते देर नहीं लगती 235
- सच्ची तौबा और क़ीमती वक़्त 236
- नमाज़ और ख़तरनाक बातें 236
- वक़्त की अहमियत 237
- हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की इबादत का वाक़िआ 237
- हमारी हालत क्या है 238
- ज़िंदगी का मुहासबा कर लें 238
- राबिया बसरिया रह० की दुआएं 238
- माँ की दुआएं लगती हैं 239
- माँ की दुआएं 239
- माँ की बद्दुआ का वाक़िआ 240
- माँ की दुआओं का वाक़िआ 241
- रूहानी क़ुव्वत 241

- क़ाबिले रश्क वाक़िआ 241
- बेनमाज़ी और औलाद नाफ़रमान 242
- लम्बी उम्मीदें 242
- अजीब बात 243
- इंसान को हर रोज़ क़ब्र सत्तर दफ़ा पुकारती है 243
- औरत मर्द के बराबर कैसे सवाब हासिल कर सकती है 244
- सोचने की बात 245
- आसान नेकियाँ 245


❋ ❋ ❋

## मक़सद-ए-हयात


- अनमोल हक़ीक़त 246
- दुनिया इम्तिहान की जगह 246
- मक़सदे ज़िंदगी 246
- क़ुरआन आबे हयात है 247
- क़ुरआन पाक के नाज़िल होने का मक़सद 247
- बे-उसूली की ज़िंदगी 248
- मर्ज़ी की ज़िंदगी 248
- फ़लाह की ज़िंदगी 248
- मक़सदे ज़िंदगी 248
- इंसानी ज़िंदगी का एक वर्क़ (पन्ना) 249
- तीन दिन 249
- राबिया बसरिया रह० की बात 249
- अजीब बात 250
- अल्लाह तआला की सत्तारी 250
- अल्लाह की नाराज़गी की निशानी 251
- ला इलाहा की ज़र्बें लगाने वाले नौजवान 252

- कीमिया का नुस्ख़ा 252
- नुस्ख़ा-ए-शिफ़ा 253
- मक़सदे हयात अल्लाह की याद 253
- गेहूँ का दाना और मेहनत 254
- दुंबा अपने मालिक को पहचानता है 254
- इंसान और घोड़े का फ़र्क़ 254
- अजीब वाक़िआ 256
- इबरत अंगेज़ वाक़िआ 257
- सफ़ेद बाल वाले की उम्र बारह साल 259
- शैख़ की सोहबत 259
- क़ारून के धंसने का वाक़िआ और तौबा मांगना 260
- सच्ची तौबा 260
- अल्लाह वालों की सोहबत 261
- ग़ाफ़िल ज़िंदगी का ईलाज 262
- शैतान का धोका 262


❋ ❋ ❋

## उलमा अंबिया के वारिस हैं।


- ख़ुश नसीब 265
- इल्म की फ़ज़ीलत 265
- अमल की अहमियत 267
- इल्म और मालूमात में फ़र्क़ 269
- इल्म और अमल का एक दूसरे के ख़िलाफ़ होना 270
- इल्म, अमल और इख़्लास 271
- हीरे मोतियों से क़ीमती आलिम 272
- मोमिन का हथियार 275

- इल्म, अमल और इख़्लास की क़ुव्वतें 276
- सहाबा की मिसालें 276
- अस्बाब के बग़ैर अल्लाह की मदद 278
- अल्लाह तआला की मदद के उसूल व क़ायदे 281
- दीन का ग़म 282
- इस्लाम के दुश्मन 282
- उलमा किराम के किरदार को गिराना 283
- इस्लाम के ख़िलाफ़ परोपेगंडा 283
- यहूदियों की साज़िशें 283
- बरकत की जगह 284
- फ्राँस में यहूदियों के रोज़े रखने का वाक़िआ 285
- रशिया में यहूदी की साज़िश का वाक़िआ 286
- अमरीका में टाई उलमा की करतूत 287
- टाई उलमा के मसअले 288
- टाई उलमा के फ़त्वे 289
- दीन का ग़म 291
- दीन के लिए क़ुर्बानियाँ देना 293


❋ ❋ ❋

## सुन्नते नबवी और जदीद साइंस


- दुनिया इम्तिहान की जगह 295
- कलिमा और ग़ैर मुस्लिम का वाक़िआ 296
- यूरोपी लोगों के पागल होने की वजह 298
- पागल होने की बुनियादी वजह 298
- अल्लाह तआला पर ईमान के फ़ायदे 299
- अच्छा सवाल 299
- अच्छा जवाब 299

- अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी 301
- ख़्वाहिशों वाली ज़िंदगी 301
- उसूलों वाली ज़िंदगी 302
- अमरीकी ग़ैर-मुस्लिम का वाक़िआ 303
- सुन्नत और साइंस के इख़्तिलाफ़ की बुनियादी वजह 304
- सुन्नते नबवी का चैलेंज 304
- खाने की सुन्नतें और जदीद साइंस 305
- पीने की सुन्नतें और जदीद सांइस 306
- सिरका और जदीद साइंस 306
- लुक़्मा ज़्यादा चबाना और जदीद साइंस 306
- कम चबाना और डाक्टरों की तहक़ीक़ 307
- सोने की सुन्नतें और जदीद साइंस 307
- डरावने ख़्वाब क्यों आते हैं 307
- वुज़ू की हिकमतें और मोतिया बिंद का ईलाज 308
- कान और डिश ऐन्टीना 308
- वाशिंगटन का डाक्टर नमाज़ का क़ायल 308
- दाइमी ख़ूबसूरती का राज़ 310
- औरतों को नमाज़ पढ़ने का मश्वरा 310
- मिसवाक की सुन्नत 310
- नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतें और दाँत 311
- फ्रांस के सर्जन का वाक़िआ 312
- सोचने की बात 313
- ज़ाती वाक़िआ और सुन्नत के फ़ायदे 313
- कामयाब ज़िंदगी 314


❋ ❋ ❋

# पेश-ए-लफ़्ज़

यह आजिज़ बंदा महज़ गंदा अपनी ख़ताओं पर नादिम और शर्मिन्दा सन् 1991 ई० के रमज़ानुल मुबारक में हज़रत दामत बरकातुहुम से बैअत हुआ। मुख़्तलिफ़ मजलिसों में हज़रत दामत बरकातुहुम की नफ़ा बख़्श ज़बान ऐसी असर करने वाली और पुर मग़ज़ बातें सुनीं कि दिल पर छाप सी लगती है। बे इख़्तियार इल्म व हिकमत के इन क़ीमती नगीनों को अपने फ़ायदे के लिए लिखना शुरू कर दिया। थोड़े ही अरसे में अच्छा ख़ासा ज़ख़ीरा इकठ्ठा हो गया तो कुछ लोगों के इसरार पर इन बयानों को छापने की फ़िक्र हुई। यह तमन्ना इस तरह पूरी हुई कि 'रावलपिंडी पोली टैकनीक कॉलेज' तदरीस के दौरान 'मेहनत और अज़मत' किताबच्चा (छोटी किताब) शाए (प्रकाशित) की गई। अहले इल्म लोगों ने उसको पसन्द किया। कुछ स्कूलों में उस्तादों ने कई सौ की तादाद में यह छोटी सी किताब ख़रीदकर पढ़ने वाले बच्चों को पढ़ने के लिए दिए जिससे बच्चों में मेहनत का जज़्बा परवान चढ़ा। अल्लाह का शुक्र है कि पहला ऐडीशन हाथों हाथ ख़त्म हो गया तो दूसरा ऐडीशन शाए किया गया। उसके बाद मौक़े-मौक़े बहुत सी छोटी किताबें शाए होती रहीं और आम आदमी तो क्या उलमा और स्कॉलर भी इन बयानात से फ़ायदा उठाते रहे। 'मुश्ते नमूना अज़ ख़रवार' के तौर पर कुछ लोगों के ज़बानी तास्सुरात या वसूल हुए ख़तों के कुछ इक़्तिसाबात नीचे लिखे हैं :

**"ये बयानात जदीद नफ़्सियाती और साइंसी अन्दाज़ के मुताबिक़ हैं।"**

**"जब इन बयानों को पढ़ना शुरू किया जाता है तो ख़त्म किए बग़ैर उठने को दिल नहीं चाहता।"**

किसी ने कहा,

**"यह किसी दिल वाले के बयानात हैं।"**

किसी ने इस शे'र की सूरत में तब्सरा किया :

*दिल से जो बात निकलती है असर रखती है*
*पर नहीं ताक़ते परवाज़ मगर रखती है*

अल्लाह का शुक्र है कि "इस्लाही बयानात" अब किताबी शक्ल में आपके हाथों में है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि अगर कहीं कोई कमी नज़र आए तो निशानदेही फ़रमाकर हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाएं। किताब की इशाअत के लिए आजिज़ मोहतरमी मुफ़्ती अहमद अली सहाब, जनाब डाक्टर अब्दुस्सुबूर साहब और मुहम्मद हनीफ़ साहब की प्यारी कोशिशों का तहे दिल से शुक्रगुज़ार है।

आजिज़ अल्लाह तआला के एहसानों का शुक्र किस मुँह से अदा करे। बस इतना कहना ही काफ़ी है कि जो कुछ हुआ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला के करम से हुआ :

*क्या फ़ायदा फ़िक्र बेश व कम से होगा*
*हम क्या हैं जो कोई काम हम होगा*
*जो कुछ हुआ हुआ करम से तेरे*
*जो कुछ कि होगा तेरे करम से होगा*

बंदा आज़िज़

**फ़क़ीर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी मुजद्दी**

# इस्लाम और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

ومن ايته خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان فى ذلك لايت لقوم يتفكرون. سبحان ربك رب العزة عما يصفون. وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

## मुख़्तलिफ़ समाजों में औरत की हैसियत

इज़्दिवाजी (शादी-शुदा) ज़िन्दगी के उनवान पर बात करते हुए इस बात को ज़हन में रखना ज़रूरी होगा कि इस्लाम से पहले दुनिया की मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और मुख़्तलिफ़ समाजों में औरत को क्या मुक़ाम हासिल था? दुनिया की तारीख़ को पढ़ा जाए तो यह बात साफ़ ज़ाहिर होती है कि इस्लाम से पहले दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में औरत अपने बुनियादी हुक़ूक़ से बिल्कुल महरूम थी। फ़्रांस में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह आधा इंसान है इसलिए समाज की तमाम ख़राबियों का ज़रिया

बनती है। चीन में औरत के बारे में तसव्वुर था कि इसमें शैतानी रूह होती है। लिहाज़ा ये बुराईयों की तरफ़ इंसान को दावत देती है। जापान में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह नापाक पैदा की गई है। इसलिए इबादतगाहों से इसको दूर रखा जाता था। हिंदूमत में जिस औरत का शौहर मर जाता उसको समाज में ज़िन्दा रहने के क़ाबिल नहीं समझा जाता था। इसलिए ज़रूरी था कि वह अपने शौहर की लाश के साथ ज़िन्दा जलकर अपने आपको ख़त्म कर ले। अगर वह इस तरह न करती तो उसको समाज में इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता था। ईसाई दुनिया में औरत को अल्लाह की पहचान के लिए रुकावट समझा जाता था। औरतों को तालीम दी जाती थी कि कुँवारी रहकर ज़िन्दगी गुज़ारे जबकि मर्द सन्यासी बनकर रहना इज़्ज़त की चीज़ समझते थे। अरब में बेटी का पैदा होना शर्म की चीज़ समझा जाता था। लिहाज़ा माँ-बाप खुद अपने हाथों से बेटी को ज़िन्दा क़ब्र में दफ़न कर दिया करते थे। औरत के हुक़ूक़ इतने पामाल किए जा चुके थे कि अगर कोई आदमी मर जाता तो जिस तरह विरासत की चीज़ें उसकी औलाद में तक़्सीम होती थीं। इसी तरह बीवी भी उसकी औलाद के निकाह में आ जाती थी। अगर किसी औरत का शौहर मर जाता तो मक्का मुकर्रमा से बाहर एक काल कोठरी में उस औरत को दो साल के लिए रखा जाता था। तहारत के लिए पानी और दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरियात भी पूरी न दी जाती थीं। अगर दो साल ये जतन काटकर भी औरत ज़िन्दा रहती तो उसका मुँह काला करके मक्का मुकर्रमा में फिराया जाता। उसके बाद उसको घर में रहने की इजाज़त दी जाती थी। अब सोचिए

तो सही कि शौहर तो मरा अपनी मौत से भला बीवी का क्या क़ुसूर? मगर यह मज़लूमा इतनी बेबस थी कि अपने हक़ में आवाज़ नहीं उठा सकती थी। ऐसे माहौल में जब कि चारों तरफ़ औरत के हुक़ूक़ को पामाल किया जा रहा था ऐसे वक़्त में अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी को इस्लाम की नेमत देकर भेजा। आप दुनिया में तशरीफ़ लाए और आपने आकर औरत के मुक़ाम को निखारा बतलाया कि ऐ लोगो! अगर यह बेटी है तो तुम्हारी इज़्ज़त है, बहन है तो तुम्हारी इज़्ज़त है अगर बीवी है तो ज़िन्दगी की साथी है। अगर माँ है तो उसके क़दमों में तुम्हारी जन्नत है।

## इस्लाम में औरत का मुक़ाम

मौज़्ज़िज़ सामईन! वे लोग किस क़दर सख़्त दिल होंगे जो अपनी बेटियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे। दफ़न होने वाली मासूम बच्चियों की चीख़ पुकार उनके कानों में पड़ती होगी मगर उनका ज़मीर उनको नहीं छिंछोड़ता होगा। ऐसे हालात में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दो उंगलियों का इशारा करके फ़रमाया जिस आदमी के घर में दो बेटियाँ हों वह उनकी अच्छी परवरिश करे यहाँ तक कि उनका निकाह कर दे तो वह आदमी जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।

## इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की अहमियत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने औरत की खोई हुई इज़्ज़त को

वापस दिलाया और बतलाया कि ﴿لا رهبانية فى الاسلام.﴾ इस्लाम में रहबानियत (सन्यास) नहीं है बल्कि साफ़ अलफ़ाज़ में वाज़ेह किया कि अगर औरत के साथ तुम इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो अल्लाह तआला की माअरिफ़त के रास्ते में तुम्हारी मददगार बनेगी। इस्लाम ने वाज़ेह किया कि सन्यासी बनकर जंगलों और गुफ़ाओं में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला की तरफ़ जो रास्ता जाता है वह जंगलों और गुफ़ाओं से होकर नहीं जाता, इन गली कूचों और बाज़ारों से होकर जाता है यानी इसी समाज में रहोगे और जो हुक़ूक़ तुम पर लागू होते हैं उन्हें पूरा करोगे तो तुम्हें अल्लाह तआला की पहचान नसीब होगी गोया इस्लाम ने सन्यास के बजाए समाजी ज़िन्दगी का सबक़ दिया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ﴿النكاح من سنتى﴾ निकाह मेरी सुन्नत है फिर फ़रमाया ﴿فمن رغب عن سنتى فليس منى﴾ जो मेरी सुन्नत को छोड़ेगा वह मेरी उम्मत में नहीं है। भला निकाह की अहमियत बताने के लिए इससे ज़्यादा और क्या ज़ोर दिया जा सकता है।

## अंबिया-ए-किराम की सुन्नतें

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि चार चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतें हैं :

1. ﴿والحياء﴾ हयादारी यानी तमाम नबी हया वाले होते थे।
2. ﴿والعطر﴾ यानी तमाम नबी ख़ुशबू का इस्तेमाल किया करते थे।
3. ﴿والسواك﴾ यानी सभी नबी मिसवाक किया करते थे।

4. ﴿والنكاح﴾ यानी सभी नबी शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ولقد ارسلنا رسلاً من قبلك وجعلنا لهم ازواجا وذرية.﴾

**ऐ मेरे महबूब! हमने आपसे पहले कितने ही अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा और हमने उनके लिए बीवियाँ और औलादें बनायीं।**

यह बात बिल्कुल खुली हुई है कि सब अंबिया अलैहिमुस्सलाम दीन की दावत का मुक़द्दस फ़रीज़ा अदा करने के लिए भेजे गए। वे लोगों को अल्लाह से मिलाया करते थे मगर औलाद या बीवी उनके रास्ते की रुकावट नहीं बना करती थी। गोया कि इस बात को पक्का कर दिया कि शादी-शुदा ज़िन्दगी से भागना हक़ीक़त में समाजिक़ हुक़ूक़ की अदाएगी से भागना है।

## निकाह आधा ईमान है

हदीस पाक में है,

﴿النكاح نصف الايمان.﴾

**निकाह तो आधा ईमान है।**

एक कुँवारा आदमी चाहे कितना ही नेक क्यों न हो जाए वह ईमान के कामिल रुत्बे को नहीं पहुँच सकता जब तक वह शादी-शुदा ज़िन्दगी में दाख़िल होकर ज़िम्मेदारियों और हक़ूक़ को अदा न करे। जब तक उसका ईमान कामिल नहीं होता। इसलिए जिस लड़के की शादी न हो और वह जवान उम्र हो हदीस में उसको मिस्कीन कहा गया है। जिस लड़की की शादी न हो और

जवान उम्र हो हदीस में उसको मिस्कीना कहा गया है। गोया ये लोग रहम के क़ाबिल हैं कि उम्र के इस हिस्से में ये शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारने से महरूम हैं।

## पाँच वसीयतें

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मुझे मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाँच कामों को जल्दी करने की वसीयत फ़रमाई :

1. ﴿عجلوا بالصلوة قبل الفوت﴾ तुम नमाज़ के फ़ौत हो जाने से पहले उसे अदा करो।
2. ﴿عجلوا بالتوبه قبل الموت﴾ मौत से पहले तौबा करने में जल्दी करो।
3. जब कोई आदमी मर जाए तो उसके कफ़न-दफ़न में जल्दी करो।
4. तुम्हारे सर पर क़र्ज़ हो तो उसको अदा करने में जल्दी करो।
5. जब बेटी या बेटे के लिए कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाए तो उसके निकाह में जल्दी करो।

## ख़ुश क़िस्मत इंसान

यह एक बात हक़ीक़त है कि किसी को अच्छा जीवन साथी मिल जाए तो वह यक़ीनन ख़ुश क़िस्मत इंसान है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जिस इंसान को पाँच चीज़ें मिल जाएं वह अपने आपको दुनिया का ख़ुश क़िस्मत इंसान

समझे। वे पाँच चीज़ें ये हैं :

1. **शुक्र करने वाली ज़बान** : यह अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है। आज तो लोगों का अक्सर यह हाल है कि अल्लाह की नेमतें खाते-खाते दाँत तो गिर जाते हैं मगर उसका शुक्र अदा करते करते ज़बान नहीं घिसती। मिसाल मशहूर है जिसका खाइए उसके गीत खाइए। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहें।
2. **ज़िक्र करने वाला दिल** : यानी जिस दिल में अल्लाह की याद रहती हो।
3. **मुशक़्क़त उठाने वाला बदन** : कहावत मशहूर है कि सेहतमंद जिस्म में ही सेहतमंद अक़्ल होती है।
4. **वतन की रोज़ी** : यह भी बड़ी नेमत है। कहावत मशहूर है, "वतन की आधी परदेस की सारी फिर भी बराबर नहीं।"
5. **नेक बीवी** : यानी हमदम व हमसाज़ नेक हो तो ज़िन्दगी का मज़ा दुगना हो जाता है।

जिस आदमी को ये पाँच नेमतें नसीब हों वह यूँ समझे कि अल्लाह तआला की तमाम नेमतें अता कर दी हैं।

## निकाह की अहमियत

यह सौ फ़ीसद पक्की बात है कि जहाँ निकाह नहीं होगा वहाँ ज़िना होगा। इसलिए शरिअत ने निकाह की अहमियत को वाज़ेह किया है। आज जिस समाज में लोग निकाह से भागते हैं यानी निकाह करने से बचते हैं, आप देखिए कि वहाँ सैक्स की ज़रूरत

के लिए बेहयाई के अड्डे खुले होते हैं। शरिअत शरीफ़ा ने इस बात को नापसंद किया है कि इंसान गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। इसलिए कहा गया कि तुम निकाह करो ताकि तुम्हें अपने आपको पाकबाज़ रखना आसान हो जाए। अगर निकाह का हुक्म न दिया जाता तो मर्द औरत को सिर्फ़ एक खिलौना समझ लेते, औरत अपने लिए कोई मुक़ाम न रखती, उसकी ज़िम्मेदारी उठाने वाला कोई न होता। शरिअत ने कहा कि अगर तुम चाहते हो कि इकठ्ठे रहो तो तुम्हें उसकी ज़िम्मेदारियों का बोझ भी उठाना पड़ेगा।

## हक़-ए-मेहर की अहमियत

निकाह एक मुआहिदा है जो मियाँ-बीवी में तय पाता है। इस मुआहिदे में अगर कोई औरत अपनी तरफ़ से शर्त रखनी चाहे तो शरिअत ने इसकी गुंजाइश दी है। मिसाल के तौर पर वह कहे कि मुझे अच्छे मकान की ज़रूरत है, मुझे महीने के इतने ख़र्च की ज़रूरत है, वह कहे कि मैं निकाह तब करूँगी अगर तलाक़ का हक़ मुझे दिया जाए। शरिअत ने इसकी इजाज़त दी है कि वह निकाह से पहले अपनी शर्तें मनवा सकती है लेकिन जब निकाह हो गया और तलाक़ का हक़ मर्द के पास है या मर्द अपनी मर्ज़ी से ख़र्चा देगा तो अल्लाह की बंदी अब रोने से क्या फ़ायदा। शरिअत ने निकाह को एक मुआहिदा कहा है। जबकि हमें इसकी अहमियत का पता नहीं होता। आजकल लड़की वाले अपनी सादगी में मारे जाते हैं। मेहर के हक़ के लिखने का वक़्त आया तो किसी ने कहा पाँच सौ रुपया किसी ने कहा पचास काफ़ी हैं।

ओ ख़ुदा के बंदो! पचास काफ़ी नहीं क्योंकि यह बच्ची की ज़िन्दगी का मामला है। इसे ऐब न समझो अगर तुम समझते हो कि कोई बात निकाह से पहले तय कर लेना बेहतर है तो शरिअत ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है। लड़के वालों की यही चाहत होती है कि लड़की वाले मेहर का हक़ न ही लिखवाएं तो बेहतर है। क्यों? ज़िम्मेदारी जो होती है। सुनिए और दिल के कानों से सुनिए मेहर के हक़ के बारे में तीन सुन्नतें हैं। आदमी को अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ इन तीनों में से किसी एक सुन्नत पर अमल कर लेना चाहिए :

1. मेहर फ़ातमी यानी सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का हक़े मेहर या फिर हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को जो हक़े मेहर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अदा फ़रमाया था। उसको बाँध लिया जाए तो यह भी सुन्नत है।
2. मेहर मिस्लः लड़की के क़रीबी रिश्तेदारों में आमतौर पर लड़कियों का जो मेहर रखा जाता है। उसको कहा जाता उनको बराबर उसका मेहर बाँधना भी सुन्नत है।
3. लड़की की दानिशमंदी नेकी और शराफ़त को सामने हुए उसका मेहर बाँधा जाए। यह भी सुन्नत है।

शरिअत ने तीन तरीक़े बताए हैं उनमें से किसी एक को पसन्द कर ले। उसे सुन्नत का सवाब मिलेगा।

निकाह के वक़्त मेहर का हक़ मुक़र्रर करते हुए कहते हैं कि मेहर मुअज्जिल होगा या मौज्जल होगा। उजलत (जल्दी) का लफ़्ज़ आपने पढ़ा होगा। उजलत का मतलब है जल्दी तो मुअज्जिल का मतलब है जल्दी अदा करना गोया मियाँ-बीवी के इकठ्ठे होने से

पहले मेहर मुअज्जिल अदा करना ज़रूरी है। शौहर अदा नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा। मेहर की दूसरी क़िस्म मौअज्जल है। इसका मतलब है 'इंदत्तलब' यानी जब बीवी उसको तलब करे वह ख़ाविन्द से ले सकती है। ख़ाविन्द की शान के मुनासिब नहीं कि वह मेहर माफ़ करवाने के लिए बीवी पर दबाव डाले। हाँ अगर कोई बीवी मेहर की रक़म वापस लौटा दे तो क़ुरआन के हिसाब से इस रक़म में बकरत होती है,

﴿فان طبن لكم عن شئى منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا.﴾

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसी रक़म से शहद ख़रीदते थे और पानी में मिलाकर मरीज़ों को पिलाते थे।

## निकाह की शोहरत

शरिअत ने निकाह की शोहरत का हुक्म दिया है।

﴿اعلنو النكاح بينكم.﴾

**निकाह की तश्हीर (शोहरत) करो।**

सुन्नत यह है कि जुमा का दिन हो। जुमा के मजमे में निकाह करे या कोई और बड़ा मजमा हो, उस वक़्त निकाह करे। दोस्तों और रिश्तेदारों को बुलाएं ताकि सबके इल्म में आ जाए कि आज के बाद यह लड़का और लड़की अपने नए घर की बुनियाद रख रहे हैं।

## शादी-शुदा के लिए अज्र ज़्यादा

जब इंसान शादी-शुदा बन जाता है तो अल्लाह तआला उसकी

इबादत का अज्र बढ़ा देते हैं, सुब्हानल्लाह। उलमा ने लिखा है कि जब इंसान निकाह कर लेता है और शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारता है उसको एक नमाज़ अदा करने पर अल्लाह तआला इक्कीस नमाज़ों का सवाब अता फ़रमा देते हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि यह इंसान अल्लाह तआला के हक़ तो पहले भी अदा कर रहा था अब बंदों के हक़ निभाते हुए अल्लाह के हक़ पूरे करेगा तो अल्लाह तआला उसकी इबादत का सवाब बढ़ा देंगे। गोया निकाह के बाद इबादत का सवाब बढ़ा दिया जाता है, सुब्हानअल्लाह। जब निकाह किया जाता है तो लड़के वाले लड़की में कुछ सिफ़ात देखते हैं और लड़की वाले लड़के वाले के अंदर कुछ सिफ़ात देखते हैं। आइए ज़रा उनका जाएज़ा लें :

## अच्छी बीवी कौन है?

हदीसे पाक में आता है कि इमाम बुख़ारी रह०, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल करते हैं, ﴿تنكح المراة لاربع.﴾ औरत से चार वजूहात से निकाह किया जाता है,

﴿لمالها ولحسبها ولجمالها ولدينها فاظفر بذات الدين تربة يداك.﴾

अव्वल माल की वजह से निकाह किया जाता है कि कोई मालदार घराना हो तो लोग निकाह का पैग़ाम भेजते हैं कि चलो कारोबार ही करवा देंगे, जहेज़ में कोई घर लेकर देंगे और कार तो कहीं गई ही नहीं। फ़रमाया उसके माल की वजह से उससे निकाह करते हैं। दूसरी वजह बताई उसके हसब-नसब की वजह से निकाह करते हैं यानी ऊँचे ख़ानदान की वजह से निकाह करते हैं।

तीसरी वजह फ़रमाई उसकी ख़ूबसूरती की वजह से निकाह किया जाता है। चौथी वजह फ़रमाई उसकी नेकी और दीनदारी की वजह से निकाह किया जाता है। फ़रमाया कि मैं तुम्हें इस बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अपने लिए दीन की बुनियाद पर रिश्ते तलाश करो।

जब बुनियाद ही कमज़ोर होगी तो ज़िन्दगी कैसे निभेगी। जिसने सिर्फ़ ख़ूबसूरती को देखा तो बताइए शक्ल व ख़ूबसूरती कितने दिन रहती है। यह कुछ सालों की बात होती है। जवानी हमेशा तो रहती नहीं। जिसकी बुनियाद ही कमज़ोर होगी, उस पर बनने वाला घर भी कमज़ोर होगा–

**जो शाख़ नाज़ुक पर आशियाना बनेगा नापाएदार होगा।**

नेकी और शराफ़त ऐसी चीज़ है जो वक़्त के साथ बढ़ती चली जाती है। तो इस बुनियाद पर जो घर बनेगा वह हमेशा मज़बूत से मज़बूत होता चला जाएगा। नेकी और दीनदारी की बुनियाद पर बीवियों को तलाश करो। इसलिए कि ख़ूबसूरत औरत का शौहर जब उसे देखता है तो उसकी आँखें ख़ुश होती हैं और नेक सीरत औरत का शौहर जब भी उसे देखता है तो उसका दिल ख़ुश हुआ करता है तो आँखों को ख़ुश करने के बजाए अपने दिलों को ख़ुश किया करो।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है,

﴿الدنيا متاع وخير متاعها المراة الصالحة.﴾

**दुनिया एक मताअ (माल) है और दुनिया की सबसे क़ीमती मताअ नेक बीवी है।**

गोया अल्लाह तआला जिसे नेक बीवी अता करे वह समझे कि मुझे दुनिया की बहुत बड़ी नेमत मिल गई।

﴿انما الاعمال بالنيات.﴾

**आमाल का दार व मदार नीयत पर है।**

जब नीयत में माल होगा तो आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे। नीयत में सिर्फ़ हुस्न होगा, आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे, सिर्फ़ हसब-नसब की वजह से निकाह होगा झगड़े खड़े होंगे। तो शरिअत ने इस बात की तालीम दी कि निकाह का मक़सद यह हो कि मैं पाकबाज़ी की ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ। जब मक़सद यह होगा तो इस मक़सद की वजह से घर आबाद हो जाएंगे। इब्ने माजा की रिवायत है,

ما استفاد المومن بعد تقوى الله عزوجل خير له من زوجة
صالحة ان امرها اطاعته وان نظر اليها سرته وان اقسم عليها
ابرته وان غاب عنها نصحته فى نفسها ومالـه.

अल्लाह तआला के तक़्वे के बाद इंसान जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा फ़ायदा उठाता है ﴿خير له من زوجة صالحة﴾ वह कोई चीज़ नहीं मगर नेक बीवी ﴿ان امرها اطاعته﴾ कि अगर उसे किसी बात का हुक्म दिया जाए तो उसकी इताअत करे। ﴿وان نظر اليها سرته﴾ जब उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा जाए तो उससे दिल ख़ुश होना चाहिए ﴿وان اقسم عليها ابرته﴾ और अगर कोई ऐसी सूरत हो कि शौहर उसके लिए क़सम उठाए कि बीवी उसको पूरा करेगी तो उसको पूरा कर दे ﴿وان غاب عنها نصحته فى نفسها ومالـه.﴾ और अगर वह बीवी से कुछ वक़्त के लिए दूर चला जाए तो बीवी उस

के माल और अपनी इज़्ज़त व आबरू के मामले में ख़्यानत न करे।

यह नेक बीवी की सिफ़ात बताई गयी हैं।

## दुनिया की बेहतरीन औरत

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महफ़िल में बात चली कि दुनिया की औरतों में से बेहतरीन औरत कौन सी है? किसी ने कोई सिफ़्त बताई और किसी ने कोई सिफ़्त बताई। ख़ैर बातचीत होती रही। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु किसी काम से घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बताया कि महफ़िल में यह ज़िक्र हो रहा है कि दुनिया की बेहतरीन औरत कौन सी है? अभी कोई फ़ैसला नहीं हुआ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि दुनिया सबसे बेहतरीन औरत कौन सी है? फ़रमाया हाँ बताइए। फ़रमाया कि दुनिया की सबसे बेहतरीन औरत वह है जो न ख़ुद किसी मर्द की तरफ़ देखे और न कोई ग़ैर मर्द उसकी तरफ़ देख सके। हज़रत अली महफ़िल में वापस तशरीफ़ लाए और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरी बीवी ने दुनिया की बेहतरीन औरत की पहचान बताई कि जो न ख़ुद किसी ग़ैर-महरम को देखे न ही कोई ग़ैर-महरम उसे देख सके। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿فاطمة بضعة منى﴾ फ़ातिमा तो मेरे जिगर का टुकड़ा है।

## अच्छी बीवी की सिफ़ात

अल्लाह वालों ने लिखा है कि बीवी में चार सिफ़ात ज़रूर

होनी चाहिएं। पहली सिफ़्त उसके चेहरे पर हया हो। यह बात बुनियादी हैसियत रखती है कि जिस औरत के चेहरे पर हया हो उसका दिल भी हया से लबरेज़ हो। कहावत मशहूर है, 'चेहरा इंसान के दिल का आईना होता है।' हज़रत सिद्दीक़े रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि मर्दों में भी हया बेहतर है मगर औरतों में बेहतरीन है। दूसरी सिफ़्त फ़रमाई जिसकी ज़बान में मिठास हो या जो बोले तो कानों में रस घोले। यह न हो कि हर वक़्त शौहर को जली-कटी सुनाती रहे या बच्चों को बात-बात पर झिड़कती रहे। तीसरी सिफ़्त उसके दिल में नेकी हो। चौथी सिफ़्त यह कि उसके हाथ काम-काज में मसरूफ़ रहें। यह ख़ूबियाँ जिस औरत में हों वह यक़ीनन बेहतरीन बीवी की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ार सकती है।

## अच्छे ख़ाविन्द की सिफ़ात

आइए अब किताब व सुन्नत की रौशनी में शौहर की सिफ़ात का जाएज़ा लें।

यह बात ज़हन में रखिए कि अगर अपनी बेटी के लिए कोई आदमी रिश्ता ढूंढे तो उसके लिए दो मिसालें काफ़ी हैं जो हमें रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी से मिलती हैं। नबी पाक अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी बेटी के लिए कैसे दामाद पसन्द किया। एक मिसाल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जो रिश्ते में क़रीबी थे, जुर्रात और बहादुरी में उनकी मिसाल नज़र नहीं आती। अल्लाह तआला ने उनको शेर का दिल अता किया था। मुशक़्क़त उठाने वाला बदन था, ज़िम्मेदारियाँ निभाने वाले इंसान थे। सबसे बड़ी बात कि अल्लाह तआला ने

इल्म इतना अता किया था जिसकी कोई हद नहीं थी। मालूम हुआ कि अपनी बेटी के लिए रिश्ता ढूंढना हो तो उससे बेहतर मिसाल और कोई नहीं मिल सकती है। दूसरी मिसाल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की है। अच्छा कारोबार था, समाज में इज़्ज़त का मुक़ाम था, इस्लाम लाने से पहले भी समाज के इज़्ज़त दार आदमी समझे जाते थे, तबियत में नरमी थी, इतने हया व शर्म वाले थे कि अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि उस्माने ग़नी से तो अल्लाह के फ़रिश्ते भी हया करते हैं। बेटी के लिए रिश्ता ढूंढना हो तो अल्लाह के नबी ने हमारे सामने मिसालें पेश कर दीं। इससे बेहतर मिसालें हमें दुनिया में कहीं और नहीं मिल सकतीं। शौहर की ख़ूबियों में से एक बड़ी ख़ूबी यह है कि उसमें बरदाश्त का मिज़ाज हो क्योंकि वह घर का ज़िम्मेदार होता है। जिस इदारे का ज़िम्मेदार ही बात-बात पर बिगड़ जाए तो वह इदारा तो ख़त्म हो जाएगा। इसलिए इर्शाद फ़रमाया गया है, ﴿وللرجل عليهن درجة﴾ अल्लाह तआला ने मर्दों को औरतों पर एक दर्जा अता फ़रमाया यानी उनको घर का ज़िम्मेदार बनाया। मर्द की मिसाल बादशाह की तरह है और औरत की मिसाल मलिका की तरह है। लिहाज़ा मर्द में बरदाश्त का मिज़ाज और संजीदगी का होना बहुत ज़रूरी है। आपने देखा होगा कि जब बरदाश्त नहीं होती तो बातों पर नोक झोंक होती है। मामूली बातें जैसे खाने में नमक क्यों कम है? रोटी ठंडी क्यों आ गई? गर्म आनी चाहिए थी, यह फ़लाँ काम ऐसे क्यों हुआ? बीवी बेचारी घर का काम करके थकी पड़ी हो तो कभी तारीफ़ के कलिमे ज़बान से नहीं निकलेंगे मगर ऐतिराज़ की बात जहाँ हाथ आ गई वहाँ बीवी की

ख़ैर नहीं। वह मर्द जिनमें तहम्मुल नहीं होता उनकी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी रास्ते में कहीं न कहीं खड़ी हो जाती है। किसी निकम्मी सी बात पर मियाँ-बीवी में सर्दी-गर्मी हुई तो मियाँ ने फ़ौरन तलाक़ तलाक़ तलाक़ के गोले दाग़ दिए। पिछले साल की बात है, फ़क़ीर स्वीडन में था। वहाँ एक घर में तलाक़ हुई। उसकी वजह यह हुई कि शौहर किचन के सिंक में आकर ब्रुश किया करता था। बीवी उसको मना किया करती थी कि जब बाथरूम का सिंक है तो वहाँ ब्रुश करें। उसने कहा नहीं मैं तो यहीं करूँगा। इसी बात पर मियाँ-बीवी में तलाक़ हो गई। जिसने सुना हैरान हुआ। बहुत जग हंसाई हुई। काश! दोनों समझ से काम लेते—

*पार उतरने के लिए तो ख़ैर बिल्कुल चाहिए*
*बीच दरिया डूबना हो भी इक पल चाहिए*

बरदाश्त और संजीदगी न हो तो इंसान की ज़िन्दगी कभी भी कामयाब नहीं गुज़र सकती। जब घर के सब लोग इकठ्ठे रहते हैं तो आपस में झगड़े हो सकते हैं। कभी बेटा बेटी माँ की नाफ़रमानी कर सकते हैं कभी माँ बच्चों पर ग़ुस्सा हो सकती है तो मसाइल पैदा होंगे। इन मसाइल को वही हल कर सकता है जो अपने अंदर बरदाश्त का मिज़ाज रखता हो।

मर्द की दूसरी बड़ी सिफ़्त यह कि वह घर की ज़िम्मेदारियों को निभाने में निखट्टू और काम चोर नहीं होना चाहिए। देखिए हमारे लिए इससे बढ़कर और मिसाल क्या हो सकती है कि रसूले अकरम सल्लल्लसाहु अलैहि वसल्लम वक़्त के नबी हैं और घर के काम-काज करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वक़्त के नबी हैं।

सफ़र में बीवी बच्चे की पैदाइश के दर्द का शिकार हुई तो फ़रमाया कि बैठो मैं अभी जाता हूँ आग ढूंढने के लिए,

﴿قال لا هله امكثو انى آنست نارا.﴾

**मैं तुम्हारे लिए कहीं न कहीं से आग ढूंढकर लाऊँ ताकि तुम्हें आराम मिले।**

अब देखिए कि वक़्त के नबी हैं और बीवी की आसानी के लिए आग के अंगारे ढूंढते फिरते हैं। यह कितनी बड़ी इबादत बनाई गई है जिसमें अल्लाह के नबी मसरूफ़ हैं। इसलिए घर का कोई काम मर्द को करना पड़ जाए तो उससे भागना नहीं चाहिए। जिस तरह छोटे-छोटे पत्थर मिलकर पहाड़ बन जाते हैं। इसी तरह छोटे-छोटे मसाइल इकठ्ठे होकर इख़्तिलाफ़ों के पहाड़ बन जाते हैं। दो दिलों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। नतीजा घर की तबाही की सूरत में सामने आता है। कभी-कभी तो पैंतीस पैंतीस साल की शादी-शुदा ज़िन्दगी तलाक़ की भेंट चढ़ जाती है।

अगर मर्द चाहते हैं कि बीवी हमारी ख़िदमत गुज़ार बनकर रहे तो मर्द को भी बीवी की ज़रूरतें पूरी करना होगी। यह बराबरी तभी होगी बराबर रह सकती है कि मर्द अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए और औरत अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए। शरिअत ने दोनों के बीच एक मीज़ान क़रार दिया। मियाँ के ज़िम्मे है कि वह औरत का हक़ अदा करे और के ज़िम्मे है कि वह मर्द के हक़ अदा करे। इस तरह दोनो पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। यह इज़्दिवाजी ज़िन्दगी का मक़सद है। अल्लाह ताआला का इर्शाद है कि ﴿ومن ايته.﴾ और उसकी निशानियों में से है कि ﴿ان خلق لكم من

﴿لتسكنوا انفسكم ازواجا﴾ कि उसने तुम्हारे लिए बीवियाँ बना दीं ﴿اليها﴾ ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। ﴿وجعل بينكم مودة ورحمة﴾ और तुम्हारे बीचे प्यार और रहमत पैदा कर दी ﴿ان فى ذلك لايت لقوم يتفكرون.﴾ सोचने वालों के लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं। अब क़ुरआन मजीद से साबित हुआ कि शादी-शुदा ज़िन्दगी का असल मक़सद प्यार व मुहब्बत से रहना और पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारना है। सोचिए जब हम ख़ुद सुकून के परखच्चे उड़ाने वाले बन जाएंगे तो फिर शादी-शुदा ज़िन्दगी कैसे कामयाब होगी।

अच्छी और कामयाब ज़िन्दगी वही है जिस में शौहर को भी सुकून हो और बीवी को भी सुकून हो। अगर दोनों में से किसी एक को भी सुकून नसीब न हो तो इसका मतलब यह है कि कामयाब ज़िन्दगी नहीं और आज तो अल्लाह की शान ऐसा मामला बन गया है कि शायद ही कोई शौहर ऐसा हो जो दिन में एक बार की बीवी की क़िस्मत को न रोए और शायद ही बीवी कोई बीवी ऐसी हो जो दिन में एक बार अपने शौहर को न कोसे। यह सब हमारी बे-इल्मी और बे-अमली का नतीजा है। हम मक़सदे असली को भूल गए हैं। हम छोटी-छोटी बातों पर आपस में झगड़े करने बैठ जाते हैं और छोटी-छोटी बातों को अना और नाक का मस्अला बना लिया करते हैं। यह ग़लत है। हमें होश में आने की ज़रूरत है।

## इज़्दिवाजी ज़िंदगी का हसीन तसव्वुर

क़ुरआन पाक ने मियाँ-बीवी के बारे में जो तसव्वुर दिया है

वह आज तक कोई दूसरा समाज पेश नहीं कर सका। क़ुरआन ने मियाँ-बीवी के बारे में कहा,

﴿هن لباس لكم وانتم لباس لهن.﴾

**वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।**

लिबास से मिसाल देने में दो हिकमतें हैं एक यह लिबास से इंसान को ज़ीनत मिलती है, लिबास से उसके ऐब छुपते हैं और दूसरी बात यह है कि इंसान के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका लिबास होता है। तो बीवी को शौहर के लिबास कहा है और शौहर को बीवी के लिए लिबास कहा हैं कि अब तुम दोनों एक दूसरे के इतने क़रीब हो जितना क़रीब लिबास हुआ करता है। अब बताइए क़रीब होने का इससे बेहतरीन तसव्वुर दूसरा पेश कर सकता है? अल्लाहु अकबर। रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अम्मा हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पसली से पैदा किया, क्यों? सर से इसलिए पैदा नहीं किया कि सर पर न बिठा ले और पाँव से इसलिए पैदा नहीं किया कि पाँव की जूती न बना ले। पसली से इसलिए पैदा किया कि ज़िंदगी का साथी समझते हुए अपने दिल के क़रीब रखे। क़ुरआन पाक मे यह नहीं कि कहा कि तुम ज़िन्दगी गुज़ारो बल्कि फ़रमाया,

﴿وعاشروهن باالمعروف.﴾

**तुमने उन बीवियों के साथ अच्छे अंदाज़ में ज़िन्दगी गुज़ारनी है।**

मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि यह बीवियों पर अल्लाह की बड़ी रहमत है कि अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ से मर्दों को

सिफ़ारिश कर दी। ऐ ख़ाविन्द! तुम्हारे लिए इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है कि तुम्हारी बीवियों के लिए तुम्हारे परवरदिगार सिफ़ारिश कर रहे हैं। आज तुम उसकी सिफ़ारिश का ख़्याल रखोगे तो कल क़यामत के दिन तुम्हारी बख़्शिश कर देगा। अल्लाहु अकबर कबीरा।

## बेहतरीन ख़ाविन्द कौन

हदीस पाक में आता है,

﴿خیر کم خیر کم الاھلی.﴾

**तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घरवालों के लिए बेहतर हो।**

और फ़रमाया,

﴿انا خیر کم لاھلی.﴾

**मैं अपने घरवालों के लिए तुम सबसे बेहतर हूँ।**

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी ज़िंदगी को मिसाल बनाकर पेश किया। किसी बंदे की अच्छाई का अंदाज़ा लगाना हो तो उसके दोस्तों से न पूछें, कारोबार में न देखें, पूछना हो तो उसकी बीवी से ज़रा पूछें कि यह कैसा इंसान हैं? अगर बीवी कि इसकी रहन-सहन अच्छा है तो वह अच्छा इंसान है। फ़रमाया,

﴿اکمل المومنین ایمانا احسنھم خلقا.﴾

**ईमान वालों में सबसे से कामिल ईमान वाला वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों।**

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास एक औरत आई और कहा कि मेरा शौहर बात-बात पर ग़ुस्सा करता है यहाँ तक कि मारता भी है। (यह बात दोनों कान खोलकर सुनने वाली है बाक़ी बातें तो चलो एक कान से भी सुन लेना मगर मर्दों से गुज़ारिश है कि यह बात ज़रा दोनों कान खोलकर सुनें) बीवी ने आकर नबी पाक की महफ़िल में कहा कि ऐ अल्लाह के नबी मेरा शौहर मुझे छोटी-छोटी बात पर झिड़कता है यहाँ तक कि मुझे मारता भी है तो अल्लाह के नबी ने फ़रमाया,

﴿يظل احدكم يضرب امرأته ضرب العبد ثم يظل يعانقها ولا يستحي.﴾

तुम्हारा मुँह काला हो तुम अपनी बीवी को बाँदी की तरह मारते हो फिर उसके साथ प्यार व मुहब्बत करते हो, क्या तुम्हें इस बात से शर्म नहीं आती यानी एक वक़्त तुम उसे इतना क़रीब कर रहे हो और दूसरे वक़्त उसे बाँदी की तरह मार रहे हो।

यह अल्फ़ाज़ हमें पैग़ाम दे रहे हैं कि बीवी घर की नौकरानी नहीं है बल्कि जीवन साथी है। हाँ अगर वह कोई कबीरा गुनाह कर बैठे और समझाने से भी न समझे तो अब उसे शरिअत ने दायरे में मारने की इजाज़त है ताकि नसीहत हो सके। कहावत मशहूर है, 'लातों के भूत बातों से नहीं मानते।' दो बातें बड़ी आम हैं, एक यह कि औरत की ज़बान क़ाबू में नहीं रहती दूसरे यह कि मर्द के हाथ क़ाबू में नहीं रहते। अल्लाह माफ़ फ़रमाए।

## औरत की ज़बान

याद रखिए मेर दोस्तो! बद ज़बान बीवी अपने शौहर को क़ब्र

तक पहुँचाने के लिए मेल-डाक का काम करती है। जिसकी बीवी बद ज़बान हो उसको सारी ज़िन्दगी सुकून नहीं मिल सकता। औरत को कहा गया है कि वह अपनी ज़बान के अंदर नरमी और मिठास पैदा करे और अच्छे अंदाज़ से बात करे। वैसे यह पक्की बात है कि मीठी से मीठी औरत क्यों न हो फिर भी उसके अंदर थोड़ी बहुत कढ़वाहट ज़रूर होगी क्योंकि तअल्लुक़ ही ऐसा नाज़ व अंदाज़ का होता है फिर भी औरत की ज़बान में नरमी होनी चाहिए। शरिअत ने कहा है कि बीवी अपने शौहर से नरम अंदाज़ करे। जहाँ तक किसी ग़ैर मर्द से बात करने का वक़्त हो तो सख़्ती से बात करे ताकि उसे दूसरी बात पूछने की हिम्मत न हो। आजकल की फ़ैशनपरस्त औरतों का मामल उल्टा है। शौहर से बात करनी हो तो सारी दुनिया की कड़वाहट सिमट आती है और किसी ग़ैर से बात करनी हो तो सारी दुनिया की शीरनी सिमट आती है। बहरहाल यह मानी हुई हक़ीक़त है कि जिन रिश्तों को तलवार नहीं काट सकती, ज़बान काट कर रख देती है। यह भी याद रखिए कि औरत की ज़बान वह तलवार है जिसको कभी ज़ंग नहीं लगता। कुछ औरतें तो इतनी बद ज़बान होती हैं कि अगर औरतें न होतीं तो बरदाश्त के लायक़ न होतीं। कई बार औरतें तो बद ज़बानी और बद गुमानी की वजह से घर बर्बाद कर लेती हैं। शरिअत ने हुक्म दिया है कि महरम मर्द से बात करो तो नरमी से, ग़ैर-महरम से बात करनी पड़े तो सख़्ती से करो। अंग्रेज़ दानिश्वरों से किसी का क़ौल है कि अगर औरत सारे दिन में एक बार अपने शौहर से नरमी से बात करे जिस तरह वह अपने पड़ौसी मर्द से बात करती है तो घर आबाद हो जाए। इस तरह

मर्द अगर पूरे दिन में एक बार बीवी को उस मुहब्बत की निगाह से देखे जिस नज़र से वह पड़ौसी औरत को देखता है तो भी घर आबाद हो जाए।

## पिछले बुज़ुर्गों का मामूल

अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक की पूरी एक सूरत जिसे सूरहः निसा कहते हैं, उसमें मर्द व औरत की शादी-शुदा ज़िंदगी के अहकाम बताए हैं। पहले के बुज़ुर्गों का यह मामूल था कि वे अपनी बेटियों को निकाह से पहले सूरहः निसा और सूरहः नूर का तर्जुमा पढ़ा दिया करते थे। हमें भी चाहिए कि जिनके हाँ बेटी हो वह उसको अगर पूरा क़ुरआन पाक तर्जुमे के साथ नहीं पढ़ा सकते तो कम से कम सूरहः निसा और सूरहः नूर को तर्जुमे के साथ पढ़ा दिया करें ताकि लड़की अच्छी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ार सके। कुछ पुराने बुज़ुर्गों का अजीब मामूल था कि जब बच्ची पढ़ लिख जाती और अभी शादी का भी कोई इंतिज़ाम नहीं होता (उस वक़्त प्रिन्टिंग प्रेस नहीं होते थे) तो यह बेटी के ज़िम्मे लगाते कि बेटी अपने लिए क़ुरआन पाक लिख लो तो यह बच्ची रोज़ाना वुज़ू के साथ अच्छे तरीक़े से क़ुरआन पाक लिखती थी और जब क़ुरआने पाक पूरा हो जाता था, सुनहरी जिल्द बाँधकर बाप अपनी बेटी को दिया करता था। यह पहले वक़्त का जहेज़ हुआ करता था। गोया उसके शौहर को पैग़ाम मिल रहा होता था कि मेरी बेटी ने मेरे घर में जो ज़िंदगी गुज़ारी है उसका फ़ारिग़ वक़्त इस क़ुरआन पाक को लिखने में गुज़रा है।

## ख़ाविंद के हुक़ूक़

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मियाँ-बीवी के हुक़ूक़ को बयान करते हुए औरतों को बताया कि अगर शरिअत में किसी और को सज्दा करने की इजाज़त होती तो मैं औरत को हुक्म करता कि अपने शौहर को सज्दा करे। हदीस पाक में आता हे कि जो औरत फ़राईज़ को पूरा करने वाली हो और उसे ऐसी हालत में मौत आ जाए कि उसका शौहर उससे ख़ुश हो तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलते हैं ताकि बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो सके। यह भी कह दिया कि अगर किसी औरत का ख़ाविंद जाएज़ वजह से नाराज़ हो और वह औरत ज़िद्द करके ख़ामोश रहे और ख़ाविंद ऐसी हालत में सो जाए तो सारी रात अल्लाह के फ़रिश्ते उस औरत पर लानत बरसाते रहते हैं। गोया ख़ाविंद की ख़ुशी में अल्लाह तआला की ख़ुशी को शामिल कर दिया गया। ख़ाविंद की इताअत और फ़रमांबरदारी में सहाबियात के वाक़िआत बड़े अजीब हैं।

एक सहाबिया के यहाँ बेटा पैदा हुआ। शौहर जिहाद में गया हुआ है। जिस दिन शौहर ने आना है तो उस दिन कुछ घंटे पहले बेटा मर गया। अब परेशान बैठी है कि ख़ाविंद इतने अरसे बाद आएगा और जब यह मालूम होगा कि बेटा मर गया है तो उसे कितना सदमा होगा, दिल में अफ़सोस होगा, काश बच्चे को ज़िन्दगी में आकर प्यार ही कर लेता। जब सहाबिया बहुत परेशान हुई तो उसने बच्चे को नहला धुलाकर कपड़ा डालकर चारपाई पर रख दिया। किसी को ख़बर न दी। ख़ाविंद घर आया तो पूछा कि

क्या हुआ। बताया कि अल्लाह ने बेटा दिया है। पूछा कि मेरा बेटा कहाँ है? कहा वह सुकून में है। ख़ाविंद समझा कि वह सो रहा है। लिहाज़ा ख़ाविंद ने खाना खाया, रात हो गई, मियाँ-बीवी इकठ्ठे भी हुए, सफ़र की बातें भी हुईं लेकिन उस औरत को देखिए जो माँ थी। उसके दिल दिल पर क्या गुज़र रही होगी जिसके मासूम बेटे की लाश चारपाई पर पड़ी है मगर वह ख़ाविंद की ख़ुशी की ख़ातिर सीने पर पत्थर रखकर इस राज़ को छुपाए बैठी हैं कि मेरे ख़ाविंद का दिल ग़मज़दा न हो। वह उसके साथ खाना भी खा रही है, हँस बोल भी रही है, दोनों मिल भी रहे हैं, यहाँ तक कि इसी हाल में सुबह हो गई। सुबह अपने ख़ाविंद से पूछती है कि मुझे एक बात बताइए। ख़ाविंद ने कहा पूछो, कहने लगी कि अगर कोई किसी को अमानत दे और फिर कुछ अरसे बाद वापस मांगे तो वह ख़ुशी से देनी चाहिए या ग़मज़दा होकर। ख़ाविंद ने कहा ख़ुश होकर। कहा कि अच्छा आपको भी अल्लाह तआला ने अमानत दी थी, आपके आने से कुछ देर पहले अल्लाह ने वह अमानत वापस ले ली आप जाइए और ख़ुशी-ख़ुशी अल्लाह के हवाले कर दीजिए, अल्लाहु अकबर। इस सहाबिया ने हुस्ने माअशरत का हक़ अदा कर दिया। सुबह उनके ख़ाविंद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अल्लाह के नबी मेरे घर में यह मामला हुआ। मेरी बीवी ने मेरी ख़ुशी की ख़ातिर इतने सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहिरा किया। अल्लाह के नबी ने दुआ दी तो अल्लाह तआला ने उस रात में बरकत डाली और वह औरत अपने ख़ाविंद से मिलने की वजह से हामला हुई। अल्लाह तआला ने उसको एक और बेटा अता किया

जो हाफ़िज़ क़ुरआन भी बना और हाफ़िज़ हदीस भी बना।

## बीवी के हुक़ूक़

आइए अब जाएज़ा लें कि औरत के ख़ाविन्द पर क्या हुक़ूक़ हैं? उनमें से पहला हक़ औरत के ख़र्चों को पूरा करना है। एक बात ज़हन में रख लेना कि अल्लाह तआला ने औरत के ज़िम्मे अपनी रोज़ी कमाने का बोझ नहीं रखा। औरत अपने ख़र्चों के लिए कमाने की ज़िम्मेदार नहीं है। अगर बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बेटी का ख़र्चा पूरा करे अगर बहन है तो भाई के ज़िम्मे है कि वह अपनी बहन का ख़र्चा पूरा करे, अगर बीवी है तो ख़ाविन्द के ज़िम्मे है कि वह बीवी का ख़र्चा पूरा करे और अगर माँ है तो औलाद का फ़र्ज़ है कि वह अपनी माँ का ख़र्चा पूरा करे। बेटी से लेकर माँ बनने तक अल्लाह ने औरत पर अपनी रोज़ी कमाना कभी भी फ़र्ज़ नहीं किया। तो यह ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपनी बावी का ख़र्चा पूरा करे। इस ख़र्च के बारे में उलमा ने मस्अला लिखा है कि शौहर को चाहिए कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ बीवी का ज़ाती ख़र्च तय करे। मुमकिन है कि कोई आदमी पचास डालर दे सकता हो, कोई आदमी सौ डालर देसकता हो और कोई आदमी सिर्फ़ दस डालर दे सकता हो, मिक़्दार की बात नहीं है। घर की सब्ज़ी वग़ैरह के लिए ख़र्चा देना और बात है। शरिअत कहती है कि वह तुम्हारी बीवी है अपने घर को छोड़कर तुम्हारा घर बसाने आई है। अब तुम इसको अपनी निजी ज़रूरतों के लिए कुछ पैसा दे दो और देने के बाद तुम्हें पूछने की ज़रूरत नहीं है कि कहाँ ख़र्च किया। इसमें

भी हिकमत है। हो सकता है कि औरत महसूस करे कि मेरी बहन ग़रीब है मैं उसको दे दूँ। मैं भाई की मदद करूँ। हो सकता है कि उसे तब ख़ुशी हो जब वह किसी ग़रीब औरत को दुखः बांटे। लिहाज़ा जब ज़ाती ख़र्चा दे दिया तो अब पूछने की ज़रूरत नहीं। वह जहाँ चाहे ख़र्च कर सकती है। बीवी के हुक़ूक़ के बारे में दूसरी बात सुनें। फ़क़्हा ने मस्अला लिखा है कि जब मर्द किसी औरत से निकाह करे उसकी ज़िम्मेदारी है कि उस औरत को सर छिपाने के लिए अपनी हैसियत के मुताबिक़ जगह बना दे। कहावत मशहूर है कि अपना घोंसला अपना कच्चा हो या पक्का। औरत को कोई ऐसी जगह देनी चाहिए जहाँ वह सर छुपाए। यह शौहर की ज़िम्मेदारी है। अगर मजबूरी हो कि घर के लोग इकठ्ठे रहते हों तो उसे कोई एक कमरा ही दे दिया जाए जहाँ वह अपनी ज़रूरतों का सामान रख सके। यह न हो कि बीवी का भी वह कमरा है और उसी में माँ-बाप का सामान भी पड़ा हो, किसी और का सामान भी पड़ा हो। यह बात ठीक है कि हर बंदा मकान नहीं बना सकता लेकिन जो बना सकते हैं वह बनाकर दें। यह ख़ाविंद की ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी है। तीसरी बात क्योंकि ख़ाविंद अपने घर के लिए अमीर और सरदार है। लिहाज़ा उसे चाहिए कि अपनी रिआया यानी घर वालों के साथ नरमी का बरताओ रखे।

﴿ارحموا من فی الارض یرحمکم فی السماء﴾

**तुम ज़मीन वालों पर नरमी करो आसमान वाला तुम पर नरमी फ़रमाएंगे।**

इसलिए फ़रमाया कि जो इंसान दूसरों के साथ नरमी करेगा,

अल्लाह तआला क़यामत के दिन उससे नरमी फ़रमाएंगे, जो दूसरों को जल्द माफ़ करने वाला होगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको जल्दी माफ़ फ़रमा देंगे, जो दूसरों के ऐबों की छुपाने वाला होगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके ऐबों को छुपाएंगे। इस्लाम में बीवी का तसव्वुर जीवन साथी का तसव्वुर है, हमदम व हमराज़ का तसव्वुसर है कोई बाँदी का तसव्वुर नहीं और अच्छे दोस्त का तसव्वुर है। क़ुरआन पाक में जहाँ-जहाँ मियाँ-बीवी के हुक़ूक़ का ज़िक्र है वहाँ जगह-जगह फ़रमाया ﴿واتقوا الله﴾ और तुम अल्लाह से डरते रहना। यह इसलिए कि ﴿واعلموا انكم ملقوه﴾ और तुम जान लेना कि तुम्हें अल्लाह से मुलाक़ात करनी है। इसलिए कुछ मामले ऐसे होते हैं कि न बीवी शर्म से किसी को बता सकती है और न शौहर शर्म से किसी को बता सकता है मगर अंदर अंदर दोनों एक दूसरे के दिल को तकलीफ़ पहुँचा रहे होते हैं। फ़रमाया कि तुम इस तरह एक दूसरे का दिल जलाया करोगे तो याद रखना कि तुमने अल्लाह तआला से भी मुलाक़ात करनी है अगर एक दूसरे को सुकून नहीं पहुँचाओगे तो क़यामत के दिन उसको कैसे जवाब दे सकोगे। एक बेहतरीन उसूल यह है कि अगर कोई ग़लती या कोताही बीवी से हो जाए तो वह माफ़ी मांग ले और ख़ाविंद से हो जाए तो वह माअज़रत कर ले। अपनी ग़लती पर माअज़रत कर लेना अज़मत होती हे। मुझे इस मौक़े पर अपने पीर व मुर्शिद की एक बात याद आई। ये हज़रात कितने ख़ालिस होते हैं। अपनी ज़िंदगी के वाक़िआत नमूना बनाकर पेश करते हैं। फ़रमाने लगे एक रोज़ मैं वुज़ू कर रहा था (बूढ़े थे) बीवी वुज़ू कराते वक़्त पानी ठीक तरह से नहीं डाल रही

थी जिस पर मैंने उन्हें ज़रा सख़्ती से बात कह दी कि तुम क्यों ठीक तरह वुज़ू नहीं करवा रही। मगर मेरे इस तरह ग़ुस्से पर वह ख़ामोश रहीं और जिस तरह मैं चाहता था वैसे करवा दिया। ख़ैर मैं वुज़ू करके घर से चला। रास्ते में ख़्याल आया कि अभी तो अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ यह बर्ताव कर रहा था, अभी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ पढ़ाऊँगा। मेरी नमाज़ कैसे क़ुबूल होगी। कहने लगे मैं आधे रास्ते से वापस आया और बीवी से माअज़रत की। उसने मुझे माफ़ कर दिया, फिर मैंने जाकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाई।

*मस्जिद ढा दे मंदिर ढा दे ढा दे जो कुछ ढैंदा*
*पर किसी का दिल न ढावें रब दिलां विच रहंदा*

## इज़्दिवाजी ज़िन्दगी और मशरिक़ी (पूर्वी) समाज

अज़ीज़ सामेइन! इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के बारे में हमारा मशरिक़ी समाज आज भी अल्लाह का शुक्र है बहुत पुरसुकून है। हमारा तजुरिबा है कि सौ में से निन्नानवे लड़कियाँ जब अपने वालदैन के घर से रुख़्सत होती हैं तो उनके दिलों में घर बसाने की नीयत होती है। यह बात सिर्फ़ मशरिक़ी लड़की को हासिल है कि जब अपने माँ-बाप के घर से चलती है तो दिल में नीयत होती है कि मैंने घर बसाना है। यह आगे शौहर का मामला है अच्छी तरह चलाया तो घर आबाद हो गया, ग़लत चलाया तो वह घर बर्बाद हो गया। कुछ मशरिक़ी लड़कियाँ तो इतनी पाक दामन होती हैं कि उनमें हूरों की सिफ़ात झलकती है मसलन ﴿عربا﴾ यानी शौहर की आशिक़ और ﴿قاصرات الطرف﴾ यानी ग़ैर-मर्दों की तरफ़ माइल न होने वालियाँ। यह इस्लाम की बरकत है कि मशरिक़ में आज

भी कुछ ऐसी मासूम जवानियाँ होती हैं जो अपने घर से क़दम निकालती हैं तो उनके दिलों में किसी ग़ैर-मर्द का दख़ल नहीं हुआ करता। कई ऐसी होती हैं कि शौहर का साया सर पर उठ गया। बच्चों की ख़ातिर पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देती हैं। हदीस पाक में इर्शाद है कि अगर कोई बेवा औरत यह समझे कि मुझे अपने बच्चों की परवरिश की ख़ातिर बैठना है और ख़ुद इसको पसंद करे तो अल्लाह तआला उसको जिहाद करने का सवाब अता फ़रमाते हैं। जिस औरत का शौहर फ़ौत हो जाए, उसकी बहार तो ख़िज़ां में बदल गई मगर यह ख़िज़ां के मौसम में भी अपने परों के नीचे अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को छुपाकर अपनी ज़िन्दगी रही होती हैं, अल्लाहु-अकबर।

*चमन का रंग गो तूने सरासर ऐ ख़िज़ां बदला*
*न हम ने शाख़े गुल छोड़ी न हम ने आशयां बदला*

## ख़ुशगवार इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के बारे में एक बात ध्यान में रखिए कि जहाँ मुहब्बत पतली हुआ करती है वहाँ ऐब मोटे नज़र आते हैं और छोटी-छोटी बातों के बतंगड़ बन जाया करते हैं। इसलिए शरिअत ने हुक्म दिया तुम आपस में मुहब्बत व प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारो। इंसान को बड़ा हौसला रखना चाहिए। इंगलिश का मक़ूला है

To run a big show one should have big heart.

**एक बड़ा निज़ाम चलाने के लिए इंसान को दिल भी बड़ा रखना चाहिए।**

इंसान को बरदाश्त और बुर्दबारी से घर के मामलात निभाने चाहिएं। कितनी अजीब बात है कि शौहर अपनी बीवी से झगड़ता है जो ज़िन्दगी शौहर के लिए वक़्फ़ कर चुकी होती है और बीवी अपने शौहर से झगड़ती हो जो उसकी ज़िन्दगी में इतना बड़ा मुक़ाम पा चुका होता है।

**तर्जमा शे'रः हम ने सुना अल्लाह वाले दुश्मनों के दिलों को भी तंग नहीं किया करते। तुम्हें यह मुक़ाम कहाँ से नसीब हुआ कि तुम अपनों के साथ झगड़ रहे हो।**

कभी-कभी दीनी जिहालत की वजह से या घमंड की वजह से पड़े लिखे जोड़ों में झगड़ा रहता है। मियाँ-बीवी एक दूसरे के इस क़दर ख़िलाफ़ कि शौहर हर वक़्त बीवी की ग़लतियाँ और ऐब ढूंढने की कोशिश करता है और बीवी हर वक़्त शौहर की ग़लतियाँ और ऐब ढूंढने की कोशिश करती है। जिस्म एक दूसरे के कितने क़रीब और दिल एक दूसरे से कितनी दूर। इन दोनों का मामला पर यह शे'र सही साबित होता है

*ज़िन्दगी बीत रही है दानिश*
*कोई बे जुर्म सज़ा हो जैसे*

कभी-कभी ये झगड़े किसी तीसरी वजह से होते हैं। यह मेरी बात याद रखना कि मियाँ-बीवी एक दूसरे की वजह से नहीं झगड़ते हैं, जब भी झगड़ेगें किसी तीसरे की वजह से झगड़ेंगे। या तो वह सास-ससुर होंगे और या बीवी के मैके वाले होंगे। इसलिए शरिअत ने एक बात समझा दी। लड़की को कहा कि देखो निकाह से पहले एक माँ थी अब तुम्हारी दो माँऐं हैं और दो बाप हैं। इसी तरह लड़के को बता दिया कि तुम्हारी दो माँए और दो बाप

हैं। अल्लाह तआला ने सास-ससुर को माँ-बाप का दर्जा दिया है। इसमें एक बेहतरीन उसूल याद रख लीजिए कि शादी के बाद लड़की को चाहिए कि शौहर के घर वालों को ख़ुश रखे और शौहर को चाहिए कि वह अपनी बीवी के घर वालों को ख़ुश रखे। जहाँ यह उसूल दोनों मियाँ-बीवी अपना लेंगे वहाँ आप देखेंगे कि कभी लड़ाई नहीं होगी। कभी एक ग़ुस्सा में आ जाए तो दूसरे को चाहिए कि बरदाश्त से काम ले। एक वक़्त दोनों का ग़ुस्से में आ जाना मामले को बेहद ख़राब करता है। हदीस में आता है कि अगर कोई औरत शौहर के ग़ुस्से पर सब्र करे तो अल्लाह तआला उसे हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सब्र का अज्र अता फ़रमाएंगे। इसी तरह अगर कोई मर्द अपनी बीवी के ग़ुस्से पर सब्र करेगा, अल्लाह तआला उसे भी सब्रे अय्यूब का दर्जा अता फ़रमाएंगे तो जब सब्र का इतना अज्र व सवाब मिलता है तो उस पर ज़रा ख़ामोश हो जाया करें।

## मुख़ालिफ़ सोच से बचें

मियाँ-बीवी दोनों को मुख़ालिफ़ सोच से बचना चाहिए। पंजाबी का मक़ूला है, *"भांदे दा सब कुछ भावे ते न भांदे दा कुछ वी न भावे"* यानी जो आदमी अच्छा लगता है उसका हर काम अच्छा लगता है और जो आदमी बुरा लगता हो उसका हर काम बुरा लगता है। मियाँ-बीवी में अगर मंफ़ी सोच हो तो एक दूसरे की हर बात ज़हर मालूम होती है। हिकायत है कि एक बुज़ुर्ग की बीवी उनसे हर वक़्त लड़ती झगड़ती रहती थी। उन्होंने एक दिन दुआ की कि या अल्लाह! मेरे हाथ पर कोई ऐसी करामत ज़ाहिर फ़रमा

जिसे देखकर मेरी बीवी भी मेरी अक़ीदतमंद बन जाए। तो क़ुदरते इलाही से उन्हें इल्हाम हुआ कि तुम उड़ना चाहो तो तुम्हें हवा में उड़ने की करामत मिलेगी। अब वह बुज़ुर्ग उड़ते-उड़ते अपने घर के ऊपर से गुज़रे। जब शाम को वापस घर आए तो बीवी ने आते ही कहा, लो तुम भी बड़े बुज़ुर्ग बने फिरते हो, बुज़ुर्ग तो आज मैंने देखे तो हवा में उड़ते जा रहे थे। उस बुज़ुर्ग ने कहा, ख़ुदा की बंदी वह मैं ही तो था। तो बीवी ने फ़ौरन कहा, अच्छा मैं भी तो सोच रही थी कि यह उड़ने वाला टेढ़ा-टेढ़ा क्यों उड़ रहा है। देखा मंफ़ी सोच कितनी बुरी चीज़ है। मियाँ-बीवी को चाहिए कि अपने अंदर सही सोच पैदा करें। मियाँ-बीवी को चाहिए कि क़दम उठाने से पहले देख लें कि रास्ता किधर को जाता है।

जो आदमी अपनी बीवी पर एहसान करेगा यक़ीनन वह अपनी बीवी का दिल जीत लेगा। तो बीवी को ताक़त के ज़रिए जीतने की कोशिश न करें, बीवी को एहसान और अच्छे अख़्लाक़ के ज़रिए जीतने की कोशिश करें। इज़्दिवाजी ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह मंफ़ी सोच है। देखें सोचने के अलग-अलग अंदाज़ होते हैं। मैं मिसाल देता हूँ कि एक डाल पर फूल भी है कांटे भी हैं। ऐ मुख़ातिब तुझे शिकायत है कि फूल के साथ कांटे भी है और मुझे ख़ुशी है कि कांटों के साथ फूल भी हैं। यह अपनी नज़र है कि किसी की नज़र कांटों पर गई और किसी की नज़र फूल पर गई। सच है नज़र अपनी अपनी पसंद अपनी-अपनी।

## मुस्कराना भी नेकी है

हदीस पाक में आता है कि जब कोई बीवी अपने शौहर की

तरफ़ मुस्कराती है शौहर बीवी की तरफ़ देखकर मुस्कराता है तो अल्लाह तआला दोनों की तरफ़ देखकर मुस्कराते हैं।

. अल्लाह! अल्लाह! हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब भी घर में दाख़िल होते तो मुस्कराते चेहरे के साथ दाख़िल होते थे। शौहरों को चाहिए कि दफ़्तरों के झगड़े दफ़्तर में छोड़ आया करें। जब घर में दाख़िल हों तो मुस्कराहटें बखेरते हुए। सुन्नत पर अमल का सवाब भी मिलेगा और जवाब में बीवी की मुस्कराहट भी मिलेगी।

## A smile

A smile is some thing nice to see, it does not cast a cent.

A smile is some thing all you own it never can be spent.

A smile is welcome every where, it does away with frown.

A smile is good for every one, to ease life's up and downs.

यह भी नहीं होना चाहिए कि शौहर को मुस्कराते चेहरे से घर आए मगर बीवी मुँह लटकाए फिरती रहे। शौहर की मुस्कराहट का जवाब बीवी को नीचे लिखे बोलों में देना चाहिए:

*माइय्यत गर न हो तेरी तो घबराऊँ गुलिस्तान में*
*रहे तू साथ तो सहरा में गुलशन का मज़ा पाऊँ*

## लिखकर लटकाइए

इंगलिश का फ़िक़्रा है। इसको मेरे दोस्तो याद कर लीजिए बल्कि घर में कहीं लिखकर लटका लीजिए:

House built by hands but home is built by hearts.

कहने वाले ने कहा कि मकान तो हाथों से बन जाया करते हैं मगर घर हमेशा दिलों से बना करते हैं। ईंटें जुड़ती हैं मकान बन जाते हैं मगर जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाया करते हैं। मेरे दोस्तो! हम इन बातों को तवज्जेह से सुनें और अच्छी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें। हम ग़ैरों के मुल्क में बैठे हैं। हमारी छोटी-छोटी बातों पर होने वाले झगड़े जब मुक़ामी इंतिज़ामिया को पहुँचते हैं तो वे इस्लाम पर हँसते हैं, वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात पर उंगली उठाते हैं। कितनी बुरी बात है अगर हमने अपनी कम समझी की वजह से किसी को इस्लाम पर उंगली उठाने का मौक़ा दे दिया। छोटी-छोटी बातें अपने घर में समेट लिया करें। ऐसा झगड़ा न बनाएं तो कम्युनिटी में चर्चा का मौज़ू बने। हम अपनी ज़ात के ख़ोल से बाहर निकलें। हम मुसलमानों की बदनामी के बजाए मुसलमानों की नेकनामी का ज़रिया बनें। आज ऐसी सोच रखने वाले इतने थोड़े हैं कि चिराग़ लेकर ढूंढने की ज़रूरत है।

*एक हुजूम औलादे आदम का जिधर भी देखिए*
*ढूंढिए तो हर तरफ़ अल्लाह के बंदों का काल*

आमतौर पर देखा गया है कि जब मियाँ-बीवी क़रीब होते हैं तो एक दूसरे से लड़ाईयाँ होती हैं। अगर इसी हालत में मियाँ मर जाए तो यही बीवी सारी ज़िन्दगी मियाँ को याद करके रोती रहेगी कि जी इतना अच्छा था, मेरे लिए तो बहुत ही अच्छा था। अगर बीवी मर जाए तो यही मियाँ सारी ज़िन्दगी याद करके रोता रहेगा कि बीवी कितनी अच्छी थी, मेरा कितना ख़्याल रखती थी तो

पंजाबी की एक कहावत है कि 'बंदे दी क़दर आंदी है टर गयां या मर गयां।'

हम बंदे की क़दर क़रीब रहते हुए कर लिया करें। कई मर्तबा देखा गया कि मियाँ-बीवी झगड़े में एक दूसरे को तलाक़ दे देते हैं। जब होश आती है तो मियाँ अपनी जगह पागल बना फिरता है और बीवी अपनी जगह पागल बनी फिरती है। फिर हमारे पास आते हैं कि मौलवी साहब कोई ऐसी सूरत हो सकती है कि हम फिर से मियाँ-बीवी बनकर रह सकें? ऐसी सूरते हाल हर्गिज़ नहीं आने देनी चाहिए। माफ़ और दरगुज़र और समझने-समझाने से काम लेना चाहिए बल्कि एक रूठे तो दूसरे को मना लेना चाहिए। किसी शायर ने क्या अच्छी बात कही है :

*इतने अच्छे मौसम में रूठना नहीं अच्छा*
*हार जीत की बातें कल पे हम उठा रखें*
*आज दोस्ती कर लें*

इस मज़मून को एक दूसरे शायर ने नए रंग से बाँधा है:

*ज़िन्दगी यूँ ही बहुत कम है मुहब्बत के लिए*
*रूठ कर वक़्त गंवाने की ज़रूरत क्या है*

## अनोखा वाक़िआ

उलमाए किराम ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी जबकि शौहर बहुत बदसूरत और शक्ल का बहुत अनोखा था, रंग काला था। बहरहाल ज़िन्दगी गुज़र रही थी। नेक समाज में ज़िन्दगियाँ गुज़र जाया करती हैं। एक मौक़े पर ख़ाविंद

ने बीवी की तरफ़ देखा तो मुस्कराया। बीवी देखकर कहने लगी हम दोनों जन्नती हैं। उसने पूछा यह आपको कैसे पता चला? बीवी ने कहा आप मुझे देखते हैं तो खुश होते हैं, शुक्र अदा करते हैं और जब मैं आपको देखती हूँ तो सब्र करती हूँ। शरिअत का हुक्म है कि सब्र करना वाला भी जन्नती है और शुक्र करने वाला भी जन्नती है।

## शादी के बाद प्यार

एक अहम पहलू पर रौशनी डालना ग़लत न होगा। इस्लाम ने शादी से पहले मुहब्बत की इजाज़त नहीं दी है, शादी के बाद मुहब्बत की इजाज़त दी है। 'लव-मैरिज' की बुनियाद बनाएंगे तो यह बुनियाद कमज़ोर होगी। आप उसका अंजाम मग़रिबी (यूरोपी) समाज में देख रहे हैं। शादी के बाद मुहब्बत का क्या मतलब है कि जब माँ-बाप ने वकील बनकर लड़के के लिए बेहतरीन लड़की तलाश कर ली और लड़की के लिए बेहतरीन लड़का तलाश कर लिया तो वे अब मियाँ-बीवी बन चुके हैं। अब उन्हें एक दूसरे के साथ मुहब्बत व प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए। वे जिस क़दर मुहब्बत और प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, उस पर उन्हें अज्र व सवाब मिलेगा। मेरे आक़ा ने अपने एक-एक फ़रमान में ज़िन्दगी के सुनहरी उसूल बतला दिए।

आइए ख़ुशगवार इज़्दिवाजी गुज़ारने के लिए मैं अपने प्यारे आक़ा और सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अमल आपको बता देता हूँ।

## मुहब्बत भरी ज़िन्दगी

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम घर में तशरीफ़ लाए। सहन में देखा कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा प्याले में पानी पी रही हैं। दूर से देखा तो वहीं से फ़रमाया, हुमैरा! (नाम आएशा था मगर प्यार से हुमैरा कहा करते थे। नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इसमें सबक़ दिया, दूर से फ़रमाया, हुमैरा!) बोलीं ऐ अल्लाह के नबी फ़रमाइए। फ़रमाया थोड़ा सा पानी मेरे लिए भी बचा देना। वह उम्मती थीं, बीवी थीं, आप ख़ाविंद भी थे और सैय्यदुल मुरसलीन भी थे, रहमतुल्लिल आलमीन भी थे, बकरतें तो आपकी ज़ात से मिलनी थीं मगर सुब्हानअल्लाह मुहब्बत भी अजीब चीज़ है कि जीवन साथी को देखा कि पानी पी रही हैं तो दूर से कहा कि कुछ पानी मेरे लिए भी बचा देना। तो हज़रत आएशा ने पानी बचा दिया। जब आप क़रीब तशरीफ़ लाए तो अपनी बीवी का बचा हुआ पानी हाथ में लेकर पीना चाहा। अचानक आप रुक गए और पूछा कि ऐ हुमैरा! तूने इस प्याले पर किस जगह लब लगाकर पिया था? हज़रत आएशा क़रीब आयीं और उस जगह को बताया। हदीस पाक में आता है कि आपने प्याले के रुख़ को फेरा और उस जगह अपने लबे मुबारक लगाकर पानी नोश फ़रमाया, अल्लाह! अल्लाह।

मेरे दोस्तो! अगर ख़ाविंद बीवी को इतना प्यार देगा तो क्या बीवी का दिमाग़ ख़राब है कि वह घर को आबाद नहीं करेगी बल्कि वह तो घर आबाद करने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देगी। वह मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से, उलफ़त का जवाब

उलफ़त से, प्यार का जवाब प्यार से और वफ़ा का जवाब वफ़ाओं से देगी। वह ख़ाविंद की मुहब्बत को दिल में बसाएगी और अंखियों के झरोखों में शौहर की तस्वीर सजाएगी। यह है इज़्दिवाजी ज़िंदगी का हसीन इस्लामी तसव्वुर। आइए नफ़रतों को दूर कीजिए और मुहब्बत भरी पाकीज़ा ज़िन्दगी की शुरूआत कीजिए। किसी शायर ने कहा–

*फ़ुर्सते ज़िन्दगी कम है मुहब्बतों के लिए*
*लाते हैं कहाँ से वक़्त लोग नफ़रतों के लिए*

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें ख़ुशगवार इज़्दिवाजी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❁ ❁ ❁

# मेहनत में अज़मत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

وان ليس للانسان ما سعى. وان سعيه سوف يرى. سبحان ربك رب

العزه عما يصفون .وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

**इंसान के लिए वही कुछ होता है जो वह मेहनत करता है और उसकी कोशिश देखी जाएगी**

## इंसान की ज़िन्दगी का मक़सद

इंसान पेड़ नहीं कि खड़ा रहे और पत्थर नहीं कि पड़ा रहे। यह तो अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात (मख़्लूक़ में सबसे अफ़ज़ल) है। इसे चाहिए कि यादे इलाही में लगा रहे। मक़सदे ज़िन्दगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बंदगी और ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआला की याद है। यह इतनी लम्बी-चौड़ी काएनात हमारे सामने फैली हुई नज़र आती है यह सब इंसान के लिए बनाई गई है जबकि इंसान को अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है—

*न तू ज़मीं के लिए है न आसमां के लिए*
*जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए*

## काएनात किस लिए है

यह आसमान की पोशीदा चीज़ें, यह ज़मीन की ख़ूबसूरती, ये समुंद्र की गहराईयाँ, ये आसमान पर चमकते हुए सितारे, ये पहाड़, ये मैदान, ये हवाएं और ये फ़िज़ाएं सबकी सब इंसान के लिए हैं। इनको पैदा करने वाला कितना अज़ीम और कितना बुलंद है कि उसने अपनी कुदरते कामिला से इंसान के लिए इतनी बड़ी काएनात पैदा कर दी।

*खेतियाँ सरसब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वास्ते*
*चाँद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते*
*बहर ओ बर शम्स ओ क़मर मा शुमा के वास्ते*
*यह जहाँ तेरे लिए है तू ख़ुदा के वास्ते*

## ज़िन्दगी के रास्ते

इंसान इस दुनिया में दो तरह से ज़िन्दगी गुज़ार सकता है, एक मन चाही ज़िन्दगी दूसरे रब चाही ज़िन्दगी। अब हमने इन दोनों बातों को देखना है कि इन दोनों में से बेहतर रास्ता कौन सा है। एक है अपनी मर्ज़ी से ज़िन्दगी गुज़ारना दूसरे है अल्लाह तआला की मर्ज़ी से ज़िन्दगी गुज़ारना। इंसान जब अपनी मर्ज़ी की ज़िन्दगी गुज़ारता है तो गोया अपनी सोच के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है। इंसान की सोच के कुछ रास्ते हैं। मसलन इंसान आँख से देखता है, कान से सुनता है, ज़बान से बोलता है। इन आज़ा के साथ इंसान गोया मालूमात इकठ्ठी करता है या दूसरे लफ़्ज़ों में इल्म हासिल करता है। फिर इस इल्म पर इंसान अपनी ज़िन्दगी की बुनियाद उठाता है।

## इंसान का देखना नाक़िस है

वह रास्ते जहाँ से इंसान इल्म हासिल कर रहा है उन पर अगर ग़ौर करें तो नाक़िस नज़र आएंगे। मिसाल के तौर पर इंसान का देखना नाक़िस है। हर चीज़ को नहीं देख सकता अगर रोशनी में देख सकता है तो अंधेरे में नहीं देख सकता हालाँकि बिल्ली अंधेरे में भी देखती है। फिर हम एक ख़ास हद तक देखते हैं उससे ज़्यादा नहीं देख सकते जबकि परिन्दे मसलन उक़ाब कई-कई फ़र्लांग के फ़ासले से देख सकता है। इस वक़्त हवा के अंदर जो हमारे सामने है अरबों और खरबों छोटे-छोटे ज़र्रात व जरासीम हैं मगर हमें नज़र नहीं आते अगर हमें नज़र आते तो शायद हमारा जीना मुश्किल हो जाता। इसलिए अल्लाह तआला ने हमें एक ख़ास हद तक देखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उससे ऊपर नीचे नहीं देख सकते लेकिन अगर माइक्रोस्कोप से देखें तो वे साफ़ नज़र आते हैं बल्कि आजकल कई कैप्सूल ऐसे हैं कि अगर आप उन्हें खोलकर मेज़ पर रखें तो वह आपको एक पाउडर की शकल में नज़र आएंगे मगर माइक्रोस्कोप से देखें तो वे छोटे-छोटे जरासीम नज़र आएंगे जो हरकत कर रहे होंगे। ज़ाहिर है आँख समझती है कि यह पाउडर है लेकिन माइक्रोस्कोप की आँख बताती है कि वह ज़िन्दा जरासीम हैं जो हरकत कर रहे हैं। बस इंसान का देखना पूरा नहीं। देखता है मगर ख़ास हद और क़ैद में देखती है उससे ऊपर नीचे नहीं देखती। बस साबित हुआ कि इंसान का देखना कामिल नहीं बल्कि नाक़िस है।

देखिए सेंध से बचने के लिए जो अलार्म लगे हुए होते हैं उनके एक तरफ़ ट्रॉसमीटर लगा हुआ होता है और दूसरी तरफ़

रिसीवर होता है और बीच में किरनें पार होती रहती हैं लेकिन आम आदमी इसको नहीं देख सकता। जब चोर गुज़रता है और किरनें कट जाती हैं तो फ़ौरन अलार्म बज जाता है और चोर पकड़ा जाता है फिर भी इसको ज़ाहिरी आँख से नहीं देख सकते। यह कुछ मिसालें इसीलिए दीं कि वाज़ेह हो जाए कि इंसान का देखना नाक़िस है।

## इंसान का सुनना नाक़िस है

इंसान के सुनने पर ग़ौर कीजिए। हम कुछ चीज़ों की आवाज़ सुनते हैं मगर हर आवाज़ नहीं सुन सकते। देखिए आज इतनी तरक़्क़ी के बावजूद मुख़्तलिफ़ लैबाट्रियों में कुत्ते और बिल्लियाँ पाली जाती हैं। सांइसदान कहते हैं कि ज़लज़ले के आने से पहले कुछ आवाज़े ज़मीन से निकली शुरू हो जाती हैं जिनको इंसान महसूस नहीं कर सकता मगर जानवर उनको महसूस करते हैं। जानवर उछलना कूदना शुरू कर देते हैं और इशारा हो जाता है कि कोई ज़लज़ला आने वाला है। जो आवाज़ें इंसान नहीं सुन सकता वे जानवर सुनते है। इतनी मामूली आवाज़ें जानवर सुन लेते हैं मगर हम नहीं सुन सकते। हमारे अपने सुनने की एक फ्रीक्वेन्सी बैन्ड है। उस बैन्ड के अंदर अंदर आवाज़ होगी तो हम सुनेंगे वरना नहीं सुनेंगे।

इसी तरह कई और आवाज़ें इंसान नहीं सुन सकते। मसलन चूहों के लिए एक इलैक्ट्रानिक आला बनाया गया है जिसका नाम 'बाय बाय रैट' रखा गया है। 'बाय बाय रैट' एक आवाज़ों का निज़ाम है। इलैक्ट्रानिक आवाज़ को वह एक ऐसी फ्रीक्वैंसी से

निकालते या फेंकते हैं कि अगर आम इंसान उस जगह खड़ा हो तो उसे पता नहीं चलता कि यह क्या है मगर चूहे के दिमाग़ पर वह आवाज़ इस तरह पड़ रही होती है जैसे हथौड़े पड़ रहे हों। थोड़ी देर में चूहें उस जगह से भाग जाते हैं। यह रैट एक्सपैलर बनाया गया है। अब देखिए हम इसकी आवाज़ को नहीं सुन सकते मगर चूहा इस आवाज़ को सुनता है और उसके लिए इस जगह रहना मुसीबत बन जाता है यहाँ तक कि वह उस जगह से भाग जाता है। मालूम हुआ कि इंसान हर आवाज़ को नहीं सुन सकता। उसका एक बैंड है जैसे रेडियो के बैंड होते हैं। मसलन यह शार्ट वेज़ है, यह मीडियम वेज़ है। अब अगर हम शार्ट वेज़ पर रेडियों को ऑन करते हैं तो शार्ट को रिसीव करता है मगर मिडियम वेज़ को रिसीव नहीं करता और अगर मिडियम वेज़ पर उसको सैट कर दें तो वह शार्ट वेज़ को रिसीव नहीं कर सकता। इस तरह हमारी सुनने व देखने का एक बैंड है। उस बैंड के अंदर तो हम काम कर सकते हैं उससे आगे नहीं कर सकते। बताने की मक़सद यह था कि इंसान अपने ज़हन में जो मालूमात जमा करता है तो वे इन ज़रियों से हासिल करता है। जब ये इल्म के ज़रिए ही नाक़िस और कमज़ोर हैं तो उनसे मिलने वाली मालूमात भी कमज़ोर होंगी।

## ज़िंदगी गुज़ारने के दो रास्ते

ज़िंदगी गुज़ारने के दो रास्ते हैं। अपने तज्रिबों और मुशाहिदों पर ज़िंदगी गुज़ारना और अपने ख़ालिक़ व मालिक के हुक्मों के

मुताबिक़ जिंदगी बसर करना। हम पहले जाएज़ा ले चुके हैं कि जिस तरह इंसान के इल्म के ज़रिए कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं उसी तरह उसको तजूरिबे भी कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं। अपने तजूरिबों को बुनियाद बनाने के बजाए जो इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों को बुनियाद बनाएगा वह यक़ीनन कामयाब होगा। मसलन अगर कोई इंजीनियर किसी मशीन को बनाए तो वही बेहतर जानता है कि यह मशीन कैसे बेहतर काम कर सकती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस मशीन (इंसान) को बनाया तो वही बेहतर जानता है कि यह कैसे बेहतर काम करेगी। आमतौर पर बाहर के मुल्क से कोई मशीन मंगाई जाए तो वे लोग मशीन भी भेजते हैं, मशीन के साथ इंजीनियर भी भेजते हैं और एक किताब भी भेजते हैं। वह इंजीनियर आता है और मशीन को लगाता है फिर मशीन को चलाता है फिर वह मुक़ामी लोगों को ट्रेनिंग देता है कि जिस तरह मैं काम कर रहा हूँ अगर मेरे बाद इसी तरह तुमने किया तो तुम कामयाब होगे अगर इसमें कोताही करोगे तो नाकाम होगे और अगर कहीं अटक जाओ तो रहनुमाई करने वाली किताब है इसको पढ़ लेना। इस मशीन के बारे में सारी बातें इसके अंदर लिखी हुई हैं। यह कहकर वह चला जाता है। अगर इस मिसाल को मुसलमान अपने दिमाग़ रखें तो हक़ीक़त ज़िंदगी को समझना आसान हो जाता है। अल्लाह तआला ने इंसान की मशीन को बनाया और अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा। उनमें आख़िर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। आप इंसानों के इंजीनियर बनकर तशरीफ़ लाए और आप पर क़ुरआन पाक यानी इंसानों की ज़िंदगी के लिए किताब व रुश्द व हिदायत नाज़िल हुई।

आपने उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी और सहाबाए किराम से कहा कि ऐ लोगो! जिस तरह मैं ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ अगर तुम इस तरह ज़िंदगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जाओगे और फिर यह भी फ़रमाया कि मैं अपने पीछे हिदायत की किताब छोड़े जा रहा हूँ। अगर तुम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे तो कामयाब होगें और वाक़ई सही बात है कि क़ुरआन पाक सच्चाइयों को मजमूआ है, हक़ीक़तों का ख़ज़ाना है जो कि आज हमारे पास मौजूद है जब कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत हमारे लिए नूर का मीनार है।

## इल्म की अहमियत

दीने इस्लाम में इल्म हासिल करने की बड़ी अहमियत बयान की गई है कि इतनी अहमियत कभी किसी ने बयान नहीं की। चौदह सौ साल पहले जब अरब के लोग वहशी और जाहिल थे, क़ैसर व किसरा उन पर हुकूमत करना पसंद नहीं करते थे बल्कि मशहूर इतिहासकार गबन अपनी किताब में लिखता है :

At that time Arabia was the most degraded nation of the world.

**उस वक़्त अरब दुनिया की ज़लील तरीन और हक़ीर तरीन क़ौम थी।**

उन लोगों में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत दी। आप ने इस जाहिल क़ौम को इल्म के बारे में फ़ज़ाइल सुनाए। फ़रमाया,

﴿طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة.﴾

**इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।**

फिर फ़रमाया,

﴿اطلبوا العلم من المهد الى اللحد.﴾

**तुम इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक।**

इमाम ग़ज़ाली रह० का क़ौल है :

**उलमा के क़लमों की स्याही शहीदों के ख़ून से भी ज़्यादा क़ीमती हुआ करती है।**

अब बताइए इल्म की इतनी अहमियत कोई बता सकता है।

एक किताब पाकिस्तान में बहुत मशहूर हुई जिसका नाम था A ranking of the most influential personalities of the history. (तारीख़ में सबसे ज़्यादा असरदार हस्तियों की दर्जाबंदी) जिसे माइकल हार्ट ने लिखा और वह ईसाई था। उसने अपने हिसाब से तारीख़ा में जितने नामवर हज़रात गुज़रे हैं उनकी दर्जाबंदी की है। उस दर्जाबंदी में उसने सबसे पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिखा है और इब्तिदाई जुमला बड़ा अजीब लिखता है कि :

कुछ पढ़ने वाले हैरान होंगे कि मैंने मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तारीख़ की सबसे ज़्यादा असरअंदाज़ हस्तियों में सबसे आगे क्यों रखा है?

मैंने उन्हें सबसे पहले क्यों लिखा है। उसके दिल दलील बड़ी

प्यारी देता है। लिखता है कि दुनिया में जितने भी नामवर लोग आए अगर उनकी ज़िंदगियों के हालात को आप पढ़ें तो वे अपने लड़कपन, जवानी के दौर में अपने वक़्त के बेहतरीन तालीमी इदारों में किसी उस्ताद के पास तालीम पाते नज़र आते हैं। न्युटन इतना बड़ा साइंसदान था मगर अपने वक़्त के उस्तादों के पास तालीम पाता नज़र आता है तो ये लोग अपने वक़्त की बेहतरीन युनिर्वसटियों में, बेहतरीन कालेजों में और बेहतरीन इदारों में तालीम पाते नज़र आते हैं मगर एक हस्ती पूरी काएनात में ऐसी मौजूद है जो सारी ज़िंदगी शार्गिद बनकर किसी उस्ताद के सामने बैठी नज़र नहीं आती। फिर उसने इंसानीयत को इल्म के ज़ेवर से सजाया। इस हक़ीक़त ने मजबूर कर दिया कि इस दर्जेबंदी में मैं उसे सबसे पहले लिखूँ। वाक़ई इस बात में कोई शक नहीं। देखिए एक मोटी सी बात पर ग़ौर करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी में ख़ित्ताए अरब से बाहर क़दम नहीं रखा। लड़कपन में तिजारत के लिए तशरीफ़ ले गए थे लेकिन नबुव्वत के बाद आपने मुल्क अरब से बाहर क़दम ही नहीं रखा और आपकी नबुव्वत के ज़माने में सहाबाए किराम आप ही के गिर्द जमा रहे। कोई उनमें से क़ैसर व किसरा की हुकूमतों के पास मैनेजमैंट का कोर्स करने नहीं गया, एक्नामिक्स का कोर्स करने नहीं गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी वहीं रहे और आपके सहाबा भी आपके पास रहे। उसके बाद उन सहाबा के अंदर ऐसी सिफ़ात आ गयीं, ऐसे कमालात आ गए कि उन्होंने क़ैसर व किसरा का ताज छीना और इतनी बड़ी सलतनत को

उन्होंने बड़ी मात दी। दुनिया को उन्होंने दुनिया को जीतना और दुनिया का निज़ाम चलाना सिखाया। यह सब कुछ उन्होंने कहाँ से सीखा था। यह वही के ज़रिए अल्लाह तआला ने अपने महबूब को सिखाया था और सहाबाए किराम ने इन तालीमात को अपने पल्ले बाँध लिया था।

## अजीब वाक़िआ

मुअज़्ज़िज़ सामेइन! इल्म के बारे में जितनी अहमियत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतलाई है। यक़ीन जानिए इतनी अहमियत किसी और ने नहीं बताई। हम एक दफ़ा कोर्स कर रहे थे। उसका मौज़ू था 'इफ़ैक्टिव मैनेजर' और इंगलैंड के मि० बोरोडी उस कोर्स के टीचर थे जो एक ही वक़्त में कई युनीवर्सिटियों में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर थे। कैलीफ़ोर्निया की युनीवर्सिटी, इंगलैंड की युनीवर्सिटी, जर्मनी की युनीवर्सिटी और हौलैंड की युनीवर्सिटी। इतना क़ाबिल और माहिर बंदा हमें लैक्चर दे रहा था। लैक्चर के दौरान उन्होंने इल्म के बारे में बात की और बात करते करते कहने लगे कि हमारे साइंसदानों ने यह बात महसूस की कि आदमी सिर्फ़ पढ़ने के ज़माने में ही नहीं पढ़ता बल्कि अपने पेशे में आकर भी पढ़ता है मतबल यह कि सारी ज़िंदगी पढ़ पड़ता है। उसने यह बात बड़े नख़रे से की जैसे कोई बड़ी रिसर्च वाली बात की हो। जब उसने यह बात की तो मैं खड़ा हुआ। मैंने कहा कि मैं तुम्हें अपने आक़ा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुना दूँ। उसने कहा ज़रूर सुनाओ। मैंने यह हदीस सुनाई

कि इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक। जब मैंने यह हदीस सुनाई तो यक़ीन कीजिए कि उसने लैक्चर रोका और ब्रीफ़केस खोला, अपनी डायरी निकाली और मुझे कहा कि आप यह हदीस मुझे लिखवा दें। मैं आइंदा अपने लैक्चर में यह हदीस पढ़कर लोगों को सुनाया करूंगा कि चौदह सौ साल पहले मुसलमानों के नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इल्म की इतनी अहमियत बतलाई है, सुब्हानअल्लाह।

## इल्म कैसे हासिल होगा

अब यह इल्म कैसे हासिल होगा। इसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। अरबी का मक़ूला है,

﴿من طلب فقد وجد.﴾

**जिसने तलब किया बस बेशक उसने पा लिया।**

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿ليس للانسان الا ما سعى﴾

**इंसान के लिए वही कुछ है जिसकी कोशिश करता है।**

हम अपनी ज़िंदगी अपने हाथों से बनाते हैं या अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी बिगाड़ते हैं। यह पक्की बात है कि मेहनत ऐसी मिठास है कि ज़िंदगी में उसको जितना दाख़िल करते जाएंगे, ज़िंदगी उतनी मीठी होती जाएगी।

# पिछले बुज़ुर्गों की मेहनत के वाक़िआत

## इमाम शाफ़ई रह० का वाक़िआ

हमारे पहले के बुज़ुर्गों ने अपनी ज़िंदगियों में इतनी मेहनत की कि आज आम आदमी उन वाक़िआत को सुनकर हैरान रह जाते हैं। आप अंदाज़ा कर सकते हैं कि इमाम शाफ़ई रह० तेरह साल की उम्र में इमाम शाफ़ई बन चुके थे। तेरह साल की उम्र में क़ुरआन व हदीस के उलूम को हासिल कर चुके थे और क़ुरआन पाक का दर्स देना शुरू कर दिया था। यह उनकी मेहनत थी, यह उनका शौक़ था कि इतनी कम उम्री में उन्होंने इल्म के इतने बड़े बड़े समुंद्र भी पार कर लिए थे।

## मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की वाक़िआ

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की क्या उम्र थी सत्रह साल। आज सत्रह साल के बच्चे को घर का ज़िम्मेदार बना दें तो वह घर को ठीक तरह से चला नहीं सकता और वह सत्रह साल का बच्चा कमांडर इन चीफ़ बना हुआ था और फ़ौज को लेकर जा रहा है। कहाँ? जहाँ राजा दाहिर की मज़बूत हकूमत थी। मैंने सिंध में वह मैदान देखा है जहाँ राजा दाहिर और मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की लड़ाई हुई थी। मैं उसकी वुसअतों के देखकर हैरान हो रहा था। उस वक़्त मेरी अजीब कैफ़ियत थी। मैंने कहा कि यह नौजवान कहाँ से चला, उसके साथ कोई तर्बियत पाई हुई फ़ौज

नहीं थी। यह भी एक हक़ीक़त है बल्कि हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने उसे बुलाकर कह दिया कि मेरी फ़ौज दूसरे मुहिमों में मसरूफ़ है मगर मुझे यह बात पहुँचाई गई कि हमारी कुछ औरतें आ रही थी। राजा दाहिर के डाकुओं ने क़ाफ़िले को लूट लिया। एक लड़की ने कहा मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। चुनाँचे मुहम्मद बिन क़ासिम रह० ने कार्नर मीटिंगे कीं, नौजवानों को इकठ्ठा किया। ये प्रोफ़ेशनल फ़ौजी नहीं थे। ये ईमान व जज़्बे के घोड़े पर सवार हुए। वे नौजवान इकठ्ठे हुए और उन्होंने कहा कि हम आपके साथ चलते हैं। किताबों में लिखा है कि मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के ज़हन में यह बात इतनी समाई हुई थी कि वह बैठे बैठे चौंक उठते थे और कहते थे, ﴿لبيك يا اختي، لبيك يا اختي﴾ मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ, मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ। ये कुछ नौजवानों की जमात वहाँ पहुँची और राजा दाहिर की लोहे में डूबी हुई फ़ौज के छक्के छुड़ा दिए फिर यही नहीं उसको कंट्रोल कर लिया बल्कि उसको क़ाबू में करके अपनी सैकेंड लाईन के हाथ में उसने कमांड दे दी और खुद आगे मार्च किया। खुद कंट्रोल करना और चीज़ होती है मगर इतनी खुद ऐतिमादी होना कि उसको अपनी सैकेंड लाईन के हवाले कर दिया और फिर आगे चलते चलते सिंध से लेकर मुल्तान तक इस्लाम का झंडा लहराता रहा।

## कामयाब ज़िंदगी

आज अगर हमारे नौजवान के अंदर यह शौक़ तरक़्क़ी कर जाए तो मेरे दोस्तो! दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरफ़ मैली आँख नहीं देख सकती। आज इस बात की ज़रूरत है कि हम

मेहमत को अपनाएं। आराम तलबी की ज़िंदगी कामयाब ज़िंदगी नहीं है। कामयाब ज़िंदगी हमेशा मेहनत, लगन और मुजाहिदे की ज़िंदगी हुआ करती है।

## हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० का वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पास हदीस का इल्म सीखने के लिए इतना बड़ा मजमा हुआ करता था कि एक दफ़ा दवातों की तादाद को गिना गया तो चालीस हज़ार निकलीं। उस दौर में लाउड स्पीकर तो होते नहीं थे वह हदीस सुनाते तो कुछ लोग नमाज़ के मुकब्बिर की तरह उनके अलफ़ाज़ को ऊँची आवाज़ से दोहरा देते ताकि पूरे मजमे तक आवाज़ पहुँच जाए। इन मुकब्बिर हज़रात की तादाद बारह सौ हुआ करती थी। पूरा मजमा कितना बड़ा होगा। इतने बड़े मजमे में बैठकर हदीस का इल्म पढ़ाया।

## एक मुहद्दिस का वाक़िआ

एक मुहद्दिस के ज़िंदगी के हालात में लिखा है कि उन्होंने इतनी किताबें लिखीं कि उनके पैदा होने के दिन से लेकर उनके मरने तक अगर सारे दिनों को गिन लिया जाए तो हर दिन के अंदर दस सफ़हात बनते हैं। यह कोई आसान काम नहीं है। पैदा होने से लेकर मरने तक पूरे दिन गिन लिए जाएं कि इतने हज़ार दिन ज़िंदा रहे और इतने उन्होंने सफ़हात लिखे और आपस में इन्हें तक़्सीम किया जाए तो हर दिन में औसत दस सफ़हात बनते

हैं। अब बारह तेरह साल तो इल्म हासिल करने में ही गुज़रे होंगे अगर वे निकाल दें तो ये दस की बजाए बीस हो जाएंगे। बीस सफ़हात का हमारे लिए एक दिन में समझकर पढ़ना मुश्किल होता है बजाए उसे नए सिरे से तर्तीब व तालीफ़ कर लिया जाए। जो लोग तसनीफ़ व तालीफ़ करते हैं वे समझते हैं कि एक दिन में एक सफ़हा लिखना भी आसान काम नहीं होता। उन्होंने कितनी मेहनत की होगी।

## वाक़िआत

इस्लाम के दौर का मशहूर घुमक्कड़ इब्ने मौक़ल अट्ठाईस साल तक घूमता रहा। आज उसको साहिबु मसालिक वल ममालिक वल मग़ादिर वल मुहालिक कहते हैं।

- हाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलेमान बिन अहमद तिबरानी साहब रह० मुआजिम सलासा तलबे हदीस में तैंतीस साल घूमे और एक हज़ार मशाइख़ से इल्म हासिल किया।
- अबू हातिम राज़ी रह० ने ख़ुद बयान किया कि हदीस के इल्म को हासिल करने के लिए नौ हज़ार मील पैदल चले।
- इब्ने मक़री रह० ने एक किताब का नुस्ख़ा हासिल करने के लिए 840 मील का सफ़र पैदल तय किया।
- हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह अस्फ़ेहानी रह० ने हदीस की तलब के लिए 120 जगहों का सफ़र किया।
- इल्मे अदब के इमाम सैबविया रह० शुरू में हम्माद बिन सलमा रह० के शार्गिद थे। उस्ताद ने कहा ﴿ليس ابا الدرداء﴾

शार्गिद ने लिखा ﴿ليس ابو الدرداء﴾ उस्ताद ने ग़लती पर पकड़ की। सैबविया रह० ने इल्मे नहू पढ़ने के लिए इतनी मेहनत की कि आज हर तालिब इल्म उनका नाम लेकर नहवी बनता है।

- अल्लामा इब्ने जौज़ी रह० ने एक बार मिंबर पर खड़े होकर कहा कि मैंने अपनी उंगलियों से दो हज़ार जिल्दें लिखी हैं। उनकी वसीयत के मुताबिक़ क़लमों के तराशे से ग़ुस्ले आख़िरत का पानी गर्म किया गया।
- इब्राहीम हर्बी रह० पचास साल तक इमामे अदब साअलब रह० की हर महफ़िल नात व अदब में हाज़िर रहे।
- इमाम राज़ी रह० ने एक बार कहा :

  "अल्लाह की क़सम! मुझे खाने पीने के वक़्त में इल्मी मशाग़िल के छूट जाने पर अफ़सोस होता है क्योंकि वक़्त बहुत क़ीमती और अज़ीज़ है।"
- इमाम ग़ज़ाली रह० की तालीक़ात जो उन्होंने अबू नस्र इस्माईली रह० से लिखी थीं लुट गयीं। आपने डाकुओं के सरदार से वापस मांगी। वह हँस पड़ा कि लड़के तुमने ख़ाक पढ़ा कि एक काग़ज़ न रहा तो तुम कोरे हो गए। तालीक़ात तो मिल गयीं मगर इमाम ग़ज़ाली रह० ने मसाइल को ज़बानी याद करना शुरू कर दिया यहाँ तक कि तीन साल में हाफ़िज़ बन गए।
- क़रतबी रह० से नक़ल किया गया है कि इमाम शातबी रह० ने जब क़सीदा शातबिया लिखा तो उसे लेकर बैतुल्लाह

शरीफ़ के बारह हज़ार तवाफ़ किए जब कि हर तवाफ़ के साथ चक्कर थे और दो रक्अत वाजिब तवाफ़ पढ़ीं। जब दुआ के मुक़ामों पर पहुँचते तो कहते,

اللهم فاطر السموات والارض عالم الغيب والشهادة

رب هذا البيت العظيم انفع بها كل من قرأها.

# साइंसदानों की मेहनत के वाक़िआत

## न्युटन का वाक़िआ

दुनिया में जिस किसी ने शोहरत और नामवरी हासिल की उसने मेहनत की है। चाहे दीन में कोई ऊपर पहुँचा या उलूम दुनिया कोई ऊपर पहुँचा। मेहनत उनको करना पड़ी। न्युटन के हालात में लिखा है कि उसने एक मसौदा तहक़ीक़ी मज़मून लिखा और वह रखकर लैट्रिन में चला गया। पीछे चिराग़ जल रहा था तो उसका कुत्ता जिसका नाम उसने टोनी रखा हुआ था, अंदर आया और उसने छलांग लगाई तो चिराग़ काग़ज़ों के ऊपर गिरा और पूरे के पूरे काग़ज़ जल गए। जब वापस आया और उसने देखा कि पूरे का पूरा तहक़ीक़ी मज़मून जलकर राख बन गया तो उसने सिर्फ़ इतना कहा, 'टोनी तूने मेरा काम बहुत बढ़ा दिया।' उसके बाद उसने फिर नए सिरे से मज़मून लिखना शुरू कर दिया और कई महीने की मेहनत के बाद दोबारा उसे लिखा। वाक़ई धुन

और ध्यान पड़ी नेमत है जिसको नसीब हो जाए।

## आइन्सटाइन का वाक़िआ

दुनिया के मशहूर साइंसदान आइन्सटाइन के बारे में लिखा हुआ है कि बचपन में जब स्कूल में पढ़ने जाता तो उसको पैसों का हिसाब नहीं आता था। वह अक्सर अवक़ात कंडक्टर से लड़ता था कि तूने इतने पैसे लेने थे और इतने पैसे वापस करने थे। जब हिसाब किया जाता तो कंडक्टर ठीक होता था। जब दो चार बार ऐसा हुआ तो एक कंडक्टर ने कह दिया कि तू भी क्या ज़िंदगी गुज़ारेगा तुझे तो जोड़-घटा नहीं आती। वह बात उसके दिल में बैठ गई तो कहने लगा अच्छा मैं हिसाब पढ़ूँगा। अब उसने हिसाब पर मेहनत करना शुरू कर दी। मेहनत करते करते वह वक़्त भी आया कि उसे 'थ्योरी आफ़ रिलेटिविटी' का नज़रिया पेश करके दुनिया के साइंस में एक इंक़लाब पैदा कर दिया। सच है कि मेहनत का फल ज़रूर मिलता है।

# ज़ाती तज्रिबात और वाक़िआत

## बोर्ड में सेकेंड आने वाले लड़के का वाक़िआ

एक नौजवान ने मैट्रिक का इम्तिहान दिया और वह अच्छे नंबरों से कामयाब हुआ। उसके वालिद और वालिदा दोनों बूढ़े हो चुके थे। उसका वालिद बीमार भी था और कमज़ोर भी था और काम भी नहीं कर सकता था। बच्चे ने कहा कि कालेज में दाख़िला दिलवा दें। वालिद ने कहा कि हम तो खाने-पीने को

तरसते हैं, बेटा तू दुकान बना ताकि कुछ हमारे लिए खाने पीने का बंदोबस्त हो। बाप ने तीन हज़ार रुपए से उसके लिए अपने घर की बैठक में एक पर्चून की दुकान बनाई। वह बेचारा स्कूल में अव्वल आने वाला बच्चा पर्चून की दुकान चलाने लगा। साथ ही साथ उसको पढ़ने का शौक़ भी था। उसने एफ़०एस०सी० की किताबें ले लीं और चोरी छुपे पढ़नी शुरू कर दीं। वालिद को पता नहीं, वालिदा को पता नहीं। लड़का फ़ारिग़ वक़्त में दुकान पर किताब पढ़ता। जब कोई ग्राहक आता तो उसे सौदा दे देता। ख़ैर उसने एफ़०एस०सी० की फिजिक्स, कैमिस्ट्री और मैथ की सारी किताबें प्राइवेट ख़ुद पढ़ लीं। कहीं-कहीं अटकने लगा तो उसने एक प्रोफ़ेसर साहब से कहा कि मैं पढ़ना चाहता हूँ, मुझे प्रैक्टिकल भी करने हैं। आप मेरी मदद करें। प्रोफ़ेसर साहब ने कहा मैं प्रैक्टिकल करवाता हूँ, मुझे क्या ऐतिराज़ हो सकता है मुझे तो ख़ुशी होगी। अब देखो उस बच्चे ने कितनी अक़्लमंदी दिखाई कि जिस दिन प्रैक्टिकल होता अपने सौदा लाने का वही दिन तय करता और चार दिन पहले ही वालिद को कहता कि मुझे फ़लां दिन सौदा लाना है, वालिद कहता, बहुत अच्छा। उस दिन यह लड़का पैसे लेता और बाज़ार जाता और एक बहुत ही दीनदार और परहेज़गार आदमी को लिस्ट देता कि यह सौदा निकालकर रखो और मैं अभी आता हूँ। जितनी देर में दुकानदार सौदा निकालता यह लड़का उस वक़्त कालेज में जाकर प्रैक्टिकल कर लेता। प्रैक्टिकल करके वापस आता तो सौदा उठाकर घर आता। बाप को पता न चलता कि बेटा सिर्फ़ सौदा लेकर आया है या सौदे के साथ-साथ प्रैक्टिकल भी करके आया है। यहाँ तक कि

इम्तिहान शुरू हो गया। इम्तिहान भी उसने सौदे की आड़ में दे दिया। एफ०एस०सी० का प्राइवेट इम्तिहान दे दिया। आप यक़ीन करें कि यह लड़का प्राइवेट इम्तिहान देने के बाद लाहौर बोर्ड में सेकेंड आया। जब अख़बार में ख़बर आई तो मौहल्ले के लोग वालिद को मुबारकबाद देने लगे। बाप कहता है कि मेरा बेटा तो पढ़ता ही नहीं, वह तो दुकानदारी करता है। लोग कहते कि तेरा बेटा बोर्ड में सेकेंड आया है और वालिद साहब कहते हैं कि मेरा बेटा पढ़ता ही नहीं। यहाँ तक कि लोगों ने तसल्ली दिलाई कि मामला यूँ था। फिर कुछ लोगों ने मिल मिलाकर कुछ एक साहिब हैसियत लोगों को सूरते हाल बताई और उनको कहा कि अगर अपनी तरफ़ से कोई प्राइवेट स्कालरशिप दे दें तो यह लड़का भी पढ़ जाएगा और माँ-बाप को भी कुछ मिल जाएगा। लिहाज़ा उसके लिए दो तीन हज़ार रुपए का बंदोबस्त किया गया। इस स्कालरशिप में से कुछ तो उसके माँ-बाप को दिया कि आप यह ले लें और मज़े से बैठकर खाएं, लड़के को युनीवर्सिटी में दाख़िल करवाएं ताकि वहाँ इंजीनियरिंग कर सके। उसने इंजीनियरिंग युनीवर्सिटी लाहौर में दाख़िला लिया। सिविल इंजीनियरिंग में कोर्स किया। आज वह लड़का एक्सेन लगा हुआ है। गाड़ी उसको मिली हुई, कोठी उसको मिली हुई है और उसके माँ-बाप उस कोठी में रहते हैं। यह सच्चा वाक़िआ है। इससे क्या नतीजा निकला कि जब इंसान दिल में पक्का इरादा कर लेता है तो वह काम कर गुज़रता है। सच है कि ख़ुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद अपने आप करते हैं।

# लेडी डाक्टर का वाक़िआ

हमारे कालेज में इस्लामियात के एक प्रोफ़ेसर थे। उनकी बेटी ने मैट्रिक का इम्तिहान अच्छे नंबरों से पास कर लिया। बेटी के दिल में शौक़ था कि लेडी डाक्टर बनूं। वालिद ने कहा कालेज में लड़का-लड़की एक साथ पढ़ते हैं मैं नहीं पसंद करता कि मेरी बेटी भी वहीं पढ़े। छंग में उस वक़्त लड़कियों का साइंस कालेज नहीं था सिर्फ़ आर्टस का था। साइंस की क्लासे नहीं थीं। उस लड़की ने कहा अब्बू मैं पढ़ना चाहती हूँ। बाप ने कहा अगर प्राइवेट पढ़ सकती हो तो पढ़ लो। लिहाज़ा बाप ने मैडिकल की सारी किताबें बेटी को लाकर दे दीं और उसकी बेटी ने प्राइवेट इम्तिहान के लिए तैयारी शुरू कर दी। बीच में उसको कहीं-कहीं मुश्किलें पेश आयीं तो उसने कहा कि अब्बू मुझे फ़लां चीज़ नहीं आती किसी प्रोफ़ेसर से कहें कि वह मुझे समझा दे। अब्बू ने कहा कि मैं तो अच्छा नहीं समझता कि कोई प्रोफ़ेसर आपको पढ़ाए। उस लड़की ने कहा अब्बू आप मुझे समझा दें। आप अंदाज़ा कीजिए कि वह इस्लामियात के प्रोफ़ेसर अपनी बेटी से मेडिकल की मुश्किलें समझते और कालेज में जाकर कालेज के प्रोफ़ेसर से पूछते कि इनका जवाब क्या है? इस्लामियात के प्रोफ़सर समझते क्या होंगे? सवाल को क्या समझते होंगे, जवाब को क्या समझते होंगे? लेकिन जो थोड़ा बहुत इशारे वहाँ से लेकर आते वह आकर बेटी को देते। बेटी उसे पिकअप कर लेती। यहाँ तक कि बेटी ने तैयारी की। मैडिकल का प्राइवेट इम्तिहान दिया यहाँ तक कि उसके इतने नंबर आए कि उसने लाहौर में फ़ातिमा जिन्नाह

मैडिकाल कालेज में दाख़िला लिया जो कि लड़कियों का कालेज है। बाद में वह लड़की लेडी डाक्टर बन गई।

## नौबल ईनाम पाने वाले डा० अब्दुस्सलाम का वाक़िआ

मैं आपको और ऐसी बात सुना दूँ। मुझे यक़ीन है कि आपने पहले नहीं सुनी होगी। मुझे एक बार कालेज के प्रन्सिपल की तरफ़ से ख़त मिला कि फ़लां तारीख़ को हमने एक फ़ंक्शन करता है और आपको इसमें रोल आफ़ ऑनर पेश करना है और रोल आफ़ ऑनर को पेश करने के लिए हमने अपने मुल्क के एक नामवर साइंसदान अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद को बुलाया है (जो हालाँकि ग़ैर-मुस्लिम है लेकिन पाकिस्तानी है उसको कनाडा से बुलवाया गया)। मैं उस वक़्त युनिर्वसिटी से छुट्टी लेकर कालेज पहुँचा। बहुत बड़ा फ़ंक्शन था। प्रिन्सिपल ने कहा कि इस बच्चे ने मेरे कालेज का बहुत बड़ा रिकार्ड बनाया है। मैं इस के लिए फ़ंक्शन भी शान के मुनासिब करूंगा। लिहाज़ा उसने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद नौबल प्राइज़ पाने वाले को कालेज में बुलाया। वह भी इसी कालेज से पढ़े हैं जिससे मैंने पढ़ा है। ख़ैर अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद ने मुझे रोल आफ़ ऑनर पेश किया उसके बाद चाय की पार्टी में इकठ्ठे हुए, आपस में बातचीत हुई। हमारे एक प्रोफ़ेसर ने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद से पूछ लिया कि आप नौबल प्राईज़ ऑनर कैसे बने? डाक्टर साहब ने कहा कि मैं बहुत मेहनती हूँ। प्रोफ़ेसर ने कहा कि साइंस के स्टूडेंट तो सारे ही मेहनती होत हैं, सारे ही

पढ़ाकू होते हैं, सारे की किताबी कीड़े होते हैं। उसने कहा नहीं मैं ज़्यादा मेहनती हूँ। इस पर प्रोफ़ेसर ने कहा डाक्टर साहब वह कौन सी मेहनत है जो दूसरे लड़के नहीं करते, सब साइंस पढ़ने वाले लड़के बड़े ज़हीन होते हैं, बड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन नौबल प्राईज़ ऑनर तो नहीं बनते। डाक्टर साहब ने कहा नहीं मैं बड़ा मेहनती हूँ, फिर कहा मैं ज़हीन इतना नहीं हूँ मेहनती ज़्यादा हूँ।

प्रोफ़ेसर ने कहा नहीं नहीं आप ज़हीन ज़्यादा होंगे। उसने कहा कि मैं कह रहा हूँ मैं मेहनती ज़्यादा हूँ। उसने बड़ी अजीब मिसाल दी। डाक्टर अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद ने कहा कि मैंने कैमिस्ट्री की एक किताब पढ़ी, वह मुझे समझ नहीं आई। मैंने फिर पढ़ी, मुझे समझ नहीं आई। मैंने तीसरी दफ़ा पढ़ा मुझे समझ नहीं आई यहाँ तक कि मैंने उसको किताब को शुरू से लेकर आख़िर तक 63 बार पढ़ा। वह किताब मुझे तक़रीबन हिफ़्ज़ याद हो गई। उसकी बात सुनकर हम हैरान हो गए कि ऐसा भी कोई बंदा हो सकता है कि जिसे एक किताब समझ में न आई तो वह उस किताब को 63 बार पढ़ता है। वाक़ई जिसके अंदर इतनी मेहनत का शौक़ हो तो वह हक़दार है कि उसे दुनिया में नोबल प्राईज़ दिया जाए।

मोहतरम सामेइन! मैंने यह आयत पढ़ी थी,

﴿وان ليس للانسان الا ما سعى وان سعيه يرى.﴾

**इंसान के लिए वह कुछ है जो वह मेहनत करता है।**

सब तलबा अपनी ज़िंदगी बनाने के इब्तिदाई दौर में हैं। इस वक़्त जो मेहनत आप करेंगे समाज में वही दर्जा पाएंगे। अगर इस सुनहरी मौक़े को आप गंवा बैठते हैं तो मेरे दोस्तो! सारी उम्र

कर्लकी के धक्के खाएंगे। इसलिए कि इस मौक़े पर मेहनत के उनवान पर मैंने कुछ बातें हक़ीक़ी मिसालों के साथ आपके सामने अर्ज़ कर दीं ताकि आप के ज़हन में यह बात बैठ जाए कि आप अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी को बनाएंगे या अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी को बिगाड़ेंगे–

*अमल से ज़िंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी*
*यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में नूरी है न नारी है*

जो आप मेहनत करेंगे वही आपको बदला मिलेगा। अल्लाह तआला हम सबको एक जद्दो जहद वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ताकि हम अपने समाज के लिए, उम्मते मुस्लिमा के लिए, पूरी दुनिया के लिए कुछ काम कर जाएं।

## सोचने की बात

हमारी ज़ात से लोगों को कोई फ़ायदा पहुँच जाए ताकि यह हमारी आख़िरत की निजात का ज़रिया बन जाए। कितनी अजीब बात है कि कूड़ा करकट, गंदगी, पाख़ाना और फ़ुज़ला जब ख़ुश्क हो जाए तो देहाती लोग उसे खेत में डालते हैं। कहते हैं कि जिस खेत में यह डाल दिया जाए तो पैदावार का काम करता है। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि ऐ इंसान! सोच तो सही, हम जिसे निजासत और गंदगी और फ़ुज़ला कहते हैं उसे किसी खेत में डाल दिया जाए तो उसने खेती को फ़ायदा पहुँच दिया। हम अगर अपने साथी को फ़ायदा न पहुँचा सके तो फिर हम तो इससे भी गए गुज़रे हो गए। हमने ज़िंदगी गुज़ारनी है। अपनी ज़ात का फ़ायदा देखें, अपने दोस्त अहबाब, उम्मते मुस्लिमा और इंसानीयत

का फ़ायदा देखें और इंसानीयत को हम कुछ न कुछ देकर जाएं। लांग फ़ैलो ने एक अजीब बात कही :

**बड़े लोगों की ज़िंदगियाँ हमें यह बात याद दिलाती हैं**
**कि हम भी अपनी ज़िंदगी को रोशन बना सकते हैं**
**और दुनिया से जाते वक़्त हम भी अपने पीछे**
**वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशान छोड़ सकते हैं।**

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❁ ❁ ❁

# तक़्वे की बरकतें

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

يا ايها الناس انا خلقنكم من ذكر وانثى وجعلنكم شعوبا وقبائل لتعارفوا

ان اكرامكم عند الله اتقكم. ان الله عليم خبير. سبحان ربك رب

العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

## ज़मीन की ज़ीनत

आसमान की ज़ीनत सितारों से है, ज़मीन की ज़ीनत परहेज़गारों से है। ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बंदगी और ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह तआला की याद है।

## ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन

फ़रमाया गया, ﴿يا ايها الناس﴾ ऐ इंसानो! ﴿انا خلقنكم من ذكر وانثى﴾ हम ने तुम्हें एक नर व मादा से पैदा किया है यानी एक माँ और बाप से पैदा किया है ﴿وجعلنكم شعوبا وقبائل لتعارفوا﴾ और फिर तुम्हारे क़बीले और ख़ानदान इसलिए बनाए कि आपस में

पहचान हो सके। ﴿ان اکرمکم عند اللہ اتقکم﴾ बेशक तुम में से अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला है। लिहाज़ा न गोरे को काले पर फ़ज़ीलत न अरबी को अजमी पर फ़ज़ीलत न अमीर को ग़रीब पर कोई फ़ज़ीलत है।

﴿ان اکرمکم عند اللہ اتقکم.﴾

**बेशक तुम में से अल्लाह तआला के नज़दीक इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा मुत्तक़ी हो।**

## अल्लाह के क़ुर्ब का पैमाना

अल्लाह तआला का क़ुर्ब बंदों के साथ उनके तक़्वे के मुताबिक़ है। जो जितना परहेज़गार होगा वह उतना ही अल्लाह तआला के क़रीब होगा। इसको एक पैमाना बना दिया गया है। अल्लाह तआला के क़ुर्ब को मापना हो तो इंसान के तक़्वे से मापना चाहिए। इसी लिए फ़रमाया,

﴿ان اولیائہ الا المتقون.﴾

**उसके वली वही होते हैं जो मुत्तक़ी होते हैं।**

## औलिया को न कोई ग़म न ख़ौफ़ होगा

﴿الآ ان اولیاء اللہ لا خوف علیھم ولا ھم یحزنون.﴾

**जान लो कि जो अल्लाह तआला के वली होते हैं उन पर न कोई ख़ौफ़ होता है न कोई हुज़्न होता है।**

ख़ौफ़ कहते हैं बाहर का डर और हुज़्न कहते हैं अंदर का

ग़म। न कोई बाहर का डर न कोई अंदर का हुज़्न। यह शान किस की है? औलिया अल्लाह की। वली कौन होते हैं?

﴿الذين آمنوا وكانوا يتقون.﴾

**वे लोग जो ईमान लाए और तक़्वा इख़्तियार किया।**

﴿لهم البشرىٰ في الحيوة الدنيا وفي الاخرة.﴾

**उनके लिए बशारतें हैं दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी।**

﴿لا تبديل الكلمت الله.﴾

**अल्लाह के फ़ैसले बदलते नहीं हैं।**

﴿ذلك هو الفوز العظيم.﴾

**यह बहुत बड़ी कामायाबी है।**

इंसान को चाहिए कि तक़्वा और परहेज़गारी को इख़्तियार करके अल्लाह तआला के दोस्तों में शामिल हो जाए।

## वली कौन होता है

विलायत के दर्जात हैं। विलायत का एक हिस्सा हर कलिमा पढ़ने वाले को नसीब है। वली कौन होता है? अल्लाह का दोस्त होता है। अब आप लोगों में से पूछें कि आप लोगों में से जो अल्लाह का दुश्मन हो वह खड़ा हो जाए तो कोई भी नहीं खड़ा होगा। अल्लाह का शुक्र है हम सब अल्लाह के दोस्त हैं, अल्लाह का शुक्र है।

## आम विलायत और ख़ास विलायत

विलायत का एक अदना दर्जा इंसान को ईमान लाने पर नसीब हो जाता है। मगर यह आम विलायत है। ख़ास विलायत हासिल करने के लिए तक़्वा इख़्तियार करना पड़ता है। उसके बग़ैर अल्लाह के यहाँ अमल भी क़ुबूल नहीं होते,

﴿انما يتقبل الله من المتقين.﴾

**बेशक अल्लाह तआला मुत्तक़ियों के ही आमाल का क़ुबूल करता है।**

## क़ुरआन तक़्वे से सजा हुआ है

क़ुरआने हकीम में देखें तो हर चंद आयतों के बाद तक़्वे का ज़िक्र है। जैसे कोई आदमी थाल सजाता है तो मेवे ऊपर-ऊपर रखता है। इसी तरह अल्लाह ताअला ने तक़्वे के लफ़्ज़ से अपनी किताब को सजाया है। क़ुरआन पढ़ते चले जाएं तो मुत्तक़ियों का तज़किरा यूँ आएगा कि यह लफ़्ज़ जगमगाता नज़र आएगा बल्कि एक आयत के अंदर दो दफ़ा तक़्वा अपनाने का हुक्म दिया गया है। यह कितनी अजीब बात है कि मैं एक फ़िक़रे में एक बात को दो बार दोहराऊँ। ऐसा करने से इस बात की बड़ी अहमियत वाज़ेह होती है कि एक साँस में दो बार यह बात कह गया। अल्लाह तआला ने एक फ़िक़रे में दो दफ़ा तक़्वा अपनाने का हुक्म दिया। अल्लाह तआला का हुक्म देना कोई मामूली बात नहीं। ﴿يايها الناس اتقوا ربكم﴾ देखा ﴿اتقوا ربكم﴾ अम्र (हुक्म) का सेग़ा है। हुक्म दिया जा रहा है ﴿اتقوا ربكم﴾ अपने रब से डरो, तक़्वा अपनाओ।

يايها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة وخلق
منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء. واتقوا الله.

देखा शुरू में भी तक़्वा आयत के आख़िर में भी तक़्वा। एक दूसरी जगह फ़रमाया,

﴿يايها الذين آمنو اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغدواتقوا الله.﴾

यहाँ भी एक आयत में दो बार तक़्वे को अपनाने का हुक्म दिया गया है। इसकी अहमियत वाज़ेह हो जाती है।

## तक़्वे की कोई हद नहीं

शरिअत ने हर चीज़ की हद तय कर दी लेकिन जहाँ तक़्वे का ज़िक्र आया तो मैदान खुला छोड़ दिया। फ़रमाया,

﴿فااتقو الله ما استطعتم.﴾

**तुम तक़्वा इख़्तियार करो जितनी तुम्हारे अंदर ताक़त है।**

﴿يا ايها الذين امنوا تقوا الله حق تقاته.﴾

**ऐ ईमान वालो! तुम तक़्वा इख़्तियार करो जैसा कि तक़्वा इख़्तियार करने का हक़ है।**

अल्लाहु अकबर तक़्वे की कितनी अहमियत वाज़ेह होती है।

## तक़्वे के फ़ायदे

तक़्वा अजीब नेमत है और इसको अपनाने से नेमतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, बरकतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, गुनाह माफ़ होते हैं, बसीरत (समझ) अता होती है। क़ुरआने पाक में है ﴿ومن

﴿يتق الله﴾ और जो कोई तक़्वे इख़्तियार करता है ﴿يكفر عنه سيئاته ويعظم له اجرا.﴾ अल्लाह तआला उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है और उसके अज्र को बढ़ा देता है यानी उसके अज्र को बहुत ज़्यादा अता फ़रमाता है। ﴿يايها الذين امنوا ان تتقوا الله.﴾ ऐ ईमान वालों अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो ﴿يجعل لكم فرقانا﴾ वह तुम्हें क़ुव्वते फ़ारिक़ा अता फ़रमाएगा। फ़ुरक़ान क्या होता है? ऐसा नूर जो सही और ग़लत में फ़र्क़ कर देता है। ऐसी बसीरत अता कर दी जाती है, फ़ुरक़ान अता कर दिया जाता है।

﴿ان تتقوا الله يجعل لكم فرقانا.﴾

**अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो तुम्हें फ़ुरक़ान अता कर देगा।**

जब इंसान तक़्वा इख़्तियार करता है तो बरकतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, अल्लाहु अकबर कबीरा।

## बरकत क्या है

बरकत क्या चीज़ है? यह लफ़्ज़ अंग्रेज़ी की डिक्शनरी में तो नहीं मिलेगा। हाँ इसकी हक़ीक़त अल्लाह वालों की ज़िंदगी में नज़र आएगी। आज की दुनिया बरकत को माने या न माने हम मानते हैं, माशाअल्लाह।

## जिस्म की ग़िज़ा

﴿ولو اهل القرى﴾ अगर यह बस्तियों वाले ईमान लाते हैं और तक़्वे को अपनाते हैं,

﴿لفتحنا عليهم بركت من السماء والارض.﴾

**हम आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते।**

दूसरी जगह फ़रमाया कि अगर यह किताब पर ईमान लाते और अमल करते,

﴿لا كلو من فوقهم ومن تحت ارجلهم.﴾

**हम इनको वे नेमतें खिलाते जो ऊपर से उतरते हैं और वे नेमतें खिलाते जो पाँव के नीचे से निकलते हैं।**

मुफ़स्सिरीन इसकी अजीब तफ़्सीर बयान करते हैं। फ़रमाते हैं कि इंसान दो चीज़ों का नाम है। एक जिस्म और एक रूह। जिस्म मिट्टी से बना है ﴿مـــن طيـــن لازب﴾ जिस्म मिट्टी से बना है और उसकी जरूरतें भी मिट्टी से निकलती हैं। मसलन पानी ज़मीन से निकलता है, गेहूँ ज़मीन से निकलता है, लिबास की फ़सल ज़मीन से निकलती है, मकान ज़मीन से निकली हुई चीज़ों से बनता है, इंसान की दूसरी ज़रूरियात भी ज़मीन से निकलने वाली चीज़ें हैं। फल ज़मीन से निकलने वाली चीज़ें हैं। ये जितनी भी चीज़ें हैं सब ज़मीन से निलने वाली हैं, अल्लाहु अकबर। जी हाँ जिस्म मिट्टी से बना। इसलिए अल्लाह तआला ने इसकी ज़रूरियात को भी मिट्टी में रख दिया कि इधर से पूरी होती रहें।

## रूह की ग़िज़ा

इंसान की रूह आलमे अम्र से आई हुई चीज़ है,

﴿يسئلونك عن الروح. قل الروح من امر ربى.﴾

**आप कह दीजिए कि रूह मेरे रब का अम्र है।**

रूह आलमे अम्र से आई हुई चीज़ है और उसकी ज़रूरत भी ऊपर से आने वाले अनवार और बरकात हैं। नतीजा यह निकला कि रूह की ग़िज़ा ऊपर से आने वाले अनवार व बरकात हैं और जिस्म की ग़िज़ा नीचे ज़मीन से निकलने वाले समरात हैं। फ़रमाया ﴿لا کلو من فوقهم.﴾ तो हम उनको वह नेमतें खिलाते हैं जो उनकी रूहानी ग़िज़ा बनती हैं, ﴿ومن تحت ارجلهم﴾ और उनको वे नेमतें खिलाते हैं जो उनकी जिस्मानी ग़िज़ा बनती हैं। तक़्वा ऐसी नेमत है कि अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है। ﴿لقد کان لسبا فی مسکنهم آیة.﴾ क़ौमे सबा के मकानों में निशानियाँ हैं क्यों? ﴿جنتان فی یمین وشمال﴾ दाएं बाएं दोनों तरफ़ बाग़ात।

﴿کلوا من رزق ربکم واشکروا له.﴾

**खाओ अपने रब का दिया हुआ रिज़्क़ और उसका शुक्र अदा करो।**

﴿بلدة طیبة ورب غفور.﴾

**पाकीज़ा शहर है और उसका रब उनकी कोताहियों को माफ़ करने वाला है**

अल्लाह तआला तो कहते हैं कि खाओ और शुक्र अदा करो। जिसका खाइए उसी के गीत गाइए। तक़्वा अपनाएंगे तो अल्लाह तआला रोटी भी देगा और बोटी भी देगा, कारें भी देगा और बहारें भी देगा। सब नेमतें अल्लाह तआला इस तक़्वे के सबब अता कर देता है लेकिन जब इंसान नाशुक्री करता है तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को रोक लेता है।

﴿لئن شكرتم لا زيدنكم ولئن كفرتم ان عذابي لشديد.﴾

**अगर तुम मेरी नेमतों का शुक्र अदा करोगे तो मैं ज़रूर अपनी नेमतें ज़्यादा करूंगा और अगर कुफ़्राने नेमत (नाशुक्री) की तो बेशक मेरा अज़ाब शदीद है।**

एक क़ौम ने अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री की। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में ज़िक्र फ़रमाया ﴿وضرب الله مثلا قـــــرية﴾ और अल्लाह तआला मिसाल बयान करता है एक ऐसी बस्ती की ﴿كانت امنة مطمئنة.﴾ जिसमें अमन भी था, इत्मिनान भी था। दो लफ़्ज़ क्यों कहे? अमन कहते हैं बाहर के दुश्मन का डर कोई न हो, इत्मिनान कहते हैं कि अंदर का ग़म कोई न हो तो फ़रमाया कि अमन भी था, इत्मिनान भी था।

﴿ياتيها رزقها رغدا من كل مكان.﴾

**चारों तरफ़ से उन पर रिज़्क़ की बहुतात थी।**

फिर क्या हुआ ﴿فكفرت بانعم الله﴾ उन्होंने अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री की।

﴿فاذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون.﴾

**अल्लाह तआला ने उनको भूख, नगं और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया कि अमल ऐसे करते थे।**

अगर इंसान नाशुक्री करे तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को छीन लेते हैं और अगर इंसान तक़्वा अपनाए तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देते हैं।

﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا.﴾

**अल्लाह तआला उसके लिए सबील (रास्ता) पैदा कर देते हैं।**

﴿یرزقه من حیث لا یحتسب﴾

**ऐसी तरह से रिज़्क़ देते हैं जिसका उसको गुमान भी नहीं होता।**

हज़रत अक़्दस मौलाना थानवी रहमुतल्लाहि अलैहि ने बरकत का अजीब वाक़िआ लिखा है। एक नौजवान था। उसने अपने वालदैन की बड़ी ख़िदमत की। भाईयों से कहा कि जाएदाद का हिस्सा मैं आपके सुपुर्द कर देता हूँ। वालदैन की ख़िदमत आप मेरे सुपुर्द कर दें। सौदा कर लिया। वालदैन की ख़ूब ख़िदमत की। माँ-बाप फ़ौत हो गए। उसने ख़्वाब में देखा कि कोई उससे कहता है कि फ़लां पत्थर नीचे तुम्हें सौ दीनार मिलेंगे क्योंकि तुमने माँ-बाप की बहुत ख़िदमत की है। पूछा उसमें बरकत होगी? कहा बरकत तो नहीं होगी। नौजवान ने कहा मैं नहीं लूँगा। सुबह उठा, बीवी को बताया। बीवी ने कहा बेशक न लेना लेकिन जाकर देखो तो सही कि पड़े हुए भी हैं या नहीं पड़े हुए हैं। उसने कहा जब लेने नहीं तो मैं जाकर देखता भी नहीं। दूसरी रात फिर ख़्वाब आया कि दस दीनार फ़लां पत्थर के नीचे पड़े हैं अभी मौक़ा है ले लो तुम्हारी ख़िदमत के बदले मिल रहे हैं। पूछा बरकत होगी? कहा बरकत तो नहीं होगी। नौजवान कहने लगा मुझे नहीं चाहिएं। तीसरी रात फिर ख़्वाब आया कि फ़लां पत्थर के नीचे एक दीनार पड़ा है अब जाकर ले लो, अब मौक़ा है। पूछा बरकत होगी? कहा हाँ बरकत होगी। वह सुबह उठा। उस पत्थर के नीचे से जाकर दीनार उठा लाया। घर आते हुए दिल में ख़्याल आया क्यों न आज घर में पकाने के लिए अच्छी चीज़ ले जाऊँ। उसने

मछली ख़रीदी। जब घर आया और उसकी बीवी ने मछली को काटा तो उस मछली के पेट से एक ऐसा मोती निकला जिसको बेचा तो उनकी ज़िंदगी का पूरा ख़र्च निकल आया। यह बरकत होती है। अल्लाह तआला ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है कि इंसान को वहम व गुमान भी नहीं होता।

## अल्लाह वाले कहाँ से खाते हैं

अल्लाह वाले कहाँ से लेते हैं? कहाँ से खाते हैं? जहाँ से अंबिया अलैहिमुस्सलाम खाते हैं। अल्लाह वालों के हाथ अल्लाह की जेब में होते हैं। समझाने के लिए बता रहा हूँ। अल्लाह की जेब नहीं है मगर समझाने के लिए अर्ज़ कर रहा हूँ। अल्लाह वालों के हाथ अल्लाह तआला की जेब में होते हैं। अल्लाह तआला उन के लिए ख़ज़ाने खोल दिया करता है।

﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا ويرزقه من حيث لا يحتسب.﴾

**अल्लाह तआला ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ देता है जिस तरफ़ से गुमान भी नहीं होता।**

## बरकत क्या है

रिज़्क़ के अंदर इंसान की इज़्ज़त शामिल, खाना पीना शामिल, बीवी-बच्चे शामिल, माशाअल्लाह दुनिया का सुख सुकून शामिल है। और आज इन्हीं की वजह से हम परेशान फिरते हैं। हम क्यों दर दर के धक्के खाते फिरते हैं। इसलिए कि रिज़्क़ की परेशानी है। दो-दो नौकरियाँ करते हैं, घर के ख़र्चे पूरे नहीं होते, घर के

सब लोग नौकरियाँ करते हैं लेकिन घर के ख़र्चे पूरे नहीं होते। कहते हैं कि जी क्या करें बोतल डाक्टर की तरफ़ चलती ही रहती है। बरकत उठ गई है, बरकत नहीं रही।

## अजीब चैलेंज

आज लोग इंजीनियर डाक्टर क्यों बनते है? इसलिए कि अगर आलिम बनेंगे तो फिर कहाँ से खाएंगे। ज़रूरतें होती हैं इसलिए इंजीनियर डाक्टर बनते हैं। अच्छा मैं आप लोगों से सवाल पूछता हूँ क्या आपने किसी आलिम बा-अमल को या किसी हाफ़िज़ बा-अमल को भूख प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते हुए मरते देखा?

कोई मिसाल है? नहीं आलिम बा-अमल या हाफ़िज़ बा-अमल भूख प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते रगड़ते मर गया हो? कोई मिसाल ऐसी आप नहीं दे सकते। मैं मिंबर पर बैठा हूँ, मैं मिसाल दे सकता हूँ कि एक आदमी ने पीएचडी इंजीनियरिंग की हुई है लेकिन मौत इस हाल में आई कि भूख प्यास में ऐड़ियाँ रगड़ते-रगड़ते मर गया। तो फिर रिज़्क़ इल्मे दीन के रास्ते से मिला या इल्मे दुनिया के रास्ते से मिला?

## इमाम अबू यूसुफ़ रह० का वाक़िआ

इमाम अबू यूसुफ़ रह० पढ़ने के ज़माने में इमाम अबू हनीफ़ा रह० की ख़िदमत में आए। माँ ने भेजा था कि धोबी के पास जाओ और कपड़े धोना सीखो। रास्ते में कहीं इमाम अबू हनीफ़ा रह० की ख़िदमत में पहुँच गए। हज़रत ने कुछ ऐसा मामला किया कि हज़रत के शार्गिद बन गए यहाँ तक कि इल्म में बहुत बड़ा

मुक़ाम हासिल कर लिया। माँ ने कहा मैंने तुझे धोबी की तरफ़ भेजा था, तेरा बाप मर गया है तू कुछ काम करता हम खाते पकाते। उन्होंने आकर इमामे आज़म रह० को यही बात सुनाई। हज़रत ने फ़रमाया माँ को कहना कि मैं एक काम सीख रहा हूँ जिस पर मुझे बहुत ज़्यादा आमदनी की उम्मीद है। उन्होंने जाकर कह दिया। उनकी माँ को तसल्ली न हुई तो वह ख़ुद इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० के पास आयीं और कहा मैंने तो बेटे को धोबी के पास भेजा था कि कोई हुनर सीखने आपके पास किताबें पढ़ता है। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। उनकी माँ ने सोचा कि हज़रत यूँ ही मेरी तसल्ली के लिए बात कर रहे हैं। इमाम अबू यूसुफ़ रह० फ़रमाते हैं कि बात आई गई हो गई। माँ को तसल्ली हो गई। एक वक़्त आया कि इमाम अबू यूसुफ़ रह० चीफ़ जस्टिस बने। फ़रमाते हैं कि वक़्त का बादशाह हारून रशीद मेरे पास बैठा हुआ था। वह कहने लगा हज़रत मैंने एक चीज़ बनवाई है। मैं रोज़ आपके लिए भिजवा दिया करूंगा। मैंने चीज़ खाई तो बड़ी लज़ीज़ थी। मैंने पूछा कि यह क्या थी? कहने लगे हज़रत यह मेरे लिए भी कभी-कभी बनती है लेकिन आपको इल्मी मुक़ाम ऐसा मिला है कि आपके लिए रोज़ाना आया करेगी। कहने लगे मैंने पूछा बताओ कि है क्या? कहने लगे यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा है। फ़रमाते हैं कि इमामे आज़म रह० की बात मुझे याद आई कि उन्होंने मेरी माँ को कहा था कि मैं इसको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। देखा अल्लाह तआला यूँ रिज़्क़ देते हैं।

## हज़रत सालिम रह० का वाक़िआ

हज़रत सालिम रह० मुहद्दिस गुज़रे हैं। ग़ुलाम थे। तीन सौ दिरहम में बिके थे फिर इल्म हासिल करके ऐसे मुक़ाम पर पहुँचे कि बादशाह इजाज़त लेकर मिलने के लिए आया करता था। एक बार बादशाह मुलाक़ात के लिए आया। आपसे इजाज़त चाही। आपने इल्मी मशग़ूली की वजह से मना कर दिया। बादशाह को बग़ैर मुलाक़ात के जाना पड़ा। हज़रत सालिम रह० बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन इल्म ने ऐसे मुक़ाम पर पहुँचा दिया कि वक़्त का बादशाह भी उनके दरवाज़े पर दस्तक दे रहा होता था, सुब्हानअल्लाह। वह दुनिया में बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन यहाँ अल्लाह से सौदा किया था इसलिए क़ीमत बढ़ गई।

*जब तक बिके न थे कोई पूछता न था*
*तुमने ख़रीदकर हमें अनमोल कर दिया*

माशाअल्लाह अल्लाह तआला से सौदा किया। अल्लाह तआला ने अनमोल कर दिया।

*यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगा दो डर कैसा*
*गर जीत गए तो क्या कहना गर हार गए तो मात नहीं*

अगर जीत गए और इल्म का वह मुक़ाम हासिल हो गया तो क्या ही नसीब हैं अगर वह मुक़ाम हासिल न हुआ तो फिर भी ख़ुशनसीबी है, सुब्हानअल्लाह।

## रिज़्क़ किसके ज़िम्मे

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला तक़्वे के ज़रिए रिज़्क़ के दरवाज़ों

खोल देते हैं। रिज़्क़ कहाँ से मिलता है? अल्लाह तआला के ख़ज़ानों से ﴿ومن من شئی الا عندنا خزائنه﴾ और जो कोई चीज़ भी है मगर हमारे पास उसके ख़ज़ाने हैं ﴿وما ننزله الا بقدر معلوم﴾ और हम एक अंदाज़े के मुताबिक़ उसको उतारते रहते हैं।

﴿وما من دابة فی الارض الا علی الله رزقها﴾

**जो कोई जानदार ज़मीन में है उसका रिज़्क़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे है।**

﴿و کاین من دابة لا تحمل رزقها﴾

**कितने जानदार हैं अपना रिज़्क़ जमा करके नहीं रखते।**

﴿والله یرزقها وایاکم﴾

**अल्लाह तआला उनको भी रिज़्क़ देता है और तुम को भी देता है।**

एक आदमी बायज़ीद बुस्तामी रह० के पास आया और कहने लगा हज़रत मेरी औलाद ज़्यादा है, रिज़्क़ की बहुत तंगी है, बहुत परेशान हूँ। फ़रमाया कि घर वापस जाओ और जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे है उसे घर में रहने दो और जिसका रिज़्क़ तुम्हारे ज़िम्मे है उसे घर से निकाल दो।

## ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फैमली प्लानिंग)

सन् 1965 ई० में सुना करते थे कि ख़ानदानी मंसूबाबंदी पर अमल करो वरना सन् 1970 ई० में भूखे मर जाओगे। सन् 1970 ई० भी आ गया। फिर सुनते थे कि सन् 1980 ई० तक ख़ानदानी

मंसूबाबंदी न की तो इंसान इंसानों को खाया करेंगे। सन् 1980 ई० भी आ गया फिर कहा करते थे कि सन् 1990 ई० तक अगर ख़ानदानी मंसूबाबंदी न की तो फिर लोग अपने बच्चों को काटकर खाया करेंगे। सन् 1990 ई० भी आ गया। अल्लाह के बंदो! अल्लाह तआला जो नेमतें आज दे रहे हैं वह सन् 1960 ई० वाले इंसान को नसीब ही न थीं। देखा अल्लाह तआला रिज़्क़ बढ़ा भी देता है। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में थे तो एक आदमी का रिज़्क़ था और आज अरबों खरबों इंसान हैं अल्लाह तआला ने उतने इंसानों का रिज़्क़ अता फ़रमा दिया है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में क्या खानें निकलती थीं? नहीं निकलती थीं। जब इंसान थोड़े थे ज़मीन के ख़ज़ाने भी थोड़े निकलते थे। जब फैल गए तो अल्लाह तआला ने ख़ज़ानों के मुँह भी खोल दिए, सुब्हानल्लाह।

## तक़्वा और रिज़्क़ के दरवाज़े

रिज़्क़ किसके ज़िम्मे है? अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। हाँ मैं इसको मानता हूँ हमें अपनी ज़िंदगी में एक तर्तीब रखनी चाहिए। इसका यह मतलब नहीं कि ज़िंदगी में कोई तर्तीब ही न हो। तर्तीब होनी चाहिए। मेहनत तो हम करें मगर निगाहें अल्लाह तआला की ज़ात पर लगी हुई हों। जब यह हाल होगा तो कोई बंदा रिश्वत नहीं लेगा। जब उसकी नज़रें अल्लाह की ज़ात पर होंगी तो फिर मिलावट का माल कोई नहीं खाएगा। इसलिए कि फिर वह अल्लाह से मांगेगा। जब अल्लाह को भूलकर असबाब

पर निगाहें लग जाती हैं तो फिर ये सारी मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं। लिहाज़ा तक़्वे को अपनाओ तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़ों को खोल देंगे।

## तक़्वा हर जगह काम आता है

आप फ़रमाएंगे तक़्वा, तक़्वा कुछ आगे बात भी समझाओ, तक़्वा है क्या? यह वह नेमत है जो दुनिया में भी काम आती है, बर्ज़ख़ में भी काम आती है, क़ब्र में भी काम आती है, हश्र में भी काम आती है, जन्नत में भी काम आती है। हर जगह पर काम आती है। यह तक़्वा अजीब तिरयाक़ है। हर हर जगह काम आता है। सुनिए क़ुरआन,

﴿وقال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا.﴾

और कहा मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से अल्लाह तआला से मदद मांगो, अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करो। ﴿ان الارض لله﴾ बेशक ज़मीन अल्लाह की है ﴿يورثها من يشاء من عباده﴾ अपने बंदों में से जिसको चाहता है उसका वारिस बना देता है ﴿والعاقبة للمتقين﴾ और आक़बत तो मुत्तक़ियों के लिए है। देखा दुनिया भी संवरी और रिज़्क़ भी मिला आख़िरत में आक़बत भी संवरी। तो तक़्वा वह नेमत है जो दुनिया को भी संवारता है और आख़िरत को भी।

## पुलसिरात और तक़्वा

आख़िरत का दिन कैसा होगा कि दोस्त एक दूसरे के दुश्मन

बन जाएंगे सिवाए मुत्तक़ी लोगों के। यह तक़्वा वहाँ भी काम आएगा। दुनिया में भी इसका फ़ायदा और आख़िरत में भी, रोज़े महशूर में भी इसका फ़ायदा। दोस्त दोस्तों के दुश्मन बन जाएंगे सिवाए मुत्तक़ी लोगों के।

﴿الا خلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو الا المتقين.﴾

यह तक़्वे का ताल्लुक़ वहाँ भी काम आएगा। पुलसिरात से गुज़रना होगा फिर क्या होगा? ﴿وان منكم الا واردها﴾ और तुम में जो कोई भी है उसे उस पर से गुज़रना होगा ﴿كان على ربك حتما مقضيا﴾ यह तेरे रब के नज़दीक अटल और फ़ैसलाशुदा बात है। ﴿ثم ننجى الذين اتقوا﴾ फिर हम निजात देंगे जो मुत्तक़ी होंगे और जो ज़ालिम गुनाहगार होंगे उनको औंधे मुँह जहन्नम में गिराएंगे। तो पुलसिरात से कौन गुज़रेंगे? जो मुत्तक़ी होंगे। ऐसे लोगों को जन्नत भी पेश की जाएगी ﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ और जन्नत को सजाकर पेश किया जाएगा मुत्तक़ियों के लिए, माशाअल्लाह। जन्नत की तरफ़ किन को लेकर जाया जाएगा?

﴿وسيق الذين اتقوا ربهم الى الجنة زمرا.﴾

**मुत्तक़ी लोगों को जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा।**

## जन्नत किन के लिए है

जन्नत मुत्तक़ी लोगों के लिए है,

﴿والملئكة يدخلون عليهم من كل باب﴾

**हर दरवाज़े से मलाइका उन पर दाख़िल होंगे।**

﴿سلام عليكم﴾ सलामती हो, शाबाश हो, तुम जीते रहो ﴿سلام عليكم﴾ यह मतलब बनेगा इसका ﴿بما صبرتم﴾ तुम ने अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा किया, सुब्हानअल्लाह। जन्नत किन लोगों को दी जाएगी? एक जगह जन्नत का इतना लम्बा ज़िक्र किया गया कि पूरा एक रुकू जन्नत के फ़ज़ाइल और जन्नत के ज़िक्र का है। आख़िर पर नतीजा निकला,

﴿تلك الجنة التي نورث من عبادنا من كان تقيا.﴾

यह वह जन्नत है उसका हम वारिस अपने बंदों में से उनको बनाएंगे जो मुत्तक़ी होंगे, सुब्हानअल्लाह। जन्नत के जितने मंज़र हैं, जितनी बातें हैं सब मुत्तक़ी लोगों पर के लिए हैं।

ان للمتقين مفازا حدائق واعنابا وكواعب اترابا وكاسا
دهاقا. لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا. جزاء من ربك.

यह बदला है मुत्तक़ी लोगों के लिए।

ان للمتقين في ظلل وعيون وفواكه مما يشتهون. كلوواشربو
هنيئا بما كنتم تعملون. ان كذلك نجزى المحسنين.

देखा कैसा जन्नत का ज़िक्र है, सुब्हानअल्लाह।

﴿ان المتقين في جنت ونهر في مقعد صدق عند عليك مقتدر.﴾

कितनी आयतें पढ़ूँ मुत्तक़ी लोगों के लिए जन्नत की नेमतों के बारे में?

﴿مثل الجنة التي وعد المتقون فيها انهار من ماء غير اسن.﴾

चार नहरें बताई गयीं जो मुत्तक़ी लोगों की जन्नत में होंगी, सुब्हानअल्लाह।

## आख़िरत की मंज़िलें और तक़्वा

मेरे दोस्तो! आख़िरत की मंज़िलें भी तक़्वे के सबब तय होंगी और दुनिया की मंज़िले भी तक़्वे के सबब तय होंगी। अगर दुनिया में इज़्ज़त चाहते हो तो तक़्वा अपनाओ। देखिए अल्लाह तआला दुनिया में भी इज़्ज़त देते हैं। दुनिया में भी इज़्ज़त तक़्वे के ज़रिए से मिलती है। आख़िरत की बातें तो मैंने बहुत सुना दीं।

## दुनिया की इज़्ज़त और तक़्वा

आप कहेंगे कोई यहाँ की बात भी करो। चलो मैं दुनिया की बात करता हूँ। दुनिया में भी इज़्ज़त तक़्वे के ज़रिए से मिलती है।

## हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

सूरहः यूसुफ़ जिसको क़ुरआन ने अहसनुल क़सस कहा है ﴿نحن نقص احسن القصص﴾ ख़ासतौर पर बड़ा सबक़ है। इस सूरहः में इसलिए इसको इतना अहम बताया गया है। इसमें अल्लाह तआला दो जमाअतों का ज़िक्र करते हैं। एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की और एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की। जी हाँ कई बंदे अकेले होते हैं लेकिन अपनी ज़ात में इदारे होते हैं, एक होते हैं लेकिन जमात से ज़्यादा भारी होते हैं। दलील क़ुरआन से पेश करता हूँ,

﴿ان ابراهيم كان امة﴾

**बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम उम्मत थे।**

देखा! जी हाँ ऐसा भी होता है। तो एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की और दूसरी जमाअत उनके भाईयों की। भाईयों पर इम्तिहान आया वह कहने लगे हम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर देते हैं ﴿اقتلوا یوسف اوطرحوه ارضا.﴾ हम यह गुनाह कर गुज़रते हैं और इसके बाद हम तौबा करके नेक बन जाएं। चुनाँचे गुनाह कर गुज़रे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भी इम्तिहान आया ﴿وراودته التی هو فی بیتها عن نفسه﴾ यह अल्लाह तआला की रहमत की ऐसे इम्तिहान से भी बच गए। यहाँ तक कि गवाहियाँ दे दीं। औरत को कहना पड़ा मालिक को ﴿یوسف ایها الصدیق﴾ ऐ सच्चे! यूसुफ़! सुब्हानअल्लाह! अल्लाहु अकबर। फिर क्या हुआ? अल्लाह तआला ने उनको फिर जेल से निकालकर तख़्त पर बिठा दिया। फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा, मुझे वज़ीर ख़ज़ाना बना दो। नबी थे अल्लाह तआला ने उन्हें सलाहियत भी अता फ़रमाई थी। वह हुकूमत की बागडोर संभाल सकते थे। हुकूमत चलाकर दिखाई। सूखा पड़ जाता है। भाईयों की जमाअत सारी की सारी सूखे का शिकार हो गई। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उस क़हत में तख़्त पर बैठे हुए हैं। अब अल्लाह तआला निचोड़ निकालते हैं। क़ुरआन पाक में मंज़र बयान करते हैं और अजीब है वह मंज़र। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई आ रहे हैं, ग़ल्ला मांगने के लिए, पैसे पूरे नहीं हैं, ग़ल्ला पूरा मांगते हैं। कहते हैं कि पैसे तो पूरे नहीं हैं अब कोई सदक़ा ख़ैरात कर दें। यह भी नबी के बेटे वे भी नबी के बेटे, यह इम्तिहान में कामयाब वे इम्तिहान में नाकाम। यह तख़्त पर वे फर्श पर। क़ुरआन पाक नक़्शा बयान करता है। सुब्हानअल्लाह, क़ुर्बान जाएं क्या किताब है। फ़रमाया ﴿قالو﴾ कहने

लगे, ﴿یاایها العزیز﴾ ऐ अज़ीज़ मिस्र!

مسنا واهلنا الضرو جئنا ببضاعة مزجت فاوف لنا

الكيل وتصدق علينا ان الله يجزى المتصدقين.

**हमें और घरवालों को तंगदस्ती ने बेहाल कर दिया और हम पैसे भी इतने लाएं हैं जो पूरे नहीं। हमें वज़न पूरा दे दो और हमारे ऊपर सदक़ा ख़ैरात कर दीजिए। बेशक अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।**

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह देखा कि यह हालत हो गई है तो पूछा ﴿ما فعلت بيوسف﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या किया था? कहने लगे, ﴿ائنك لا انت يوسف﴾ क्या आप यूसुफ़ हैं? ﴿قال انا يوسف وهذا اخى﴾ कहा हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई बिनयामीन है। तहक़ीक़ हम पर अल्लाह ने एहसान किया ﴿انه من يتق ويصبر﴾ जो मुत्तक़ी होता है और अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करता है ﴿ان الله لا يضع اجر المحسنين﴾ बेशक अल्लाह तआला नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करता। लिहाज़ा हर दौर में और हर ज़माने में जो यूसुफ़ सिफ़्त बनेगा अल्लाह तआला उसको फ़र्श से उठाकर अर्श पर बिठा देगा। देखना दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी।

## तक़्वा और अल्लाह का क़ुर्ब

पहले उलमा तक़्वे की वजह से अल्लाह का क़ुर्ब पा गए। आज तक़्वा न होने की वजह से हम अपनी इज़्ज़त गंवा बैठे। क्या बात है यही दर्से निज़ामी (मदरसे का कोर्स) हज़रत मौलाना

क़ासिम नानौतवी रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना महमूदुल हसन रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने पढ़ा। फिर आज का हर तालिबे इल्म हज़रत थानवी क्यों नहीं बन जाता, हर बच्चा हज़रत नानौतवी क्यों नहीं बन जाता। यह तक़्वे का फ़र्क़ है। उन्होंने भी यही किताबें पढ़ी थीं लेकिन उन्हें इन किताबों से तक़्वे की वजह से हीरे मोती मिले थे। हम भी वही किताबे पढ़ते हैं मगर पढ़ लेते हैं। सोचते हैं कि अमल बाद में इकठ्ठा करेंगे। आज हम बेहतियाती की ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह उलमा जो हलाल माल से अपना पेट नहीं भरते थे आज उनकी औलादें हराम माल से अपने पेटों को भर रही हैं। वे लोग जो सारी रात जागकर मुसल्ले पर गुज़ार देते थे आज उनकी औलादें नरम बिस्तरों पर रात गुज़ारने की आदी बन चुकी हैं।

## इल्म बड़ी नाज़ुक चीज़ है

यह इल्म बड़ी नाज़ुक चीज़ है। अफ़सोस है उस पर जिसकी ज़बान तो आलिम हो लेकिन दिल जाहिल हो। लुक़मान हकीम फ़रमाते थे कि मैंने लोहे और पत्थर को उठाया लेकिन दीन से ज़्यादा वज़नी चीज़ को नहीं देखा। मैंने सुहागरात की लज़्ज़त को पाया मगर अल्लाह के ज़िक्र से बेहतर किसी चीज़ को लज़ीज़ नहीं पाया। आज हमारे लिबास सौफ़ से भी ज़्यादा नरम होते हैं, हमारी ज़बाने शहद से भी ज़्यादा मीठी होती हैं मगर हमारे दिल भेड़िए

के दिल से भी ज़्यादा सख़्त होते हैं।

## दिल और गंदख़ाना

हम दिलों पर मेहनत नहीं करते। यह तक़्वा कहाँ होता है?

﴿التقوى ههنا اشار الى الصدر﴾

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सीने की तरफ़ इशारा करके कहा कि तक़्वा तो यहाँ होता है।

लिहाज़ा इस दिल को बदलना पड़ेगा। फिर इसके अंदर तक़्वा पैदा होगा। आज हमने दिल को सनमख़ाना बना लिया है, बुतख़ाना बना लिया है बल्कि सच कहो तो दिल को गंदख़ाना बना लिया है।

﴿ما هذه التماثيل التى انتم لها عاكفون.﴾

दिल में मूर्तियाँ रखी हुई हैं। किसी ने दिल में लड़की की मूर्ती रख ली, किसी ने माल पैसे की मूर्ती रख ली, किसी ने ओहदे की मूर्ती रख ली। जिस घर में तस्वीर हो उस घर में रहमत का फ़रिश्ता नहीं आता तो जिस दिल में ग़ैर की तस्वीर हो उस दिल में अल्लाह तआला की तजल्लियात कैसे आ सकती हैं? इस दिल को संवारना पड़ेगा, इसे बनाना पड़ेगा, इस दिल पर मेहनत करनी पड़ेगी। तब तक़्वा दिल में आए और आप इस नीयत पढ़ें कि अल्लाह तआला हम पढ़ते जाएंगे और अमल करते जाएंगे। अपनी ज़ात को आगे रखें ﴿اوصى نفسى اولا واياك بعده﴾ अपने आपको पहले रखें। यही तो वजह है कि तक़्वा ज़िंदगियों में नहीं है। बातें करते हैं लोगों पर असर नहीं होता। शिकायत करते हैं कि लोग बात नहीं सुनते। मेरे दोस्तो! इस ज़बान से निकली हुई बात जब अपने

कान नहीं सुनते जो इतना क़रीब हैं तो फिर वे कान कहाँ सुनेंगे जो इतना दूर बैठे हुए हैं। होना तो यह चाहिए कि हम बोलें, हमारे अपने कान भी सुनें, हमारा अपना दिमाग़ भी सोचे, हमारा अपना दिल भी उस पर अमल करे कि हम क्या बोल रहे हैं? हम लोगों के लिए बोलते हैं। हम अपनी भी नीयत भी करें कि हम यह क़ुरआन व हदीस इसलिए पढ़ रहे हैं कि हम पढ़ेंगे और अमल करेंगे।

## हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० का अजीब वाक़िआ

मैंने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के हालाते ज़िंदगी को पढ़ा है कि मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के ज़रिए कुछ हिंदू मुसलमान हुए तो किसी ने हिंदुओं से पूछा कि तुम मुसलमान क्यों हुए? तो उन्होंने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० की तरफ़ इशारा करके कहा कि हमें यह चेहरा किसी झूठे आदमी का नज़र नहीं आता। यह चेहरा किसी झूठे आदमी का नहीं हो सकता, सुब्हानअल्लाह। तक़्वा उनके चेहरों पर यूँ चमकता था। उनकी तन्हाइयों की इबादतें उनके चेहरों पर नूर बनाकर सजा देती थी।

## तक़्वा क्या है

अब आख़िरी बात कि यह तक़्वा है क्या चीज़? तक़्वे के बारे में मशहूर बात है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा हज़रत

उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से कि तक़्वा क्या होता है? फ़रमाया कभी कांटेदार रास्ते से गुज़रे हो? जी हज़रत गुज़रा हूँ। कैसे गुज़रते हैं? अपने कपड़ों को समेटकर बच बचाकर गुज़रता हूँ कि मेरा दामन किसी कांटे में उलझ न जाए। फ़रमाया यह तक़्वा है कि ऐ इंसान तू अपने दामन को यूँ बचा के ज़िंदगी गुज़ार कि तेरा दामन किसी गुनाह में सन न हो जाए। यह तक़्वा है। ﴿وثيابك فطهر﴾ अपने कपड़ों को पाक रख, माशाअल्लाह।

﴿ولباس التقوى ذلك خير.﴾

**और तक़्वे का लिबास वह सबसे बेहतर है।**

﴿وتزودوا فان خير الزاد التقوى﴾

**और अपने लिए ज़ादे राह (सफ़र का सामान) भी जमा कर लो और बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है।**

सुब्हानअल्लाह! इसलिए जहाँ मियाँ-बीवी का ज़िक्र आया वहाँ तक़्वा, तक़्वा, तक़्वा। सूरहः निसा पढ़कर देख लें। हर कुछ आयतों के बाद तक़्वा, तक़्वा, तक़्वा। क्योंकि जब तक़्वा न होगा तो इज़्दिवाजी ज़िंदगी सही नहीं गुज़र सकती। इसीलिए फ़रमाया,

﴿واتقوا الله واعلموا انكم ملقوه.﴾

**और अल्लाह से डरना और जान लेना कि तुमने अल्लाह तआला से मुलाक़ात करनी है।**

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे अंदर तक़्वा पैदा फ़रमाए (आमीन)। हमारे हज़रत पीर ग़ुलाम हबीब रह० फ़रमाया करते थे कि हर उस चीज़ को छोड़ देना जिसको इख़्तियार करने से अल्लाह के साथ

तअल्लुक़ में फ़र्क़ आए। इसे तक़्वा कहते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि सूफ़ी बनकर बाज़ार की बनी हुई चीज़ न खाई यही काफ़ी है। मियाँ यह तक़्वे का छोटा सा हिस्सा है। तक़्वा किसी एक चीज़ का नाम नहीं है। यह तो सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ून तक लागू होता है। इसका तअल्लुक पूरी ज़िंदगी के साथ है। क़ुरआन पाक से पूछें, क़ुरआन पाक समझाता है तक़्वा क्या है? आइए क़ुरआन से पूछें कि हमें समझाए कि तक़्वा क्या है? क़ुरआन समझाता है :

ليس البرا ان تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ولكن البر من آمن بالله واليوم الاخر والملئكة والكتاب والنبين وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمسكين وابن السبيل والسائلين وفى الرقاب. واقام الصلوة وآتى الزكوة والموفون بعهدهم اذا عاهدوا والصبرين فى الباساء والضراء وحين الباس. اولئك الذين صدقوا واولئك هم المتقون.

इन सारी बातों पर अमल करने वाले ﴿اولئك الذين صدقوا﴾ ये हैं सच्चे लोग ﴿واولئك هم المتقون.﴾ और ये मुत्तक़ी लोग। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें ऐसा बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❋ ❋ ❋

# हिफ़ाज़त-ए-ज़बान

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد
فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم
بسم الله الرحمٰن الرحيم
ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد. سبحان ربك رب العزة
عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

*हज़ार ख़ौफ़ हो लेकिन ज़बां हो दिल की रफ़ीक़*
*यही रहा है अज़ल से क़लंदरों का तरीक़*

## ज़बान की अहमियत

इंसान बहुत से आज़ा (अंगों) का मजमूआ है। ये आज़ा संवर जाएं तो इंसान संवर जाता है। इंसान के जिस्म में एक छोटा से उज़्ज़ू ज़बान है। आज के दौर में जिसका इस्तेमाल बहुत बुरे तरीक़े से किया जाता है। अरबी का मक़ूला है, ﴿اللسان جسمه صغير و جرمه كبير﴾ इसकी जसामत तो बहुत छोटी है मगर होने वाले गुनाह बहुत मोटे हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿يا ايها الذين امنوا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿لما تقولون ما لا تفعلون﴾ तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो।

अल्लाह के नज़दीक यह बहुत गुस्सा दिलाने वाली सूरते हाल है कि तुम वह बात कहो जो तुम करते नहीं हो। कहना कुछ और करना कुछ। यह काम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बहुत ज़्यादा ना पसंदीदा है। मोमिन की ज़बान से निकले हुए बोलों की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ बड़ी क़दर व क़ीमत है। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया,

﴿ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد.﴾

**इंसान कोई बात नहीं कहता मगर उसके पास निगहबान तैयार होता है।**

## ज़बान से कलिमा पढ़ना

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ इसकी इतनी अहमियत है कि एक काफ़िर आदमी पूरी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़ार बैठा, जिस्म के बाल सफ़ेद हो गए अगर वह दिल से कलिमा पढ़ लेता है तो उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं।

रिवायत में आता है कि जब कोई बंदा दिल से कलिमा पढ़ता है तो एक फ़रिश्ता इस अमल को लेकर आसमानों की तरफ़ जाता है। अभी रास्ते में होता है कि ऊपर से नीचे आने वाले फ़रिश्ते से उसकी मुलाक़ात हो जाती है। अब ऊपर से नीचे आने वाला फ़रिश्ता पूछता है कि कहाँ जा रहे हो? नीचे से जाने वाला फ़रिश्ता कहता है कि एक आदमी ने कलिमा पढ़ा है, मैं इस अमल को अल्लाह की हुज़ूर में पेश करने जा रहा हूँ। फ़िर यह ऊपर से आने वाले फ़रिश्ते से पूछता है कि आप कहाँ जा रहे हैं?

वह कहता है कि जिस आदमी ने कलिमा पढ़ा है मैं उसके लिए मग़फ़िरत का पैग़ाम लेकर जा रहा हूँ। अब सोचिए ज़बान से चंद बोल निकले, उसकी ज़िंदगी के सब गुनाहों को माफ़ कर दिया। दुनिया की अदालत का मामला देखा। किसी आदमी पर नाजाएज़ मुक़द्दमा हो जाए, अदालत में पता भी चल जाए कि यह मुक़द्दमा झूठा हैं तो उस आदमी को इज़्ज़त के साथ बरी कर दिया जाता है मगर अपने रिकार्ड में उस मुक़द्दमे को दर्ज ज़रूर कर लिया जाता है। दुनिया की अदालत इज़्ज़त से बरी भी कर दे मगर अपने पास मुक़द्दमा दर्ज रखती है मगर अल्लाह तआला का मामला अजीब देखा। जिस बंदे ने वाक़ई गुनाह किए थे, वह गुनाह जो पहाड़ों से भी ज़्यादा वज़नी थे अगर वह आदमी सच्ची तौबा कर लेता है तो यही नहीं कि उन गुनाहों को माफ़ कर दिया जाता है बल्कि अल्लाह तआला उन गुनाहों का रिकार्ड भी आमालनामे से ख़त्म करवा देते हैं। हदीस पाक में आता है कि जिन फ़रिश्तों ने उस आदमी के गुनाहों को लिखा था अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों की याद्दाश्त से भी गुनाहों को ख़त्म फ़रमा देते हैं ताकि क़यामत के दिन गवाही न दे सकें। सुब्हानअल्लाह! ज़बान से निकले हुए कुछ बोलों ने क्या कुछ बदलवा दिया।

## तन्ज़ के नुक़सान

आज तो कुछ लोग एक दूसरे को ख़ुश करने के लिए झूठ बोलते हैं, किसी पर तन्ज करते हैं, किसी का दिल जलाते हैं। याद रखें कि तलवार का वार जिस्म पर होता है मगर ज़बान का वार हमेशा दिल पर हुआ करता है। इसलिए फ़रमाया :

﴿یاایها الذین آمنوا لا یسخر قوم من قوم عسی ان یکونو خیرا منهم.﴾

**ऐ ईमान वालो! तुम में से एक जमाअत दूसरी जमाअत से मज़ाक़ न करे।**

तन्ज़ व मज़ाक़ को इसीलिए मना किया गया है कि ज़बान से उल्टी सीधी बातें निकलती हैं। ज़बान बड़े आराम से अल्फ़ाज़ अदा कर देती है लेकिन इन बोलों को अल्लाह तआला के सामने सच साबित करना इंसान के लिए मुश्किल हो जाएगा।

## कुफ़्र के कलिमात

उलमा-ए-किराम ने किताबों में ऐसे कलिमात नक़ल किए हैं जो कुफ़्र के कलिमात कहे जाते हैं। हैरत की बात तो यह है कि उनमें से कई कलिमात आज लोगों की ज़बानी सुने जाते हैं। एक दो मिसालें देता हूँ क्योंकि किसी कुफ़्र की बात को नक़ल करना कुफ़्र नहीं है, किसी ने पूछा, अरे मियाँ कहाँ रहते हो? जवाब में कहा कि जी मैं तो फ़लाँ जगह रहता हूँ। पहले ने सुनकर कहा अच्छा! इतनी दूर ख़ुदा के पिछवाड़े। यह कुफ़्रिया कलिमा हम तो हँसी मज़ाक़ में कह गए ख़ुदा के पिछवाड़े। मगर कुफ़्र का कलिमा बोला, दिल से ईमान निकल गया और बीवी को तलाक़ हो गई। दूसरी मिसाल किसी ने कहा फ़लाँ काम तो शरिअत के मुताबिक़ है। दूसरे ने कह दिया परे रख अपनी शरिअत को। यह कलिमाते कुफ़्र में से है।

अब बताएं इस क़िस्म के कितने फ़िक़्रे आप आए दिन सुनते रहते हैं। एक दफ़ा एक फ़ैक्ट्री मैनेजर के पास बैठा था। उसने

किसी आदमी को बुलाया। अच्छा भला समझदार दाना-बीन आदमी बल्कि छोटी-छोटी दाढ़ी भी रखी हुई थी। मैनेजर ने कहा सुनाओ भाई क्या हाल हैं? कहने लगा कि साहब पहले तो (अल्लाह मियाँ) पाँच मिनट में दुआ सुनता था, अब पता नहीं कहाँ चला गया, सुनता ही नहीं। मैंने भी नमाज़ पढ़नी छोड़ दी हैं। अल्लाह तआला की जलालत की शान को सामने रखें और उस बंदे के बात के अंदाज़ को देखें।

﴿استغفر الله ربی من کل ذنب واتوب الیه.﴾

यक़ीन करें, मैंने यह बात सुनी, मुझे अपने पाँव के नीचे ज़मीन सरकती नज़र आई। वह आदमी बड़े मज़े से कह रहा है और हँस रहा है जैसे सिर्फ़ हँसाने के लिए मामूली सी बात की हो। इस क़िस्म की बातें कलिमाते कुफ़्र में से हैं।

## कलाम की अहमियत

ज़बान से निकले हुए बोल की अहमियत इतनी है कि एक औरत जो ग़ैर-महरम थी, जिसकी तरफ़ नज़र उठाने की इजाज़त नहीं थी। उस औरत को शरई गवाहों की मौजूदगी में कह दिया कि मैंने अपने निकाह में क़ुबूल कर लिया तो वह ग़ैर-महरम औरत अब इस आदमी के लिए जीवन साथी बन गई। जिसकी तरफ़ आँख उठाकर देखने की इजाज़त नहीं थी दो बोल ज़बान से बोले और अब वही औरत उसके लिए ज़िंदगी की साथी बन गई। जब कि वही औरत जो ज़िंदगी की साथी थी उसको तीन बार तलाक़ का बोल कह दिया तो वही औरत अजनबी बन गई। अब

सोचें कि निकाह करते वक़्त या तलाक़ देते वक़्त कोई पत्थर तो सर पर नहीं उठाना पड़ता या कोई आग में से तो नहीं गुज़रना पड़ता या कोई पहाड़ के ऊपर से छलांग तो नहीं लगानी पड़ती। चंद बोल बोले अजनबी औरत बीवी बन गई और तलाक़ के चंद बोल बोले तो ज़िंदगी की साथी हमेशा के लिए जुदा हो गई। इंसान की ज़बान से निकले हुए बोलों की अल्लाह के यहाँ बहुत क़दर व क़ीमत है।

एक नौजवान अपनी ज़बान से पहले बुरा-भला बोल रहा था। किसी अल्लाह वाले ने सुना। फ़रमाने लगे बेटे! ज़रा सोचकर बात कर और देख कि तू अल्लाह के नाम कैसा ख़त भेज रहा है।

हमारी ज़बान से निकला हुआ एक-एक बोल हमारे आमाल नामे में लिखा जाता है और यह आमालनामा हर रोज़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर पेश किया जाता है। अल्लाह वाले जब बात करते हैं तो इस एहसास के साथ करते हैं कि हमारा आमालनामा अल्लाह के हुज़ूर पेश किया जाएगा। कुछ बुज़ुर्गों का यह मामूल था जो बाते कहते थे वे कागज़ पर लिख लेते थे और रात को बैठकर अपना हिसाब करते थे कि मैंने जो कुछ कहा ठीक कहा या नहीं। अगर कोई बात ज़बान से ग़लत निकल गई होती तो उसी रात अल्लाह के हुज़ूर तौबा कर लिया करते थे।

## अल्लाह से डरने का अजीब वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज के बाद वापस आ रहा था कि एक सवारी को अपनी तरफ़ आते हुए

देखा। जब सवारी क़रीब आई तो मुझे पता चला कि इस पर कोई औरत सवार है। मैंने सलाम किया। उसने जवाब में कहा ﴿سلام قول من رب رحيم﴾ उसने आयत पढ़ी तो मैं समझ गया कि उसने मेरे सलाम का जवाब दिया है। मैंने पूछा आप कहाँ से आ रही हैं? कहने लगी ﴿واتموا الحج والعمرة لله﴾ (तुम हज व उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो)। मैं समझ गया कि यह हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के बाद आ रही है। मैंने पूछा यहाँ कहाँ? कहने लगी ﴿من يضلل الله فلا هادى له﴾ (जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे हिदायत देने वाला कोई नहीं होता)। मैं समझ गया कि यह रास्ता भूल गई है। मेरे अंदाज़े में वह बूढ़ी औरत थी। मैंने पूछा अम्मा किधर जाना चाहती हो? कहने लगी ﴿ادخلوا المصر ان شاء الله آمنين﴾ मैं समझ गया शहर जाना चाहती है। मैंने उससे कहा कि मुझे भी शहर में जाना है लिहाज़ा मैं आपको रास्ते की रहनुमाई कर देता हूँ। कहने लगी ﴿واحسنوا ان الله يحب المحسنين.﴾ (तुम नेकी करो अल्लाह तआला नेकोकारों से मुहब्बत करते हैं)। मैं सवारी की नकेल पकड़कर चल पड़ा। कुछ दूर चलने के बाद मैंने अरबी के कुछ अश'आर पढ़ने शुरू कर दिए। वह कहने लगी ﴿فاقرء وا ما تيسر من القرآن﴾ (पढ़ो जो कुछ तुम्हारे लिए क़ुरआन में से आसान किया गया)। मैं ख़ामोश तो हो गया मगर सोचता रहा कि यह औरत कौन है? मैंने उसकी कुछ घरेलू तफ़्सील मालूम करना चाही तो उसने कहा ﴿لا تسئلوا عن اشياء ان تبد لكم تسوء.﴾ मैं समझ गया कि घरेलू मामलात पर बात करना नहीं चाहती। मैं चलता रहा। शहर के क़रीब आकर मैंने पूछा, शहर में आपको किससे मिलना है? कहने लगी, ﴿المال والبنون زينة الحيوة الدنيا﴾ मैं समझ गया कि

अल्लाह तआला ने इसको माल और बेटे भी अता किए। लिहाज़ा मैं शहर में दाख़िल हुआ। मुझे क़ाफ़िले मिले जो हज करके वापस आ रहे थे और उन्होंने पड़ाव डाला हुआ था। मैंने पूछा आपके बेटों के नाम क्या हैं? कहने लगी ﴿ابراهيم واسماعيل واسحاق.﴾ मैं समझ गया कि उसके बेटों के ये नाम हैं। मैंने बुलंद आवाज़ से पुकरा तो तीन बच्चे बड़े ख़ूबसूरत, बड़े इल्म व फ़ज़ल वाले, तर व ताज़ा चेहरे वाले भागते हुए आए। वह परेशान थे कि हमारी अम्मी किधर रह गई। वे अम्मी को क़ाफ़िले में तलाश करते फिरते थे। ख़ैर जब आपस में मिले तो बहुत खुश हुए। मैंने सोचा कि अब मैं अपने घर वापस जाता हूँ। उस वक़्त उस औरत ने फिर क़ुरआन पाक की आयत पढ़ी ﴿ويطعمون الطعام على حبه﴾ बच्चों को इशारा किया कुछ खिलओ। फ़ौरन बच्चे कुछ फल लेकर आए। मैंने खाने से इंकार किया तो उसने आयत पढ़ी ﴿انما نطعمكم لوجه الله﴾ (हम तो अल्लाह की रज़ा के लिए आपको खिलाते हैं)। मैं बड़ा हैरान हुआ कि या अल्लाह! यह क्या मामला है। यह मामला मुझसे हल नहीं हो रहा है। मैंने कुछ फल खाए और बच्चों से पूछा कि क्या मामला है जब से आपकी वालिदा मुझ से बात कर रही है मेरी हर बात के जवाब में यह क़ुरआन पाक की आयत पढ़ रही है? वे कहने लगे हाँ यह हमारी वालिदा माजिदा क़ुरआन पाक की हाफ़िज़ा और हदीस की आलिमा हैं। इसके दिल में ख़ौफ़े खुदा बैठ चुका है कि क़यामत के दिन मुझे अपनी बातों का जवाब देना पड़ेगा। लिहाज़ा बीस साल से क़ुरआन पाक की आयतों के सिवा कोई बोल इसकी ज़बान से नहीं निकला। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह के डर का अजीब अंदाज़ देखिए कि

कलामे इलाही के सिवा कोई एक बोल ज़बान से नहीं निकलता।

## क़यामत के दिन की हाज़िरी

क़यामत के दिन ऐसे लोग अल्लाह की हुज़ूर में पेश होंगे जिन की ज़बान से बीस-बीस साल से क़ुरआने पाक के सिवा कोई बोल नहीं निकला था। वहाँ अगर हम अपनी बेवक़ूफ़ी और जिहालत की बातचीत के साथ पेश होंगे तो हमें कितनी शर्मिंदगी होगी। अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हम से पूछ लिया कि बताओ तुमने फ़लां को ज़लील क्यों कहा था? फ़लां को कमीना क्यों कहा था? फ़लां को बेईमान क्यों कहा था? वहाँ जवाब देना मुश्किल हो जाएगा। वहाँ तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी थर्राते होंगे। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० अपनी मशहूर किताब 'ग़ुन्नियतुत्तालिबीन' में लिखते हैं, 'क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने जलाल में होंगे। नफ़्सी-नफ़्सी का आलम होगा। अल्लाह तआला ईसाईयों से पूछेंगे कि तुमने मख़्लूक़ को मेरा शरीक क्यों बनाया? वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेंगे कि इन्होंने कहा था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूछेंगे ﴿ءانت قلت﴾ क्या आपने कहा था? जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से ख़िताब होगा तो हैबते इलाही के मारे उनके बदन के हर बाल से ख़ून के क़तरे निकलेंगे।'

जब सच्चों के साथ यह मामला होगा तो वहाँ हम जैसे झूठों का क्या हाल होगा? आज ज़बान से उलटी सीधी बातें निकालना आसान मगर क़यामत के दिन जवाब देना मुश्किल काम।

## जहन्नम में कौन लोग जाएंगे

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक बार सवाल किया गया कि ऐ अल्लाह के नबी अक्सर इंसान किस वजह से जहन्नम में जाएंगे? अल्लाह के नबी ने फ़रमाया दो आज़ा की बदपरहेज़ी की वजह से यानी,

﴿ما بين لحييه وما بين رجليه.﴾

**वह चीज़ जो दो जबड़ों के बीच है यानी ज़बान और वह जो दो रानों के बीच है यानी शर्मगाह।**

अक्सर लोग ज़बान और शर्मगाह के ग़लत इस्तेमाल की वजह से जहन्नम में जाएंगे।

## जन्नत की ज़मानत

हदीस पाक का ख़ुलासा है कि जो आदमी मुझे अपनी ज़बान और शर्मगाह के सही इस्तेमाल की ज़मानत दे दे मैं उसके लिए जन्नत में घर दिलाने का ज़ामिन हूँ। इससे ज़बान के सही इस्तेमाल करने की अहमियत का अंदाज़ा लगाना आसान है।

## पहले तोलो फिर बोलो

इंसान को चाहिए कि अपनी बातचीत ख़ुद अपने कानों से सुनने की आदत डाले। जिसकी ज़बान से निकली हुई बात उसके कान नहीं सुनते जो इतने क़रीब हैं भला उसकी ज़बान से निकले हुए बोल वे कान क्या सुनेंगे जो इतने दूर हैं। इसलिए फ़रमाया, पहले तोलो फिर बोलो।

आज हम पहले बोलते हैं फिर तोलते है और कभी-कभी तो हम तोलते ही नहीं, सिर्फ़ बोलते रहते हैं। किसी शायर ने क्या उम्दा बात कही है—

*कहे एक जब सुन ले इंसान दो*
*ख़ुदा ने ज़बान एक दी कान दो*

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ज़बान तो एक दी है और कान दो दिए। ऐ इंसान! दो बातों के सुनने के बाद तुझे एक बात करनी और आज हम सुनना तो चाहते ही नहीं। आपने देखा होगा कि महफ़िल में एक आदमी बात कर रहा है और दूसरा आदमी उसे पूरी बात करने का मौक़ा नहीं देता। अधूरी बात सुनते ही जवाब देना शुरू कर देता है। एक वक़्त में दोनों बोल रहे होते हैं। शायद दीवारों को सुना रहे होते हैं या अपने फ़रिश्तों को। मिज़ाज में इतनी बरदाश्त नहीं होती कि ग़ौर से दूसरे की बात सुन लें।

## हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़े-ख़ुदा

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि कभी-कभी अपनी ज़बान को पकड़कर खींचते थे और फ़रमाते थे कि यह जिस्म का वह हिस्सा है जिसकी वजह से अक्सर जहन्नम में डाले जाएंगे। अज़ीम है वह इंसान जिसकी ख़ामोशी फ़िक्र के साथ और जिसकी बातचीत ज़िक्र के साथ होगी।

## ज़बान की ख़ता

ज़बान की ग़लती पाँव की ग़लती से ज़्यादा ख़तरनाक हुआ

करती है। पाँव फिसल जाए तो दोबारा खड़ा हो जाता है लेकिन अगर ज़बान से ग़लत बात निकल जाए तो फिर इख़्तियार में कुछ नहीं रहता।

हसन बसरी रह० अपनी मजलिसों में अक्सर फ़रमाया करते थे कि मुझे एक छोटी सी बच्ची ने नसीहत कर दी। किसी ने पूछा हज़रत क्या नसीहत की? फ़रमाया कि एक बार बारिश हो रही थी, कीचड़ था। लोग बड़ी एहतियात से चल रहे थे। मैं भी जा रहा था। मैंने एक बच्ची को आते हुए देखा। मैं ने कहा बेटी एहतियात से चलना, कहीं फिसल न जाना। उसने मुझे देखकर कहा मैं फिसल भी गई तो दोबारा खड़ी हो जाऊँगी, ज़रा आप अपना ख़्याल रखना अगर आप फिसल गए तो उम्मत का क्या बनेगा, आप उम्मत के सरदार हैं, कहीं आप न फिसल जाना। फ़रमाया करते थे कि एक छोटी सी बच्ची ने जमने का सबक़ दे दिया। यह्या बिन मुआज़ रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। फ़रमाया दिल की मिसाल हंडिया की सी है। ज़बान की मिसाल चम्मच की सी है। चम्मच में वह कुछ निकलता है जो हंडिया में मौजूद होता है। ज़बान वही कुछ निकलती है जो दिल में मौजूद होता है अगर दिल में ज़ुलमत होगी तो ज़बान से भी बुरी बात निकलेगी अगर दिल में नूर होगा तो ज़बान से पाकीज़ा बात निकलेगी।

## ज़बान को सही इस्तेमाल कीजिए

जिस तरह हकीम लोग ज़बान की रंगत को देखकर बीमारी का अंदाज़ा लगा लेते हैं उसी तरह उलमा व सालिहीन ज़बान की बातचीत को सुनकर रूहानी बीमारियों का अंदाज़ा लगा लेते हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब तक तुम नहीं बोलोगे आलिम समझे जाओगे। कभी फ़रमाते तुम बात करो पहचाने जाओगे। कभी फ़रमाते आदमी अपनी ज़बान के नीचे छुपा हुआ है यानी ज़रा बोला तो उसने अपनी हक़ीक़त को खोला। इसलिए इंसान सोच समझकर बातचीत करे।

जो आदमी कहता है कि मैं बहुत सही बातचीत करता हूँ उस आदमी की बातचीत ज़रा ग़ुस्से की हालत में सुना करें। भाई जब आप आराम और मज़े से बैठे हैं तो आपको कुत्ते ने काटा है कि आप औल-फ़ौल बकें। पता जब चलेगा कि कोई तबियत के ख़िलाफ़ बात पेश आएगी, जब कोई ऐसी बात कर दे जो दिल पर बिजली बनकर गिरे। अब देखना होगा कि आप कैसे जवाब देते हैं। सब्र व इस्तिक़ामत से सुनते हैं, सोच समझकर जवाब देते हैं या उसके जवाब में जाहिलाना बातचीत शुरू कर देते हैं। लिहाज़ा आदमी की बातचीत का अंदाज़ा ग़ुस्से की हालत में किया करें। आमतौर पर देखा गया है कि ग़ुस्से में मर्दों के हाथ बेक़ाबू हो जाते हैं और औरतों की ज़बान बेक़ाबू हो जाती है।

औरत की ज़बान वह तलवार है जो कभी ज़ंग आलूद नहीं हुआ करती। हमेशा चलती रहती है हालाँकि ज़बान की तलवार उन रिश्तों को तोड़ देती है जिनको लोहे की तलवार नहीं तोड़ सकतीं।

## ज़रा संभलकर रहना

मेरे दोस्तो महफ़िल में बैठकर अपने बारे में बुरे कलिमात न कहा करें। जब आप चले जाएंगे यह हक़ आपके दोस्त अदा

करेंगे। कुछ लोग महफ़िल में बैठकर अपनी आजिज़ी और मिस्कीनी का इज़्हार करते हैं। हक़ीक़त में वह कह रहे होते हैं कि ﴿اعرفونی﴾ मुझे पहचानो। दानाओं का क़ौल है, उलमा की महफ़िल में बैठो तो ज़बान संभालकर बैठो, हाकिम की महफ़िल में बैठो तो निगाहें संभालकर बैठो और अल्लाह वालों की सोहबत में बैठो तो अपने दिलों को संभालकर बैठो। आमतौर पर देखा गया है कि लम्बी ज़बान इंसान की उम्र को छोटी कर देती है क्योंकि जितना ज़्यादा बोलेगा उतना अपने सर पर ज़्यादा मुसीबत लेगा।

## अज़ीब नसीहत

हज़रत ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह रह० बहुत कम बोलते थे। एक आदमी कहने लगा कि हज़रत आप नसीहत करे, हमें फ़ायदा होगा। हज़रत ने जवाब दिया जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ नहीं पाया वह हमारी बातों से भी कुछ नहीं पाएगा। सुब्हानअल्लाह क्या अजीब बात कही। शायर ने कहा–

*कह रहा है शोरे दरिया से समंदर का सकूत*
*जितना जिसमें ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़ामोश है*

इसलिए अल्लाह वाले ख़ामोश तबियत वाले हुआ करते हैं। हाँ कोई इल्मी बात हो तो बातचीत करेंगे। मस्अला पूछा जाए तो तफ़्सीलें खोलेंगे मगर उन्हें बातों का चस्का नहीं हुआ करता।

ज़बान के ग़लत इस्तेमाल की वजह से इंसान पहाड़ों के बराबर गुनाहों का बोझ अपने सर पर रख लेता है। कहते हैं कि बेवक़ूफ़ के गले में घंटी बांधने की ज़रूरत पेश नहीं आती। उसकी

बातचीत ही बता देती है कि वह बेवक़ूफ़ इंसान है। दानाओं का क़ौल है कि अक़्लमंद सोचकर बोलता है और बेवक़ूफ़ इंसान बोलकर सोचता है गोया इतना ही फ़र्क़ होता है बेवक़ूफ़ और अक़्लमंद में। अक़्लमंद इंसान सोचकर बोलता है जबकि बेवक़ूफ़ बोलकर सोचता है बल्कि ऐसे लोगों से कम बात करें जो ज़बान के बुरे हों इसलिए कि अगर उसने कोई बुरा कलिमा कह दिया जिसके जवाब में आपने भी कुछ कहा तो उसके पास कहने के लिए और भी बुरे कलिमात होंगे।

## बदज़बानी से बचो

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम अपने माँ-बाप को गालियाँ न दिया करो। सहाबा किराम ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! अपने माँ-बाप को कौन गालियाँ देता है। फ़रमाया कि तुम किसी के माँ-बाप को गालियाँ दोगे तो वह जवाब में तुम्हारे माँ-बाप को को गालियाँ देगा। ऐसा ही है जैसे तुमने अपने माँ-बाप को गाली दी।

## सच का बोल-बाला

इंडिया का वाक़िआ है कि एक शहर में ज़मीन का टुकड़ा था जिस पर झगड़ा खड़ा हो गया। मुसलमानों को दावा था कि यह ज़मीन हमारी है, हिंदुओं का दावा था कि हमारी ज़मीन है। हिंदू चाहते थे कि वहाँ मंदिर बनाया जाए, मुसलमान चाहते थे वहाँ मस्जिद बनाई जाए। अंग्रेज़ वक़्त का हाकिम था। क़रीब था कि